

हिन्दी, उर्दू, पंजाबी में एक साथ प्रकाशित दिल्ली सरकार की पत्रिका

अंक: सितम्बर-अक्टूबर 2017

# दिल्ली

सिँली दली







2 अक्टूबर को दिल्ली विधानसभा में महात्मा गाँधी और लाल बहादुर शास्त्री को श्रद्धांजलि देते विधानसभा अध्यक्ष रामनिवास गोयल, मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया



# दिल्ली

अंक : सितम्बर—अक्टूबर 2017

**प्रधान सम्पादक**

डॉ. जयदेव षडंगी

**सम्पादक मंडल**

संदीप मिश्र

डॉ. पंकज श्रीवास्तव

नलिन चौहान

कंचन आज़ाद

**छाया चित्र**

सुधीर कुमार, अजय कुमार, योगेश जोशी

“दिल्ली” पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं तथा दिल्ली सरकार का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

पत्राचार का पता

**प्रधान सम्पादक**

दिल्ली सूचना एवं प्रसार निदेशालय

दिल्ली सरकार

खंड सं. 9, पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054

दूरभाष : 23819046, 23817926

फैक्स : 23814081

ई-मेल : delhidip@gmail.com



**मेरा साथी, मित्र और नेता भगत सिंह**

## इस अंक में...

### हिन्दी

|                                                            |    |
|------------------------------------------------------------|----|
| 15 हजार अतिथि शिक्षकों को स्थायी करने का बिल पास.....      | 2  |
| दिल्ली के सरकारी स्कूलों को मिले 5695 नए क्लासरूम.....     | 3  |
| दवा की उपलब्धता जानने मुख्यमंत्री ने किया निरीक्षण.....    | 6  |
| दिल्ली में हुए बदलाव ने बदल दी भारत की बिजनेस रैंकिंग..... | 7  |
| दिल्ली के स्कूलों की होगी रैंकिंग.....                     | 8  |
| दिल्ली के स्कूलों में खुले सौ पुस्तकालय.....               | 10 |
| क्या गाँधी जी भगत सिंह को बचा सकते थे? .....               | 15 |
| परकोटे वाली दिल्ली की कहानी .....                          | 20 |
| मंगल मिलन समारोह की झलकियाँ .....                          | 28 |

### पंजाबी

|                                                                 |    |
|-----------------------------------------------------------------|----|
| ਸੁਤੰਤਰਤਾ ਦਿਵਸ 'ਤੇ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਦਾ ਸੰਦੇਸ਼ .....     | 1  |
| 10ਵੀਂ ਅਤੇ 12ਵੀਂ ਦੇ ਨਤੀਜਿਆਂ ਨੇ ਲਹਿਰਾਇਆ ਬਦਲਾਅ ਦਾ ਝੰਡਾ ! .....     | 3  |
| ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਬਾਹਰ ਪੜ੍ਹਨ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਵੀ ਦਿਵਾਂਵਾਂਗੇ ਐਜੂਕੇਸ਼ਨ ਲੋਕ ..... | 7  |
| 1857 ਦੀ ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਦਾ ਨਾਇਕ ਅਜ਼ੀਮੁਲਲਾ ਖਾਂ .....                     | 9  |
| ਬਿਨਾਂ ਅਪ੍ਰਵਾਇੰਟਮੈਂਟ ਮਿਲਣਗੇ ਸੀਐਮ, ਮੰਤਰੀ ਅਤੇ ਅਧਿਕਾਰੀ .....        | 11 |
| ਦੇ ਘੰਟੇ ਤੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਬਿਜਲੀ ਕੱਟਣ ਤੇ ਹਰਜ਼ਾਨਾ ! .....                | 12 |
| ਆਂਗਨਬਾੜੀ ਕੇਂਦਰਾਂ ਦੀ ਜਾਂਚ ਦੇ ਲਈ ਰਕਾਰ ਨੇ ਚਲਾਇਆ ਵਿਆਪਕ ਅਭਿਆਨ .....  | 13 |
| ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਸਮਰ ਕੈਂਪ ਦੀ ਧੁੰਮ .....                        | 14 |

### उर्दू

|                                                                  |    |
|------------------------------------------------------------------|----|
| 15 ہزار عارضی ٹیچروں کو مستقل کرنے کا بل ودھان سبھا سے پاس ..... | 1  |
| دہلی کے سرکاری اسکولوں کو ملے 5695 نئے کلاس روم .....            | 2  |
| دوا کی دستیابی جاننے وزیر اعلیٰ نے کیا اسپتالوں کو معائنہ .....  | 5  |
| دہلی میں ہوئے بدلاؤ نے بدل دی بھارت کی بزنس رننگ .....           | 6  |
| دہلی کے اسکولوں کی ہوگی رننگ .....                               | 7  |
| دہلی کے اسکولوں میں کھلے سولابھریری .....                        | 9  |
| میرا ساتھ، دوست اور نیتا بھگت سنگھ .....                         | 10 |

हिंदी भाषा, साहित्य और समाज



# 15 हज़ार अतिथि शिक्षकों को स्थायी करने का बिल विधानसभा से पास

दिल्ली के 15 हजार अतिथि शिक्षकों को एक बड़ा तोहफा देते हुए सरकार ने उन्हें विनियमित करने का बिल विधानसभा में पेश किया जिसे ध्वनिमत से पास कर दिया गया। 4 अक्टूबर को बुलाए गए एक विशेष सत्र में विधानसभा में चार घंटे तक इस मसले पर गहन चर्चा हुई जिसमें सरकार के इस कदम को क्रांतिकारी बताया गया।

इस बिल को लेकर उठी तमाम आपत्तियों को दरकिनार करते हुए मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली की जनता ने दिल्ली की समस्याओं को हल करने के लिए उन्हें मुख्यमंत्री चुना है। किन्हीं तकनीकी आधारों पर सरकार का जनहित के लिए कदम उठाने से रोका नहीं जा सकता। अतिथि शिक्षकों को स्थायी करने का उनकी सरकार को पूरा अधिकार है। उन्होंने कहा कि जैसे कश्मीर माइग्रेंट कर्मचारियों को स्थायी किया गया, वैसे ही अतिथि शिक्षकों को स्थायी किया जा रहा है।

इससे पहले उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने अतिथि शिक्षक व सर्वशिक्षा अभियान के अंतर्गत कार्यरत शिक्षकों की सेवाओं का नियम विधेयक-2017 सदन में पेश करते हुए दिल्ली की शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने में अतिथि शिक्षकों की भूमिका को सरहनीय बताया। उन्होंने कहा कि सरकार शुरू से अतिथि शिक्षकों को नियमित करने के पक्ष में रही है उन्होंने कहा कि शिक्षक मुक्त मन के

साथ अपना दायित्व निभा सकें, इसके लिए उन्हें निश्चित वातावरण देना जरूरी है। सरकार उनके मानदेय पहले ही बढ़ा चुकी है, लेकिन जरूरत उन्हें स्थायी करना है।

श्री सिसोदिया ने कहा कि दिल्ली कैबिनेट से पारित यह प्रस्ताव जब विधानसभा से पास होकर कानून की शक्ल ले लेगा तो 15 हजार शिक्षकों की नौकरी स्थायी हो जाएगी। यानी 15 हजार परिवारों पर इसका बेहद सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। प्रत्येक वर्ष सत्र समाप्त होने पर भविष्य को लेकर अस्थायी शिक्षक चिंतित हो जाते थे। बिल पास होने से उनकी यह चिंता खत्म हो जाएगी।

श्री सिसोदिया ने कहा कि बिल के संबंध में जताई गई आपत्तियों पर सरकार ने गहन चर्चा की है। कैबिनेट ने माना है कि शिक्षक के बिना शिक्षा की कल्पना नहीं की जा सकती। यह मसला सेवाओं से नहीं जुड़ा है। कुछ महीने पहले दिल्ली सरकार ने 150 कश्मीरी माइग्रेंट को स्थायी किया था। उसी आधार पर सरकार इन अतिथि शिक्षकों की नियुक्ति कर रही है।

विधानसभा ने इस बिल को ध्वनिमत से पास कर दिया। राज्यपाल की मंजूरी मिलने के बाद यह कानून की शक्ल ले लेगा। अतिथि शिक्षकों ने इस पर खुशी जताते हुए सरकार को धन्यवाद दिया।





# दिल्ली के सरकारी स्कूलों को मिले 5695 नए क्लासरूम

दिल्ली की शिक्षा-व्यवस्था में बदलाव की कोशिशों ने एक बड़ा पड़ाव हासिल किया है। शिक्षक-विद्यार्थी अनुपात सुधारने के लिहाज से स्कूलों में कमरों की कमी को चिन्हित किया गया था जिसके बाद सरकार ने युद्ध स्तर पर कमरे बनवाने का काम शुरू हुआ था। आखिरकार करीब सौ स्कूलों में 5695 कमरे बनकर तैयार हुए जिन्हें दीवाली के तोहफे बतौर सरकार ने दिल्लीवासियों को समर्पित किया।

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने इसे शानदार उपलब्धि बताया। उन्होंने ट्वीट किया कि यह राजधानी में शिक्षा

के बुनियादी ढाँचे का सबसे बड़ा विस्तार है। वे चाहते हैं कि ऐसा समय आये जब चुनाव जाति और धर्म के बजाय शिक्षा और स्वास्थ्य के एजेंडे पर लड़े जाएँ।

दिल्ली की शिक्षा व्यवस्था की कमान सँभाल रहे उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने मंडावली स्थित सर्वोदय कन्या विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में नवनिर्मित कमरों का उद्घाटन किया। इस मौके पर श्री सिसोदिया ने कहा कि 'दिल्ली के हर बच्चे के लिए अच्छी शिक्षा और बेहतरीन शिक्षा सुविधाएँ देना हमारी सरकार की जिम्मेदारी है। हमारी कोशिश है कि सरकारी स्कूलों में





पढ़ने वाला हर बच्चा अपने स्कूल को लेकर गर्व महसूस कर सके। हमारा मकसद दिल्ली के हर सरकारी स्कूल को विश्वस्तरीय बनाना है, जिसमें पढ़ाई की गुणवत्ता से लेकर वहाँ मिलने वाली सुविधाएँ किसी महँगे प्राइवेट स्कूल से भी बेहतर हों। हमारा मानना है कि शिक्षित राष्ट्र से ही समर्थ राष्ट्र बनाया जा सकता है।'

श्री सिसोदिया ने इस मौके पर बच्चों और अभिभावकों

से स्कूली शिक्षा में आ रहे बदलावों को लेकर चर्चा की। उन्होंने कहा कि सरकार ने 8000 कमरे बनाने का लक्ष्य रखा था और अब तक 5695 बना लिए गए हैं। बाकी कमरे बनाने का काम भी तेजी से चल रहा है। अभी एक क्लास में कहीं-कहीं 80-90 तक बच्चे नजर आते हैं, जिससे पढ़ाई पर विपरीत असर पड़ता है। कमरे में अधिकतम 40 बच्चे हों तो शिक्षक







**दिल्ली के हर बच्चे के लिए**

**अच्छी शिक्षा और बेहतरीन शिक्षा सुविधाएँ देना हमारी सरकार की जिम्मेदारी है। हमारी कोशिश है कि सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाला हर बच्चा अपने स्कूल को लेकर गर्व महसूस कर सके। हमारा मकसद दिल्ली के हर सरकारी स्कूल को विश्वस्तरीय बनाना है, जिसमें पढ़ाई की गुणवत्ता से लेकर वहाँ मिलने वाली सुविधाएँ किसी महँगे प्राइवेट स्कूल से भी बेहतर हों। हमारा मानना है कि शिक्षित राष्ट्र से ही समर्थ राष्ट्र बनाया जा सकता है।**



पर अतिरिक्त बोझ नहीं होता और बच्चे भी पढ़ाई पर ध्यान लगा पाते हैं। शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने के लिए शिक्षक-छात्र अनुपात का दुरुस्त रहना बेहद जरूरी है। उन्होंने यह भी कहा कि नए कमरों को इस अंदाज में बनाया गया है कि वे बच्चों को रचनात्मक होने के लिए प्रेरित करें। रंग-रोगन से लेकर प्रकाश व्यवस्था तक पर विशेष ध्यान दिया गया है। श्री सिसोदिया ने इस अवसर पर कमरों के निर्माण में अहम भूमिका निभाने वाले अफसरों, कर्मचारियों और इंजीनियरों को विशेष रूप से धन्यवाद दिया। उन्हें मंच पर भी बुलाया गया और बच्चों ने तालियाँ बजाकर उनका स्वागत किया। ■





# दवा की उपलब्धता जानने मुख्यमंत्री ने किया अस्पतालों का औचक निरीक्षण

दिल्ली के सरकारी अस्पतालों में जाँच से लेकर दवा और ऑपरेशन तक मुफ्त किया जा चुका है। सरकार का मानना है कि मरीजों के स्वास्थ्य की जिम्मेदारी सरकार की है। निजी अस्पतालों के बोलबाले के दौर में इसे एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

लेकिन सरकार की इस अहम योजना का असर जमीन पर कितना है, यह जानने के लिए मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल खुद औचक निरीक्षण करते हैं। इस क्रम में उन्होंने 3 अक्टूबर को लोकनायक जयप्रकाश नारायण और गोविंद वल्लभ पंत अस्पताल का निरीक्षण किया। उनके साथ दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन और विभाग के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे।

मुख्यमंत्री जमीनी हकीकत को परखना चाहते थे, इसलिए सीधे दोनों अस्पतालों में उन्होंने दवा के लिए कतार में खड़े मरीजों से बात की। मरीज और उनके परिजन मुख्यमंत्री को इस मुद्रा में देखकर हैरान रह गए। मुख्यमंत्री ने सीधे पूछा कि उन्हें दवा काउन्टर से वे सारी दवाएँ मिल रही

हैं कि नहीं जो डॉक्टर उनके लिए लिखते हैं। मुख्यमंत्री की जी.बी. पंत अस्पताल में जानकारी मिली कि कुछ दवाएँ उपलब्ध नहीं हैं। इस पर उन्होंने स्वयं उपलब्ध दवाओं के रिकार्ड की जाँच की। उन्हें कुछ दवाओं की कमी और अनुपलब्धता की जानकारी हुई तो उन्होंने उच्च अधिकारियों से जवाब तलब किया और हर कमी को जल्द से जल्द पूरा करने का निर्देश दिया।

एलएनजेपी अस्पताल में औचक निरीक्षण करने पहुँचे मुख्यमंत्री केजरीवाल से मरीजों ने संतोष जताया। उन्होंने बताया कि उन्हें हर तरह की दवाएँ जरूरी मात्रा में उपलब्ध हो रही हैं। मुख्यमंत्री ने दोनों अस्पतालों के चिकित्सा अधीक्षकों/निदेशकों को यह सुनिश्चित करने का आदेश दिया कि जितना संभव हो सके, दवा काउन्टरों पर अधिक समय तक मरीजों को इंतजार न करना पड़े। दवा प्राप्ति के समय को घटाकर कम से कम किया जाए। उन्होंने यह भी निर्देश दिया कि पंजीकरण काउन्टरों पर कम से कम समय में मरीजों को पंजीकृत किया जाए ताकि उन्हें जल्द से जल्द चिकित्सकीय सुविधाएँ प्राप्त हो सकें। ■





# दिल्ली में हुए बदलाव ने बदल दी भारत की बिज़नेस रैंकिंग

**भा**रत में व्यापार करना आसान हुआ। वर्ल्ड बैंक की ताजा बिजनेस रिपोर्ट में भारत की स्थिति में काफी सुधार हुआ है। वर्ल्ड बैंक पिछले कई सालों से दुनिया के 190 देशों की इस सिलसिले में रैंकिंग करता है। पिछले साल भारत का स्थान 130 था लेकिन अब वह सौवें नंबर पर आ गया है।

ख़ास बात यह है कि वर्ल्ड बैंक की इस 'ईज ऑफ़ डूइंग बिजनेस' लिस्ट में भारत की रैंकिंग में हुए सुधार में दिल्ली का अहम योगदान रहा है। दिल्ली सरकार ने ऐसे तमाम कदम उठाए जिसने देश की छवि बदली। उपमुख्यमंत्री और दिल्ली के वित्तमंत्री का ओहदा संभाल रहे मनीष सिसोदिया ने इस बड़ी उपलब्धि बताया है। उन्होंने कहा कि यह बड़े गर्व की बात है कि वर्ल्ड बैंक की रैंकिंग में भारत टॉप 100 में पहुंच गया है।

श्री सिसोदिया ने कहा कि पिछले दो-तीन साल में दिल्ली सरकार ने जो बड़े फैसले लिए हैं, उसकी वजह से दिल्ली में बिजनेस शुरू करना बहुत आसान हो गया है। इंस्पेक्टर राज को खत्म किया गया है। उन्होंने कहा कि जिस तरह बिजनेस के मामले में देश का नाम रोशन हुआ है, उसी तरह से हेल्थ, एजुकेशन में भी दिल्ली में आए परिवर्तन से भी देश का मान बढ़ेगा। श्री सिसोदिया ने कहा कि दिल्ली सरकार ने

इंडस्ट्री लाइसेंस लेने की प्रक्रिया को आसान कर दिया है। अब एक दिन में ऑनलाइन लाइसेंस मिल जाता है, जबकि पहले लाइसेंस के लिए महीनों लग जाते थे। दिल्ली सरकार के वेट डिपार्टमेंट ने इंस्पेक्टर राज को खत्म किया और अब ऑनलाइन अप्लाई करने पर तुरंत टिन नंबर मिल जाता है। पहले इंस्पेक्टर जाता था और रिपोर्ट देता था। इसके बाद ही टिन नंबर इशू होता था।

## देश में कारोबारी माहौल; 2011 से अब तक



## Outlook

THE WEBSITE

MAGAZINES | MONEY | TRAVELLER | BUSINESS | ARCHIVES

02 NOVEMBER 2017 Last Updated at 4:00 PM | NATIONAL

## If India's Ease Of Doing Business Ranking Has Improved, Delhi Government Deserves A Pat On The Back From Centre

A look at the ten criteria on which the ranking has been done reveals that without the state many of the yardsticks would not have been improved upon.

LOLA NAYAR



उपमुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ल्ड बैंक की रिपोर्ट में भी जिक्र है कि अब दिल्ली में बिजली कनेक्शन 138 दिन के बजाय अधिक से अधिक 45 दिन में मिल जाता है। दिल्ली में किसी भी इवेंट मैनेजमेंट के लिए दुनिया के किसी भी हिस्से से ऑनलाइन अप्लाई किया जा सकता है। ऑनलाइन सिंगल विंडो सिस्टम लागू किया गया है। जीएसटी में व्यापारियों की समस्याओं को दूर करने के लिए दिल्ली सरकार हरसंभव कोशिश कर रही है। गौरतलब है कि रैंकिंग तैयार करने में सिर्फ दिल्ली और मुंबई में कारोबारियों के बीच सर्वे किया जाता है। यानी परिवर्तन में दिल्ली का योगदान काफी अहम है। मुंबई को पहले से ही देश की वाणिज्यिक राजधानी का दर्जा प्राप्त है। विश्व बैंक का कहना है कि मुंबई और दिल्ली भारत के कारोबारी माहौल की नुमाइंदगी करते हैं, लिहाजा वहाँ की स्थिति से पूरे देश का आकलन किया जा सकता है। ■





# दिल्ली के स्कूलों की होगी रैंकिंग

दिल्ली की शिक्षा व्यवस्था में आए क्रांतिकारी परिवर्तनों की चर्चा पूरी दुनिया में है। ऐसे वक्त में जब निजी स्कूलों को ही बेहतर शिक्षा का मानक मान लिया गया था, दिल्ली के सरकारी स्कूलों ने नई चमक पैदा की। इसके लिए स्कूलों का रंग-रूप ही नहीं बदला गया, शिक्षा और परीक्षा के प्रति नई दृष्टि भी पैदा की गई। दिल्ली सरकार का मकसद है कि निजी और सरकारी स्कूलों में स्वस्थ प्रतियोगिता हो, और सरकारी स्कूलों के बच्चों में किसी अभाव की कुंठा न हो।

लेकिन अभिभावकों को यह पता कैसे चले कि किस स्कूल की क्या स्थिति है। इसे ध्यान में रखते हुए सरकार ने ऐसी योजना तैयार की है जिससे दिल्ली के अभिभावकों को हर सरकारी और निजी स्कूल के शैक्षिक स्तर और बुनियादी सुविधाओं के बारे में आसानी से जानकारी मिल सकेगी। इसके आधार पर वे अपने बच्चे के एडमिशन को लेकर फैसला कर सकेंगे। सरकार अगले सत्र से दिल्ली

के हर निजी और सरकारी स्कूल को रैंकिंग देने जा रही है।

दिल्ली सरकार ने 'दिल्ली कमिशन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ चाइल्ड राइट्स ऐक्ट' (डीसीपीसीआर) को जिम्मेदारी दी है कि वह स्वतंत्र एजेंसियों से स्कूलों की रैंकिंग करवाए। दिल्ली स्टेट एजुकेशन ऐडवाइजरी काउंसिल के इस फैसले की जानकारी देते हुए उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने बताया कि अभी स्कूलों का कोई 'परफॉर्मेंस ऑडिट' नहीं होता और ऐसा कोई आधिकारिक दस्तावेज भी नहीं है जिससे अभिभावकों को स्कूल के बारे में जरूरी जानकारियां मिल सकें। केवल बिल्डिंग देखकर स्कूल की शिक्षा की गुणवत्ता के बारे में पता नहीं लगाया जा सकता। ऐसे में रैंकिंग करना होगा जिसके लिए जरूरी मापदंड तय किए जाएंगे। पढ़ाई का स्तर क्या है, सुविधाएँ कैसी हैं, रखरखाव कैसा है, शिक्षकों का बच्चों के साथ बर्ताव कैसा रहता है, बच्चों की सुरक्षा को लेकर क्या-क्या



इंतजाम किए गए हैं—इस तरह के तमाम मापदंड के आधार पर स्कूल की रैंकिंग तय होगी और ऑफिशल डेटा तैयार हो सकेगा।

उपमुख्यमंत्री के मुताबिक सरकार ऐसे बच्चों का स्कूल में दाखिला करवाएगी जो स्कूल नहीं जाते हैं। उनकी पहचान के लिए अभियान चलाया जाएगा। सर्वे हुए हैं, लेकिन स्कूल न जाने वाले बच्चों को लेकर विस्तृत डेटा नहीं मिल पाया है। इस मुहिम में आंगनबाड़ी वर्कर्स की भी मदद ली जाएगी और सरकार उन्हें अतिरिक्त भुगतान भी करेगी। दिल्ली सरकार की स्कूल मैनेजमेंट कमिटी में दो-दो सोशल वर्कर होते हैं। एमसीडी को भी कहा गया है कि वे अपने स्कूलों में एसएमसी को बेहतर बनाएं। एक अनुमान के मुताबिक, दिल्ली सरकार और एमसीडी के स्कूलों की एसएमसी में करीब 2600 सोशल वर्कर हैं, जिन्हें एजुकेशन बीट ऑफिसर्स का दर्जा दिया जाएगा। ये मुहल्ले-मुहल्ले जाकर पता करेंगे कि कौन बच्चा स्कूल नहीं जाता। इस तरह हर एक बच्चे की मैपिंग होगी।

श्री सिसोदिया के मुताबिक निजी स्कूलों के प्रिंसिपल और प्राइमरी विंग के टीचर्स की स्पेशल ट्रेनिंग होगी जिसमें उन्हें बताया जाएगा कि इकॉनमिकली वीकर

**उपमुख्यमंत्री के मुताबिक सरकार ऐसे बच्चों का स्कूल में दाखिला करवाएगी जो स्कूल नहीं जाते हैं। उनकी पहचान के लिए अभियान चलाया जाएगा। सर्वे हुए हैं, लेकिन स्कूल न जाने वाले बच्चों को लेकर विस्तृत डेटा नहीं मिल पाया है। इस मुहिम में आंगनबाड़ी वर्कर्स की भी मदद ली जाएगी और सरकार उन्हें अतिरिक्त भुगतान भी करेगी। दिल्ली सरकार की स्कूल मैनेजमेंट कमिटी में दो-दो सोशल वर्कर होते हैं। एमसीडी को भी कहा गया है कि वे अपने स्कूलों में एसएमसी को बेहतर बनाएं। एक अनुमान के मुताबिक, दिल्ली सरकार और एमसीडी के स्कूलों की एसएमसी में करीब 2600 सोशल वर्कर हैं, जिन्हें एजुकेशन बीट ऑफिसर्स का दर्जा दिया जाएगा।**

सेक्शन (ईडब्ल्यूएस) श्रेणी में एडमिशन पाने वाले बच्चों से कैसे पेश आया जाए ताकि नए वातावरण में वे सहज हो सकें। सिसोदिया ने कहा कि पिछले दो साल में दिल्ली सरकार ने ईडब्ल्यूएस कैटिगरी के एडमिशन को पारदर्शी बनाया है। इसके तहत 31 हजार एडमिशन बिना किसी परेशानी के हुए हैं। देखने में आ रहा है कि इस कैटिगरी में एडमिशन पाने वाले बच्चों को दूसरे बच्चों के साथ तालमेल बैठाने में मुश्किल हो रही है। इस श्रेणी में एडमिशन

पाने वाले बच्चों के अभिभावक भी ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं होते और वे अपने बच्चों को दूसरों की तरह गाइड नहीं कर पाते। उनकी स्थिति को ध्यान में रखते हुए उन पर विशेष ध्यान दिए जाने की जरूरत है ताकि सबको गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का सपना पूरा किया जा सके। ■





# दिल्ली के स्कूलों में खुले सौ पुस्तकालय

पुस्तकों को मित्र मानने वाले समाज में पुस्तकालय संस्कृति का कमजोर होना गंभीर चिंता की बात है। दिल्ली के शैक्षिक वातावरण में गुणात्मक परिवर्तन लाने में जुटी सरकार ने इस ओर गंभीर पहल करते हुए एक साथ सौ पुस्तकाल खोले हैं।

दिल्ली सरकार के स्कूलों में खोले गए ये सौ पुस्तकालय प्राइमरी सेक्शन के बच्चों के लिए शुरू किए गए हैं। मोती बाग के सर्वोदय कन्या विद्यालय में ऐसे ही एक पुस्तकालय का उद्घाटन उपमुख्यमंत्री और शिक्षा मंत्री मनीष सिसोदिया ने किया।

श्री सिसोदिया ने कहा कि यह पुस्तकालय सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले छोटे बच्चों के लिए दीवाली का तोहफा है। उन्होंने कहा कि एक साल के भीतर दिल्ली के उन सभी 450 सरकारी स्कूलों में पुस्तकालय शुरू कर दिए जाएंगे, जहां पर प्राइमरी सेक्शन हैं। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार के पास पैसे की कमी नहीं है और इस काम के लिए पैसे की कमी होने भी नहीं दी जाएगी। इस काम



के लिए जिस तरह की विशेषज्ञता की जरूरत होगी उसे लाया जाएगा। उपमुख्यमंत्री ने सुझाव दिया कि हर स्कूल में पेंटिंग, ड्राइंग व स्टोरी राइटिंग जैसी प्रतियोगिता कराई जाएं और इन प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों की पेंटिंग, ड्राइंग और कहानियों आदि का संकलन करके, कुछ प्रतियाँ स्कूल के पुस्तकालय में रख दी जाएँ, जिससे बाकी बच्चों को भी प्रेरणा मिले। इसके अलावा इन्हीं प्रतियोगिताओं के आधार पर पूरी दिल्ली में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों की पेंटिंग, ड्राइंग और कहानियों का संकलन दिल्ली के हर सरकारी स्कूल के पुस्तकालय में रखे जाएँ। इससे पूरी दिल्ली के बच्चे इन

प्रतिभाओं से रूबरू हो सकेंगे और प्रेरणा लेकर खुद भी इस दिशा में आगे बढ़ सकेंगे।

स्कूल में खुलने वाले पुस्तकालयों में किताबों के चुनाव पर खास ध्यान दिया गया है। ज्यादातर किताबें ऐसी हैं, जिनसे बच्चे चित्रों, कहानियों और गेम्स के जरिए काफी कुछ सीख सकेंगे। ■





# मेरा साथी, मित्र और नेता भगत सिंह!



एक दिन प्रातः जब मैं कमरे में बैठा कालेज का काम पूरा कर रहा था तो सुना बाहर पड़ोसी से कोई मेरा पता पूछ रहा है। अपना नाम सुनकर मैं बाहर निकल आया, देखा मैली शलवार-कमीज पहने कम्बल ओढ़े एक सिख नौजवान सामने खड़ा है—लंबा कद, खूब गोरा रंग, छोटी-छोटी आंखें, चुभती हुई पैंनी निगाह, खूबसूरत चेहरे पर हल्की-हल्की छोटी-सी दाढ़ी, केश और पगड़ी। “यह रहे शिव वर्मा” मुझे देखकर पड़ोसी ने कहा।

आगंतुक दोनों हाथ फैलाकर ऐसे लिपट गया मानो कोई बहुत पुराना दोस्त हो। फिर मेरा हाथ खींचते हुए उसने कमरे में ऐसे प्रवेश किया जैसे कमरा मेरा नहीं उसी का था। छोटे कमरे में जगह की तंगी के कारण मैंने चारपाई निकाल कर जमीन पर ही बिस्तर लगा रखा था। उसने बगैर किसी तकल्लुफ के निस्संकोच जाकर बिस्तर पर आसन लगा दिया और मेरा हाथ खींच कर पास बिठलाते हुए बोला, “मेरा नाम रंजीत है। मैं दो-चार दिन यहीं रहूंगा। दिल्ली के तुम्हारे दोस्त से मैं तुम्हारे और

जयदेव के बारे में सुन चुका हूं। मैं भी तुम्हारी ही डगर का राहगीर हूं।” फिर कुछ सोचकर पूछा, “विजय और सुरेंद्र पांडे को जानते हो?”

रंजीत के सहज व्यवहार, निष्कपट हंसी और मुस्कुराती हुई आंखों ने पहली ही मुलाकात में मेरे सब हथियार छीन लिए थे और अब मेरे लिए उस पर अविश्वास करना असंभव था। रोक-थाम के मेरे सारे बांध टूट गए और मैंने भी उसी सहज भाव से कह दिया — “हां, जानता हूं।”

“तो इन दोनों को कहला दो कि आज रात यहीं आकर मुझ से मिल लें,” उसने कहा। फिर कुछ रुक कर पूछा, “जयदेव कहां है?”

इस बार मैं झूठ बोल गया। साहस बटोर कर कह दिया, “कहीं बाहर गया है, यहां नहीं है।”

मैं बात टाल गया हूं इसे रंजीत ने भांप लिया। इस विचार ने कि मैं अभी तक उस पर विश्वास नहीं कर पाया हूं, कुछ देर के लिए उसे उदास-सा कर दिया। वह अपने साथ विक्टर ह्यूगो का सुप्रसिद्ध उपन्यास ‘ला मिजरेबुल’ लाया था। उसने चुपचाप उसे







पढ़ना आरंभ कर दिया—मानो किसी ने उसकी हंसी, उसकी बातचीत, उसके बेतकल्लुफाना व्यवहार आदि पर अचानक ब्रेक लगा दिया हो।

मैं झूठ बोल तो गया पर दिल में बात खटकती—सी रही। भगत सिंह की उदासी के सामने मेरे लिए कमरे में ठहरना कठिन हो गया और विजय को खबर भेजवाने के बहाने मैं कालेज चला गया। सुरेंद्र को रंजीत का पैगाम दिया तो उन्होंने बतलाया कि वह पार्टी का पुराना आदमी है।

कालेज से वापस आते—आते दोपहर के खाने का समय हो गया था। जयदेव और मैं प्रायः मेस में खाना खाने एक ही साथ जाते थे। रंजीत के लिए कमरे में खाना मंगवाने के बजाय मैं उसे भी साथ लेता गया। मेस में उस समय हम तीन ही खाने वाले थे। रंजीत बीच में जयदेव के पास ही बैठा था लेकिन

मेस का कोई अन्य सदस्य समझ कर उसने उधर ध्यान नहीं दिया। फिर जब जयदेव ने चुपचाप उसकी दाल में कस कर गरम घी छोड़ दिया तो उसने पहले जयदेव की ओर देखा फिर प्रश्न भरी निगाह से मेरी ओर देखने लगा। उसकी उलझन पर हम दोनों को हंसी आ गयी। उसके मुँह से निकल गया “जयदेव?” “हम लोग और जोर से हंस पड़े। रंजीत ने मेरी पीठ पर जोर का घूँसा

जमाते हुए कहा “चोर कहीं के।” फिर व्यंग्य कसते हुए बोला “लगता है अपनों को बहुत सहेज कर रखने की आदत है”।

“फिलहाल तो तुम्हारी घूँसे की चोट ने अपना—पराया सब बराबर कर दिया है,” मैंने कहा।

**रंजीत मेरे कमरे में जितने दिन रहा प्रायः रोज ही विजय और सुरेंद्र पांडे आते रहे। वह काकोरी के अभियुक्त पंडित रामप्रसाद बिस्मिल को जेल से छुड़ाने की योजना पर विचार विमर्श करने आया था। तीन-चार दिन रहने के बाद बिस्मिल से सम्पर्क स्थापित कर योजना पक्की कर रखने का भार विजय पर छोड़ वह पंजाब वापस चला गया।**

उसने बाँया हाथ मेरी पीठ पर फेरते हुए कहा, “लो पीठ सहलाये देता हूँ, अब चुप—चाप खा लो।”



रंजीत मेरे कमरे में जितने दिन रहा प्रायः रोज ही विजय और सुरेंद्र पांडे आते रहे। वह काकोरी के अभियुक्त पंडित रामप्रसाद बिस्मिल को जेल से छोड़ाने की योजना पर विचार विमर्श करने आया था। तीन-चार दिन रहने के बाद बिस्मिल से सम्पर्क स्थापित कर योजना पक्की कर रखने का भार विजय पर छोड़ वह पंजाब वापस चला गया।

रंजीत के चले जाने के बाद मुझे पता चला कि उसका असली नाम भगत सिंह है और वह पहले भी कानपुर में श्री गणेश शंकर विद्यार्थी के पास 'प्रताप' में काम कर चुका है। कानपुर में 'प्रताप' में काम शुरू करने से पहले कुछ दिन उसने अखबार बेचकर भी निर्वाह किया था। यह भी पता चला कि बिस्मिल को जेल से छोड़ाने का एक प्रयास पहले भी हो चुका था जिसे किन्हीं कारणों वश बीच में ही छोड़ देना पड़ा था। उसमें भाग लेने के लिए भगत सिंह और सुखदेव के साथ पंजाब के कई और साथी भी आए थे। उसी दिशा में अब यह उसका दूसरा प्रयास था।

लगभग दो महीने बाद भगत सिंह फिर वापस आया। इस बार वह काफी दिन ठहरा। रामप्रसाद बिस्मिल के साथ विजय का संपर्क पहले तो खूब अच्छा रहा। बिस्मिल ने योजना की स्वीकृति भी दे दी थी, लेकिन दिन और समय अभी निश्चित नहीं हो पाया था। उधर केस के फैसले का दिन नजदीक आता जा रहा था। इसी बीच कुछ ऐसा हुआ कि बिस्मिल से पत्र व्यवहार और मुलाकातें आदि एकदम बंद हो गईं और उन पर सख्त पहरा लगा दिया गया। यह सब क्यों और कैसे हुआ यह तो नहीं जानता लेकिन इससे योजना को गहरा धक्का लगा। फिर भी विजय ने अपना प्रयास जारी रखा।

भगत सिंह मेरे कमरे में अधिकतर अपना समय पढ़ने में व्यतीत करता था। विक्टर ह्यूगो, हालकेन, टालस्टाय, दॉस्तोयवस्की, गोर्की, बर्नार्ड शॉ, डिक्सेंस आदि उसके प्रिय लेखक थे। पढ़ने से जब उसकी तबियत ऊबती तो वह छात्रावास के पीछे गंगा के किनारे जाकर बैठ जाता, या जब मुझे और जयदेव को कालेज से फुरसत होती तो हम

लोगों से गप्प करता। उसकी बातचीत का विषय अधिकतर उसकी पढ़ी हुई पुस्तकें होतीं। वह उनके बारे में बतलाता और फिर जोर देता कि हम भी उन्हें पढ़ें। कभी-कभी पुराने क्रांतिकारियों की कहानियां भी सुनाता—कूका विद्रोह, गदर पार्टी का इतिहास, कर्तार सिंह, सूफी अम्बाप्रसाद आदि की जीवनियाँ तथा बब्बर-अकालियों की बहादुरी की कहानियां बतलाते-बतलाते वह प्रायः ही भावुक हो उठता। उसकी वर्णन शैली में एक अजीब आकर्षण था जिससे खिंच कर प्रायः रोज ही हम दोनों घंटों पहले कालेज से भाग आते थे।

जयदेव आरंभ से ही मुझ से तगड़ा था। जोखिम से भिड़ने की उसकी आदत थी और मारपीट में उसका हाथ हमेशा से खुला था। उसके इन्हीं सब गुणों से प्रभावित होकर

भगत सिंह ने उसे बिस्मिल वाले ऐक्शन में ले जाने का फैसला कर लिया। एक दिन दोपहर के समय जब उसने अपना उक्त निर्णय मुझसे बतलाया तो मुझे अपने दुबले-पतले शरीर पर बड़ी झुंझलाहट महसूस हुई। मैं पार्टी के काम के योग्य नहीं समझा गया इस विचार से मुझे गहरा आघात

लगा और कुछ देर बैठे रहने के बाद नींद का बहाना लेकर मैं एक तरफ लेट गया। भगत सिंह जानता था कि मैं सो नहीं रहा हूँ। वह कुछ देर तक पास पड़ी एक पुस्तक के पन्ने उलटता रहा, फिर मेरा कंधा हिलाते हुए उसने धीरे से पुकारा "शिव"।

"क्या है?" उसकी ओर करवट बदलते हुए मैंने कहा।

"एक बात पूछूँ?"

"कहो।"

"व्यक्ति का नाम बड़ा है या पार्टी का काम?"

"पार्टी का काम," मैंने उत्तर दिया।

"और पार्टी का काम अविराम गति से चलता रहे, हमारे, 'ऐक्शनन्स' सफल होते रहें, हमारी बात देशवासियों तक

**भगत सिंह मेरे कमरे में अधिकतर अपना समय पढ़ने में व्यतीत करता था। विक्टर ह्यूगो, हालकेन, टालस्टाय, दॉस्तोयवस्की, गोर्की, बर्नार्ड शॉ, डिक्सेंस आदि उसके प्रिय लेखक थे। पढ़ने से जब उसकी तबियत ऊबती तो वह छात्रावास के पीछे गंगा के किनारे जाकर बैठ जाता, या जब मुझे और जयदेव को कालेज से फुरसत होती तो हम लोगों से गप्प करता। उसकी बातचीत का विषय अधिकतर उसकी पढ़ी हुई पुस्तकें होतीं।**



नियमित रूप से पहुंचती रहे, आजादी की अपनी इस लड़ाई में हर मंजिल पर हम कामयाब होते रहें, इसके लिए पहली शर्त क्या है?”

“एक मजबूत और व्यापक संगठन,” मैंने उत्तर दिया। “संगठन और प्रचार” उसने कहा। “देश की जनता हमारे साहस और हमारे कामों की सराहना करती है लेकिन हमसे अपना सीधा संपर्क जोड़ पाने में वह असमर्थ है। अभी तक हमने खुले शब्दों में उसे यह भी नहीं बतलाया कि जिस आजादी की हम बात करते हैं उसकी रूप-रेखा क्या होगी, अंग्रेजों के चले जाने के बाद जो सरकार बनेगी वह कैसी होगी और किसकी होगी। अपने आंदोलन को जनाधार देने के लिए हमें अपना ध्येय जनता के बीच ले जाना होगा, क्योंकि जनता का समर्थन प्राप्त किए बगैर हम अब पुराने ढंग से इक्के-दुक्के अंग्रेज अधिकारियों को या सरकारी मुखबिरों को मार कर नहीं चल सकते। हम अभी तक संगठन तथा प्रचार की ओर से उदासीन रह कर प्रायः ऐक्शन पर ही जोर देते आए हैं। काम का यह तरीका हमें छोड़ना पड़ेगा। मैं तुम्हें और विजय को संगठन तथा प्रचार के कामों के लिए पीछे छोड़ना चाहता हूं।”

कुछ देर चुप रह कर उसने कहा, “हम सब लोग सिपाही हैं। और सिपाही का सबसे अधिक मोह होता है रणक्षेत्र से। इसीलिए ‘ऐक्शन’ पर चलने की बात उठते ही सब लोग उछल पड़ते हैं। फिर भी आंदोलन का ध्यान रखकर किसी न किसी को तो ‘ऐक्शन’ का यह मोह छोड़ना ही पड़ेगा। यह सही है कि आमतौर पर शहादत का सेहरा ‘ऐक्शन्स’ में जूझने वालों या फांसी पर झूल जाने वालों के सर पर ही बंधता है, लेकिन इसके बावजूद उनकी स्थिति इमारत के मुख्य द्वार पर जड़े उस हीरे के समान ही रहती है जिसका मूल्य जहां तक इमारत का सवाल है, नींव के नीचे दबे एक साधारण पत्थर के मुकाबिले कुछ भी नहीं होता।”

मैं लेटे-लेटे भगत सिंह की बातें सुनता रहा। वह मेरे सर

के पास दीवार का सहारा लिए बैठा था और ऐसे बात कर रहा था मानो जोर-जोर से सोचने का प्रयास कर रहा हो। बीच-बीच में उसके दाहिने हाथ की उंगलियां मेरे सर के बालों में घूम जातीं और वह फिर धीरे-धीरे रुक-रुक कर उसी लहजे में बोलना शुरू कर देता।

“हीरे इमारत की खूबसूरती बढ़ा सकते हैं, देखने वालों को चकाचौंध कर सकते हैं, लेकिन इमारत की बुनियाद नहीं बन सकते, उसे लंबी उम्र नहीं दे सकते, सदियों तक अपने मजबूत कंधों पर उसके बोझ को उठा कर उसे

सीधा खड़ा नहीं रख सकते। अभी तक हमारे आंदोलन ने हीरे कमाए हैं, बुनियाद के पत्थर नहीं बटोरे। इसीलिए इतनी कुर्बानी देने के बाद भी हम अभी तक इमारत क्या उसका ढांचा भी खड़ा नहीं कर पाए। आज हमें बुनियाद के पत्थरों की जरूरत है।” फिर कुछ

रुककर बोला, “और त्याग तथा कुर्बानी के भी दो रूप हैं। एक है गोली खाकर या फांसी पर लटक कर मरना। इसमें चमक अधिक है लेकिन तकलीफ कम। दूसरा है पीछे रहकर सारी जिंदगी इमारत का बोझ ढोते फिरना।

आंदोलन के चढ़ाव उतार के बीच प्रतिकूल वातावरण में कभी ऐसे भी क्षण आते हैं जब एक एक कर सभी हमराही छूट जाते हैं। उस समय मनुष्य सात्वना के दो शब्दों के लिए भी तरस उठता है। ऐसे क्षणों में भी विचलित न होकर जो लोग अपनी राह नहीं छोड़ते, इमारत के बोझ से जिनके पैर नहीं लड़खड़ाते, कंधे नहीं झुकते, जो तिल-तिलकर अपने आपको इसलिए गलाते रहते हैं, इसलिए जलाते रहते हैं कि दिए की जोत मध्यम न पड़ जाए, सुनसान डगर पर अंधेरा न छा जाए, ऐसे लोगों की कुर्बानी और त्याग पहले वालों के मुकाबिले क्या अधिक नहीं हैं?”



(लेखक शिव वर्मा, भगतसिंह के साथी थे। यह संस्मरण अलीगढ़ से प्रकाशित गोदारण पत्रिका के क्रांतिकारी महानायक भगतसिंह विशेषांक से साभार) ■



# क्या गाँधी जी भगत सिंह को बचा सकते थे?

—नरेश बारिया स्वदेशी

**आ**ज के दौर का युवा ना कभी लायब्रेरी में जाकर इतिहास का एक पन्ना पढ़ता है, ना ही कभी तथ्यों को सच्चाई की कसौटी पर खँगालता है। बस उसके मोबाइल में जो झूठ किसी ने पेश किया होता है, वो उसी झूठ को सच मानकर महाज्ञानी बन जाता है। आज के जमाने में सोशल मीडिया सबसे बड़ा झूठ फैलाने का अड्डा है। और हैरत की बात यह है की ज्यादातर गाँधी जी के विषय पर झूठ फैलाने, उन्हें गालियाँ देने का काम वो लोग करते हैं जो अपने आपको सबसे बड़े धार्मिक होने का दावा करते हैं।

जो व्यक्ति इंसान तो क्या चींटी मारने को भी महापाप समझता हो, उस व्यक्ति पर भारत के कुछ लोग भगत सिंह और उनके साथियों को मरवाने का आरोप लगा रहे हैं! गाँधी जी कभी खूनी, चोर, लुटेरे की भी फाँसी के पक्ष में नहीं रहे, ऐसे व्यक्ति पर भगतसिंह जैसे देशभक्त को नहीं बचाने का आरोप? बापू पर ऐसे घटिया आरोप लगाने वाले किस विचारधारा के हैं, वो कहने की आवश्यकता नहीं।

भगत सिंह और उनके साथियों पर एसएसपी जे.पी. सांडर्स की हत्या का मुकदमा चल रहा था। सांडर्स हत्या कांड में भगत सिंह के अपने ही साथी जय गोपाल और हंसराज वोहरा ने

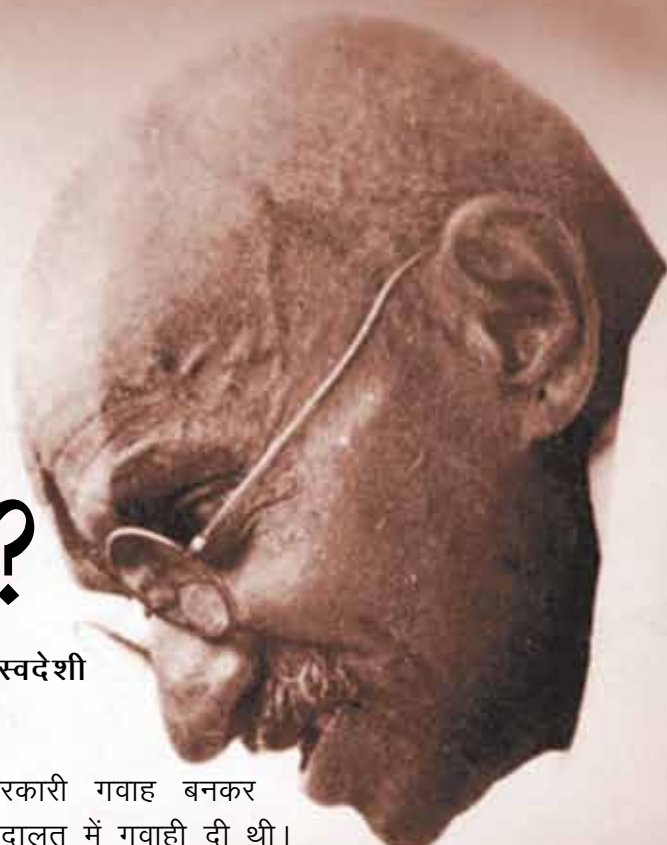
सरकारी गवाह बनकर

अदालत में गवाही दी थी।

(जब एसेम्बली में बम फोड़ा गया था तब भी भगतसिंह के खिलाफ उनके अपने आदमी ने ही गवाही दी थी।) सांडर्स हत्या में अंग्रेजों की दिखावे की अदालत ने भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को 24 मार्च 1931 सुबह 7 बजे फाँसी देने का हुकुम सुनाया था।

‘भगतसिंह की फाँसी रुक सकती थी यदि गाँधी चाहते तो— ‘इस विचार को फैलाने वालों को शायद यह नहीं मालूम की महात्मा गाँधी ने खुद का बचाव भी कभी नहीं किया, अपने जीवनकाल में जब-जब गांधीजी को सजा सुनाई गई, उन्होंने हमेशा अंग्रेजी हुकुमत से यही कहा कि—‘हाँ, मैंने ये जुर्म किया है . . . अपने देशवासियों को जगाया है।’ यही नहीं, चौरी-चौरा कांड में जब 23 पुलिसकर्मी (ज्यादातर भारतीय मूल के) मारे गये थे तब उस हत्याकांड की सारी जिम्मेदारी गाँधी जी ने अपने आप पर लेते हुए कोर्ट में यह मांग की थी कि उन्हें कड़ी से कड़ी सजा दी जाए।’ (जो व्यक्ति हमारे विचारों का नहीं होता, उसका बचाव हम सार्वजनिक स्थानों पर तो क्या सोशल मीडिया पर भी नहीं करते, मगर फिर भी गाँधी जी ने भगतसिंह का बचाव किया।) क्रांतिकारियों में और गांधीजी में हिंसा और अहिंसा के मुद्दे पर मतभेद था, मनभेद तो लेषमात्र भी न था।

गाँधी जी की सोच यह थी कि क्रांतिकारी गतिविधि का सामना करने के लिए अंग्रेज सरकार फौजी खर्च बढ़ाती







है, जो हम गरीबों के पैसों से वसूला जाता है। इतनी भिन्न सोच होने के बावजूद गाँधी जी क्रांतिकारियों को बचाने आगे आए।

सांडर्स हत्या और भगतसिंह की फांसी की परिस्थितियाँ कैसे निर्माण हुई उस पर नजर डालते हैं —

1928 में अंग्रेजों ने जॉन सायमन को भारतीय स्थिति पर रिपोर्ट देने और राजनीतिक सुधारों की सिफारिश के लिए नियुक्त किया, जिसे 'सायमन कमीशन' से जाना जाता है। सायमन कमीशन भारत के भाग्य का फैसला करने वाला था, परंतु आश्चर्य तो इस बात का था कि इस कमीशन में एक भी भारतीय नहीं था। महात्मा गाँधी ने निश्चय कर लिया सायमन की इतनी अधिक उपेक्षा कर देना है कि मानो हमने उनके अस्तित्व को ही नकार दिया हो। गाँधी जी की घोषणा का असर ये हुआ कि पूरे भारत में जॉन सायमन को विरोध का सामना करना पड़ा। जगह जगह काले झंडे दिखाए जा रहे थे। 'सायमन गो बैक', 'सायमन वापस जाओ' के गगन भेदी नारे लग रहे थे। गाँधी जी का बहिष्कार इतना बुलंद था कि उन्होंने कमीशन का कभी नाम तक अपनी जुबान से नहीं लिया।

इसमें ये बात तो निश्चित थी कि ये विरोध पूरे अहिंसक तरीके से हो रहा था। अंग्रेजों की लाठियों की बौछार से पं० नेहरुजी लखनऊ में बुरी तरह घायल हो गए। लाहौर में बुजुर्ग लाला लाजपत राय जी पर अंग्रेजों ने इतनी बेरहमी से लाठियाँ बरसाईं की लाला जी शहीद हो गए। ये नजारा भगतसिंह से देखा नहीं गया। भगतसिंह

ने लाला जी के चरणों को चूमते हुए लाठी बरसाने वाले जेम्स स्कोर्ट को मारने का निर्णय किया।

क्रांतिकारियों ने स्कोर्ट को मारने की रणनीति बनाई। स्कोर्ट पुलिस स्टेशन से कब बाहर आए, इसकी जानकारी देने का काम जयगोपाल को दिया गया। मगर पुलिस स्टेशन से स्कोर्ट की जगह सांडर्स बाहर आया और जयगोपाल ने सांडर्स को पहचानने में गलती कर दी और गलत सिग्नल दे दिया। भगत सिंह कुछ समझे उसके पहले राजगुरु ने अपनी पिस्तौल से गोली चला दी। ये देखकर भगत सिंह ने भी सांडर्स पर गोलियों की बौछार कर दी। इस तरह गलती से स्कोर्ट की जगह सांडर्स मारा गया।

ये गलती क्रांतिकारियों को मन ही मन खाए जा रही थी, क्योंकि स्कोर्ट को मारकर लाला जी की हत्या का बदला लेने वाला बैनर क्रांतिकारियों ने पहले ही बनाकर रखा था। सांडर्स हत्याकांड के बाद अंग्रेजों को चकमा देकर भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद और राजगुरु लाहौर से कलकत्ता जाने में सफल रहे। उस घटना के बाद क्रांतिकारियों ने एक साल तक कोई गतिविधि नहीं की। अंग्रेज क्रांतिकारियों को हत्यारा कह रही थी। अपने माथे पर लगा हत्यारे का लेबल क्रांतिकारियों को बर्दाश्त नहीं हो रहा था। वे हत्यारे नहीं बल्कि जनता को जागरूक करने वाले क्रांतिकारी थे। अपनी बात जनता तक पहुंचाने के लिए भगतसिंह ने असेम्बली में बम फेंका।

यहाँ गौर करने वाली बात यह है कि जान लेने और जान देने वाले नवयुवक इस बार किसी की जान नहीं जाए ऐसी परवाह कर रहे थे। भगतसिंह ने जानबूझकर बेअसर

**विरोध पूरे अहिंसक तरीके से हो रहा था। अंग्रेजों की लाठियों की बौछार से पं० नेहरुजी लखनऊ में बुरी तरह घायल हो गए। लाहौर में बुजुर्ग लाला लाजपत राय जी पर अंग्रेजों ने इतनी बेरहमी से लाठियाँ बरसाईं की लाला जी शहीद हो गए। ये नजारा भगतसिंह से देखा नहीं गया। भगतसिंह ने लाला जी के चरणों को चूमते हुए लाठी बरसाने वाले जेम्स स्कोर्ट को मारने का निर्णय किया।**



(अहिंसक) बम बनाया, वो भी असेम्बली में रिक्त स्थान पर फेंका जहाँ पर कोई मौजूद नहीं था। जबकि लालाजी की मौत का कारण सायमन उसी असेम्बली में मौजूद था। भगतसिंह चाहते तो बम सायमन पर फैंककर लालाजी की मौत का बदला ले सकते थे फिर भी भगतसिंह ने इस बार मौका होने के बावजूद अहिंसक तरीका अपनाया।

चाहे जो हो, भले ही क्रांतिकारी गाँधी की अहिंसा को उस हद तक नहीं पसंद करते थे, पर इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि अहिंसा अपना काम धीरे धीरे कर रही थी। जेल में भारतीय कैदियों के साथ हो रहे भेदभाव के खिलाफ भगतसिंह ने जो रास्ता चुना वो भी संपूर्ण तरीके से अहिंसक ही था। वो था गाँधी जी का सबसे बड़ा हथियार—अनशन। जेल में मिल रही असुविधा के विषय पर भगतसिंह ने बहुत सौम्य रूप में पत्र लिखा था।

जब अनशन लंबा चला, उसमें एक साथी जतिन दास की मौत हो गई तब कांग्रेस की विनती को मान देकर भगतसिंह ने अपना अनशन छोड़ा था। गाँधी जी के करीबी मित्रों में से एक प्राणजीवन मेहता भगत सिंह से जेल में मिलने गए तब भगतसिंह जी ने प्राणजीवन मेहता से पंडित नेहरुजी और सुभाषचंद्र का विशेष तौर से धन्यवाद माना, क्योंकि नेताजी और नेहरु जी शुरुआत से ही भगत सिंह जी के केस में रूचि ले रहे थे। नेहरुजी ने ही अंग्रेज सरकार से भगतसिंह को राजकीय कैदी घोषित करने की मांग की थी।

भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु को 7 अक्टूबर 1930 के दिन फांसी की सजा सुनाई गई थी। मुकदमा 11 फरवरी 1931

तक चला, फैसले में कोई बदलाव नहीं आया।

दरअसल 1930 में गाँधी जी ने नमक सत्याग्रह आंदोलन किया था। उस अहिंसक आंदोलन की दुनियाभर में चर्चा हुयी थी और उसे अंग्रेजी हुकुमत की काफी किरकिरी हुई। अंग्रेजों ने गुस्से में आकर कांग्रेस पार्टी को असंवैधानिक पार्टी घोषित कर दिया। कांग्रेस के सभी दफ्तरों में छापे डाले गये, गाँधी जी समेत कई बड़े कांग्रेसी नेताओं को जेल में डाला गया। आजादी की लड़ाई लड़ने वाली प्रमुख कांग्रेस पार्टी को अपना अस्तित्व बचाना मुश्किल हो गया था।

गाँधी जी जब जेल में थे तब अदालत भगत सिंह को फांसी का फैसला सुना चुकी थी। फैसले पर वायसराय की अंतिम मुहर लगनी बाकी थी। गाँधी जी, जैसे ही 26 जनवरी 1931 को जेल से रिहा हुए, उन पर भगतसिंह की फांसी रुकवाने का दबाव बन गया। 17 फरवरी और 5

मार्च 1931 के दौरान गांधीजी का तत्कालीन वायसराय इरविन के साथ ऐतिहासिक करार चल रहा था। उस करार को “गांधी—इरविन समझौता” के नाम से भी जाना जाता है। उस समझौते के मुताबिक गाँधी जी ने अंग्रेजों की कुछ शर्तें मानकर भारत के 90 हजार से ज्यादा कैदियों को जेल से छुड़वाया था। सभी देशप्रेमी चाहते थे कि गांधीजी अपने प्रभाव का इस्तेमाल करके भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु को बचाएँ।

**1930 में गाँधी जी ने नमक सत्याग्रह आंदोलन किया था। उस अहिंसक आंदोलन की दुनियाभर में चर्चा हुयी थी और उसे अंग्रेजी हुकुमत की काफी किरकिरी हुई। अंग्रेजों ने गुस्से में आकर कांग्रेस पार्टी को असंवैधानिक पार्टी घोषित कर दिया। कांग्रेस के सभी दफ्तरों में छापे डाले गये, गाँधी जी समेत कई बड़े कांग्रेसी नेताओं को जेल में डाला गया। आजादी की लड़ाई लड़ने वाली प्रमुख कांग्रेस पार्टी को अपना अस्तित्व बचाना मुश्किल हो गया था।**





समझौते में हिंसा के आरोपी कैदियों को छोड़ने के लिए अंग्रेज राजी नहीं थे। भगतसिंह की फाँसी पर वायसराय इरविन की मुहर लगनी अभी बाकी थी। वैसे भी गाँधी जी फाँसी की व्यवस्था में यकीन नहीं रखते थे। इसलिए गाँधी जी ने वॉइसरॉय इरविन को फाँसी को उम्र कैद में बदलने हेतु 18 फरवरी, 19 मार्च और 23 मार्च के तीन चिट्ठियाँ लिखी थीं। गांधीजी ने वायसराय के सामने अपनी बात रखते हुए कहा कि यदि आप फाँसी के फैसले को सजा में परिवर्तित करते हैं तो आप क्रांतिपक्ष को बहुत हद तक शांत कर सकते हैं। ये रोज रोज का खूनखराबा रुक सकता है। वायसराय ने कहा कि ये मुमकिन नहीं है क्योंकि भगत सिंह ने हमारे पुलिस ऑफिसर की हत्या की है।

इस पर गाँधी जी ने कहा कि जान के बदले जान लेना हमें धर्म नहीं सिखाता। वैसे भी फाँसी उस व्यक्ति को सुधरने का एक भी मौका नहीं देती ! भगत सिंह ने जो किया वो अपनी मानसिक अस्थिरता के कारण किया। वैसे भी कानून कहता है, मानसिक अस्थिरता वाले को फाँसी की नहीं इलाज की जरूरत होती है। गांधीजी ने

**भगतसिंह की फाँसी पर  
वायसराय इरविन की मुहर  
लगनी अभी बाकी थी।  
वैसे भी गाँधी जी फाँसी  
की व्यवस्था में यकीन नहीं  
रखते थे। इसलिए गाँधी  
जी ने वॉइसरॉय इरविन  
को फाँसी को उम्र कैद में  
बदलने हेतु 18 फरवरी,  
19 मार्च और 23 मार्च के  
तीन चिट्ठियाँ लिखी थीं।  
गांधीजी ने वायसराय के  
सामने अपनी बात रखते  
हुए कहा कि यदि आप  
फाँसी के फैसले को सजा  
में परिवर्तित करते हैं तो  
आप क्रांतिपक्ष को बहुत  
हद तक शांत कर सकते हैं।**

ईसाई धर्म और प्रभु इशु का वास्ता देते हुए कहा कि यदि बच्चों ने अपनी नासमझी में कोई अपराध किया भी है तो जान लेने का हक केवल ईश्वर को है। यही बात प्रभु यीशु भी मानते थे। वायसराय ने फाँसी पर नरमी अपनाने का गाँधी जी को आश्वासन दिया था। समझौते के दौरान ये तय हुआ था कि जेल से निकलने के बाद कोई भी क्रांतिकारी या सत्याग्रही ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध काम नहीं करेगा। सरकार—विरुद्ध किसी भी गतिविधि में शामिल नहीं होगा। किन्तु गाँधी को बदनाम करने

हेतु “गांधी—इरविन समझौते को लिजेंड ऑफ भगतसिंह” फिल्म में बहुत ही घटिया तरीके से दर्शाया गया!

उस वक्त के मशहूर लेखक सावरकर ने अपने किसी भी पत्रक में भगत सिंह की फाँसी रद्द करवाने की बात नहीं लिखी . . . . . उल्टा तत्कालीन सरसंघसंचालक केशव बलीराम हेडगेवार ने अपने मुखपत्र में फरमान जारी किया कि गाँधी के सत्याग्रह से सभी को अलिप्त (दूर) रहना है।

भगत सिंह की फाँसी रद्द होने की सुगबुगाहट को फैलते ही सिविल सर्विस ऑफिसर में रोष फैल गया। तत्कालीन पंजाब के गवर्नर केडर ने गवर्नर पद से इस्तीफा देने की धमकी ब्रिटिश सरकार को दे दी थी। ब्रिटिश सरकार की गणित के मुताबिक यदि गवर्नर केडर अपने पद से इस्तीफा देते तो उनके बहुत सारे सहयोगी जो म्यांमार, अफगानिस्तान, अरब देशों में ब्रिटिश सरकार की नौकरीयाँ करते हैं वे सामूहिक तौर पर इस्तीफा दे सकते हैं। वे सारे ब्रिटिश युवक स्वदेश लौट सकते हैं। नए युवकों को ब्रिटेन से नौकरी पर लाना मुश्किल हो सकता है। गाँधी जी को इस बात की भनक लगते ही वे 22 मार्च को वायसराय इरविन से मिलने पहुँच गए और इरविन को अपना आश्वासन याद दिलाया। 23 मार्च को गांधीजी ने वायसराय को चिट्ठी भी लिखी थी, चिट्ठी में लिखा था कि फाँसी के फैसले को अनिश्चितकाल तक अमल में न लाया जाये। उन्होंने कहा कि कृपया भगत सिंह और उनके साथियों को जीवन का एक मौका दीजिए। (ये बात लॉर्ड इरविन ने अपनी डायरी में लिखी थी)

अंग्रेज सरकार गांधीजी की हर बात मानने के लिए बाध्य नहीं थी। वैसे भी अंग्रेज सरकार भगत सिंह की फाँसी रद्द करवा कर गाँधी को जनता की नजर में हीरो क्यों बनाती? वो तो आए ही थे देश में फूट पैदाकर राज करने के लिए! और उन्होंने यही किया, भगतसिंह और उनके साथियों को तय तारीख के पहले, यानि 24 मार्च के पहले 23 मार्च की शाम 7:33 पर ही फाँसी दे दी . . . . . !

सभी मुद्दे पर अपना नफा—नुकसान देखने वाली अंग्रेज सरकार ने भगत सिंह की फाँसी से अपना दो प्रकार का फायदा कर लिया! एक भगत सिंह जैसे क्रांतिकारी की जान ले ली और गाँधी जैसे सत्यवादी को जनता की नजर में गिराने की कोशिश की ! अंग्रेज की कूटनीति का परिणाम यह आया की आज भी कुछ लोग भगतसिंह जी



की फाँसी के लिए गाँधी जी को दोषी मान रहे हैं . . . . मनगढ़ंत आरोप लगाकर गाँधी जी को बदनाम कर रहे हैं . (आरोप लगाने वालों को सोचना चाहिए कि गाँधी जी ने अंग्रेजों से कहा था कि वे भारत छोड़कर चले जाएँ, तो क्या उसी वक्त गांधीजी की बात मानकर अंग्रेज भारत छोड़कर चले गये थे ? ? ? )

सच तो यह है कि भगत सिंह स्वयं के लिए किसी भी प्रकार की क्षमा याचना नहीं चाहते थे। उन्हें दृढ़विश्वास था कि उनकी शहादत देश के हित में होगी। भगतसिंह जी स्वयं जानते थे कि जिस रास्ते पर वे चल रहे हैं उसका आखिरी अंजाम फाँसी ही है। इसीलिए वे किसी से भी अपने जीवन की आस नहीं रखते थे। भगत सिंह

चाहिए। भगत सिंह ने अपने पिता से जवाब में ये कहा कि गाँधी जी महान हैं, उसमें कोई दोराय नहीं, लेकिन अंग्रेज जैसे जालिमों से अहिंसा के रास्ते से नहीं लड़ा जा सकता।

फाँसी के बाद भगत सिंह ने तो गाँधी जी के लिए कोई संदेश नहीं छोड़ा मगर सुखदेव ने गांधीजी के नाम जरूर एक चिट्ठी लिखी थी। उस चिट्ठी की शुरुआत करते हुए सुखदेव ने लिखा था “आदरणीय महात्माजी”। सुखदेव की चिट्ठी गाँधी जी के प्रति थोड़ी नाराजगी भरी थी, लेकिन उस चिट्ठी का सार कोई समझ नहीं पा रहा था। तब गाँधी जी ने अपनी जगह से उठकर चिट्ठी अपने हाथ में लेकर वहाँ बैठे लोगों को समझाते हुए कहा कि



के पिता किशनसिंह ने फाँसी की सजा रद्द करने की ब्रिटिश सरकार से गुहार लगाई तो भगत सिंह अपने पिता पर गुस्सा हो गए। उन्होंने अपने पिता को यहाँ तक कह दिया कि आपने मेरी पीठ में छुरा घोंपा है। अपने जीवन के अंतिम दिनों में भगत सिंह ने अपने साथी कैदियों से कहा था कि मुझे फाँसी के फंदे तक जाने से कोई नहीं रोक सकता। दूसरा सच यह है कि भगत सिंह के हिंसा के मार्ग का समर्थन खुद उनके पिता किशन सिंह भी नहीं करते थे। किशन सिंह जी भगत सिंह को समझाते थे कि हमें गाँधी जी के अहिंसा मार्ग से अंग्रेजों से आजादी लेनी

ये बच्चा चिट्ठी के जरिए यह कहना चाहता है कि मैंने उन्हें फाँसी से बचाने का उचित प्रयास नहीं किया . . . गांधीजी का मनोबल इतना मजबूत था कि उन्होंने सुखदेव जी की ये चिट्ठी दूसरे दिन ‘यंग इंडिया’ अखबार के पहले पन्ने पर छपवाई।

(लेखक प्रतिबद्ध गाँधीवादी हैं और राष्ट्रीय आन्दोलन फ्रंट के महत्वपूर्ण सदस्य हैं. यह लेख फ्रंट द्वारा संचालित ब्लॉग स्वाधीन से साभार प्रकाशित।) ■





# परकोटे वाली दिल्ली की कहानी

—नलिन चौहान

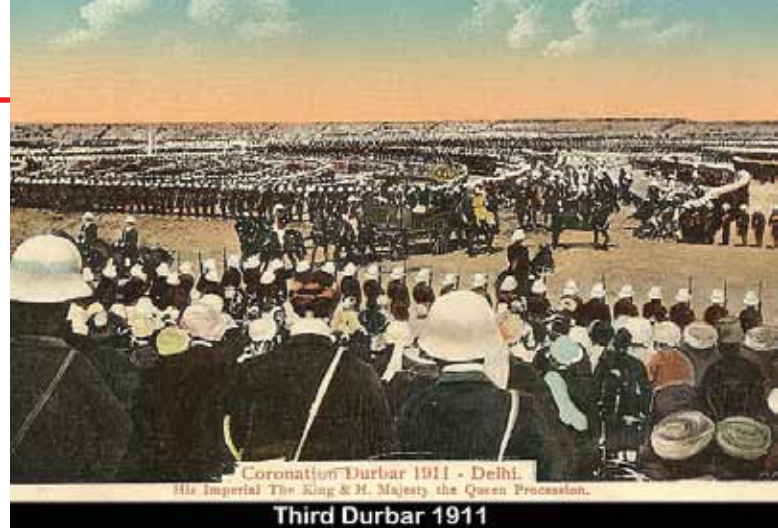
उत्तर और मध्य भारत में अंग्रेजों के राज से पहले के परकोटे वाले शहर, वहां के शहरी परिदृश्य का अभिन्न भाग रहे हैं। इस चीज को समझने के लिए दिल्ली, जयपुर, आगरा, लखनऊ और अमृतसर जैसे पुराने शहरों के परकोटे वाले स्थान महत्वपूर्ण हैं। मुगल बादशाह शाहजहां ने 1639 में दिल्ली में एक नया शहर बसाने का फैसला किया। नतीजतन लाल किला और शाहजहानाबाद दस साल में बनकर पूरा हुआ। सात मील के दायरे में फैले हुए इस नए शहर की तीन तरफ एक मोटी और मजबूत दीवार बनी थी।

शमा मित्र चेनॉय अपनी पुस्तक 'शाहजहानाबाद: ए सिटी ऑफ दिल्ली (1638–1857)' में लिखती हैं कि जब शहर में आबादी बसी तब उसकी परिधि के साथ मिट्टी की एक दीवार बनायी गई थी। कश्मीरी दरवाजे से शुरू होकर यह दीवार बायीं तरफ तीन चौथाई मील तक एक सीधी रेखा

की तरह मोरी दरवाजा तक जाती थी। जबकि महेश्वर दयाल की पुस्तक 'दिल्ली जो एक शहर है' के अनुसार, शाहजहानाबाद की दीवार वर्ष 1650 में पत्थर और मिट्टी की बनाई गई थी, जिस पर तब पचास हजार रूपए का खर्चा आया। यह 1664 गज चौड़ी और नौ गज ऊंची थी और इसमें तीस फुट ऊंचे सत्ताईस बुर्ज थे।



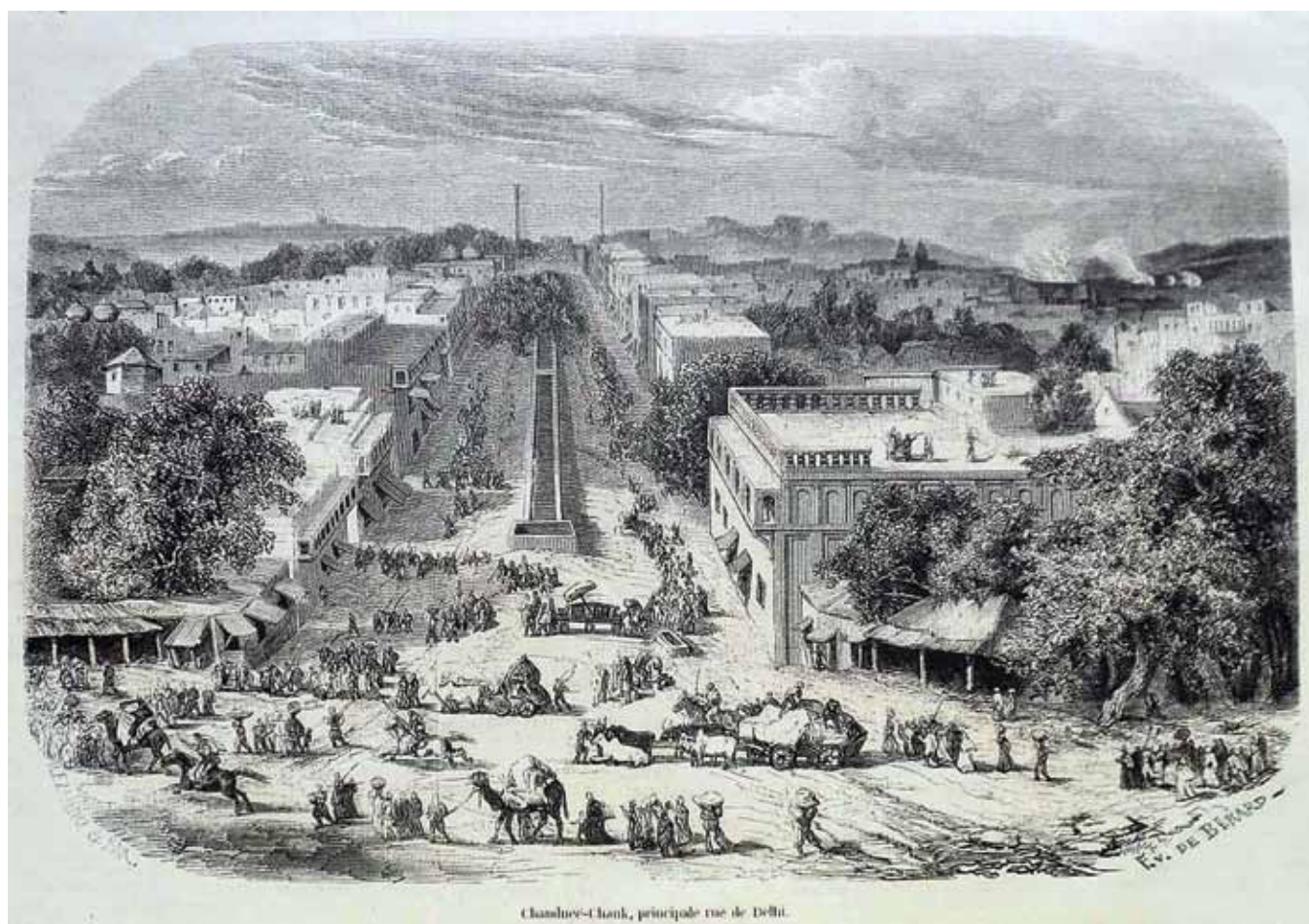




1857 में देश की आजादी की पहली लड़ाई के बाद मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर को देश निकाला दे दिया गया और दिल्ली अंग्रेजों के गुस्से और तबाही का शिकार बनी। गोपाल भार्गव अपनी पुस्तक "अर्बन प्रॉब्लम्स एंड अर्बन पर्सपेक्टिव्स" में लिखते हैं कि 1857 में अंग्रेज कश्मीरी गेट से शहर में नफरत और प्रतिशोध लेने की भावना के साथ दाखिल हुए। सिटी मजिस्ट्रेट फिलिप एगर्टन ने प्रस्ताव रखा कि जामा मस्जिद को एक ईसाई चर्च बनाकर उसका इस्तेमाल किया जाना चाहिए और उसे संगमरमर के फर्श पर बने हजार खानों में ईसाई

शहीदों का नाम खोदे जाने चाहिए। यह तो पंजाब के तत्कालीन मुख्य आयुक्त, सर जॉन लॉरेंस की समझदारी थी कि शाहजहानाबाद ऐसे पागलपन से बच गया।

फरवरी 1858 में अंग्रेज सैनिक अधिकारियों ने शहर की दीवार को ध्वस्त करने का आदेश दिया। तत्कालीन कमिश्नर जॉन लॉरेंस इस को पूरी तरह एक गलत फैसला मानता था। उसने दिल्ली में सात मील लंबी दीवार को उड़ाने के लिए अपर्याप्त बारूद होने की बात कही। फिर आदेश को पूरा करने के लिए मजदूरों ने एक-एक करके हाथ से दीवार के पत्थरों को हटाया। यह एक तरह से



Chandni-Chowk, principale rue de Delhi.





जानबूझकर देरी के लिए अपनाई रणनीति हो सकती है, क्योंकि वर्ष के अंत में सुप्रीम गर्वनमेंट ने उसकी बातों को स्वीकार कर लिया और दीवार को कायम रखने का फैसला किया।

उल्लेखनीय है कि मार्च 1859 में "दिल्ली गजट" नामक अखबार ने इस बात की ओर ध्यान दिलाया कि महल यानी लालकिला के भीतर इमारतों को गोला-बारूद से नेस्तानाबूद करने का काम हो रहा है। इसके एक साल बाद, जब लार्ड कैनिंग ने वास्तुकला या ऐतिहासिक महत्व की पुरानी इमारतों को संरक्षित किए जाने का आदेश दिया तो तब तक काफी नुकसान हो

चुका था। इतना ही नहीं, अंग्रेजों ने 1861 में, रेलवे लाइन के निर्माण के हिसाब से लाल किले के कलकत्ता गेट सहित कश्मीरी गेट और मोरी गेट के बीच के क्षेत्र को ध्वस्त कर दिया। इसके पीछे उनका मकसद साफ था कि अगर भविष्य में भारतीयों की ओर से दोबारा ऐसा प्रयास होता है तो ब्रितानी सेना उसे जल्दी और आसानी से दबा सकें।

1857 के बाद, अंग्रेज शासकों ने शाहजहानाबाद से दूरी बना ली। उन्होंने जानबूझकर इसकी अनदेखी की। कश्मीरी गेट क्षेत्र में परकोटे वाले शहर में कुछ समय रहने के बाद वे सिविल लाइन्स के इलाके में स्थानांतरित हो गए। इस तरह, उन्होंने पुराने शहर और नई बस्तियों के बीच यानी कुदसिया और निकोलसन बागों के लिए भी काफी जगह छोड़ दी। न केवल भौगोलिक बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से शाहजहानाबाद पृथक् ही बना रहा और दीवार पुरानी तथा परिवर्तन की नई हवाओं के बीच एक अवरोध के रूप में कायम रही।

वर्ष 1872 में दिल्ली को एक सुंदर शहर बनाने की चाहत रखने वाला अंग्रेज कमिश्नर कर्नल क्रेक्रॉफ्ट पुराने शहर की दीवार को अराजकतावाद की निशानी मानता था। वर्ष 1881 में नगर पालिका ने लाहौरी दरवाजे की दोनों ओर रास्ते बनाते हुए दिल्ली गेट को नष्ट करने का इरादा बनाया।

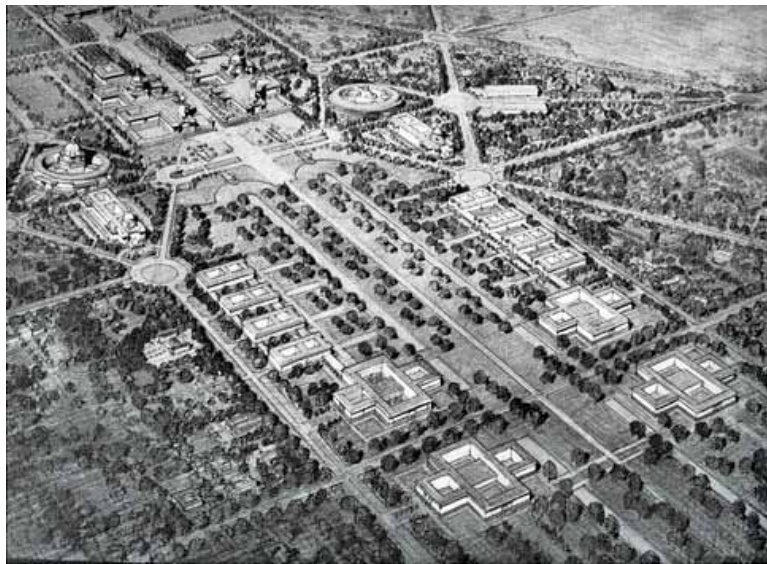
तत्कालीन अंग्रेज कमांडर-इन-चीफ ने इस





पर आपत्ति व्यक्त की क्योंकि वह कश्मीरी गेट और उससे सटी दीवारों को ऐतिहासिक महत्व की वजह से बचाना चाहता था। वहीं वर्ष 1905 में, एक मेजर पार्सन ने शाहजहानाबाद के भीड़भाड़ का हवाला देते हुए कुछ हद तक इस बात की वकालत की कि शहर के फैलाव की जगह होनी चाहिए, अन्यथा यह खत्म हो जाएगा। उसने साफगोई से यह बात कही कि दीवार को तोड़कर शहर का पश्चिम की दिशा की तरफ विस्तार करना चाहिए।

ब्रितानी राज में (1857–1911 की अवधि में) दिल्ली का पूरा शहर विध्वंस का गवाह बना। इस अवधि में ब्रितानी



सरकार ने अपनी सेना और प्रशासन में काम करने वाले गोरों के लिए घर, कार्यालय, चर्च, बाजार बनाए और इस तरह गोरों की आबादी शहर यानि शाहजहानाबाद के परकोटे की दीवार से बाहर बस गई।

यामिनी नारायणन की पुस्तक 'रिलीजन, हैरिटेज एंड द सस्टेनेबल

सिटी हिंदुइज्म एंड अर्बनाइजेशन इन जयपुर' के अनुसार, भारत में अंग्रेजी उपनिवेशवाद के बाद बने शहरों के साथ ही पुराने परकोटे वाले शहरों का महत्व घटना शुरू हुआ। वर्ष 1857 के पहले भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के बाद अंग्रेज शासकों ने ब्रितानिया साम्राज्य में नए बड़े शहरों को बनाने की शुरुआत की और वे पुराने परकोटे वाले







शहरों से बाहर  
निकलने लगे।  
उल्लेखनीय

है कि शाहजहाँनाबाद की

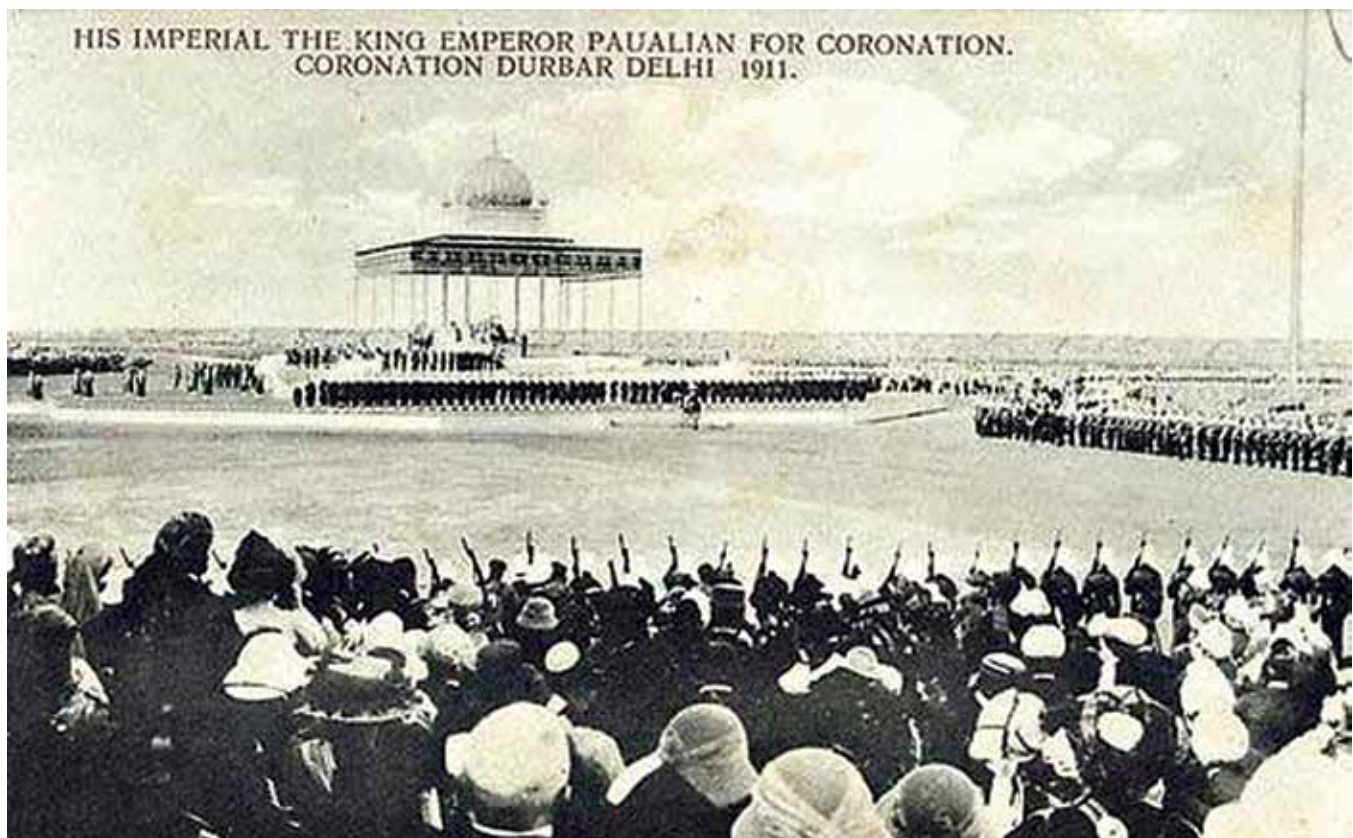
पश्चिम और उत्तर दिशा की दीवारों के  
विपरीत दक्षिण-पश्चिमी तरफ की दीवार को असलियत  
में एक रुकावट माना गया था तथा वर्ष 1820 के दशक  
में इसके कुछ हिस्सों को ध्वस्त कर दिया गया।

“द ट्रेडिशन ऑफ इंडियन आर्किटेक्चर” पुस्तक में जी.  
एच. आर. तिलोटसन लिखते हैं कि वर्ष 1911 में, अंग्रेज

सम्राट जॉर्ज पंचम ने भारत की राजनीति से संबंधित  
व्यक्तियों को दिल्ली को एक बार फिर भारत की राजधानी  
बनाने की घोषणा करके अंचभे में डाल दिया। उल्लेखनीय  
है कि अंग्रेज राजा ने अपने भाषण में दिल्ली को प्राचीन  
राजधानी बताया। उस समय तक कलकत्ता ब्रिटिश भारत  
की राजधानी थी।

वर्ष 1911 में अंग्रेजों के अपनी राजधानी को कलकत्ता से  
दिल्ली लाने के साथ ही एडवर्ड लुटियन को शाहजहाँनाबाद  
के बाहर नई दिल्ली बनाने का दायित्व सौंपा गया। वह  
(लुटियन) तो वायसराय भवन से लेकर जामिया मस्जिद  
तक एक सीधी सड़क निकालना चाहता था, जो पुरानी  
दिल्ली की दीवार और बाजारों से होते हुई गुजरती।  
लेकिन उसकी इस योजना को स्वीकृति नहीं मिलने के  
कारण ऐसा नहीं हो सका।

“सिटी वॉल: द अर्बन एनसीइन्ट इन ग्लोबल पर्सपेक्टिव”  
शीर्षक वाली पुस्तक के अनुसार, हर्बर्ट बेकर और एडविन  
लुटियंस दोनों को एक और दिल्ली की योजना बनाने की  
जिम्मेदारी दी गई थी। लुटियन का शहर आधुनिकता और  
प्रगति की एक निशानी के रूप में तैयार होना था, जहां  
पर चारदीवारी या परकोटे का कोई स्थान नहीं था। ■







# दिल्ली हिंदी अकादमी का हिंदी पखवाड़ा हिंदी भाषा, साहित्य और समाज का उत्सव!

**प्र**यात लेखिका मैत्रेयी पुष्पा जब से उपाध्यक्ष बनी हैं, दिल्ली की हिंदी अकादमी सक्रियताओं के नए मेयार रच रही है। साल भर कोई ना कोई कार्यक्रम दिल्ली के वातावरण में साहित्यिक सरगर्मी पैदा करता रहता है। इस सिलसिले की कड़ी इस बार का

हिंदी पखवाड़ा भी था जिसने विषय और कार्यक्रम की विविधताओं से अपना ध्यान खींचा।

हिंदी पखवाड़ा 13 से 23 सितंबर के बीच आयोजित किया गया। इस दौरान हुए विचारविमर्श ने हिंदी भाषा ही नहीं, हिंदी साहित्य और समाज की समझ को समृद्ध किया। हिंदी अकादमी के इस पखवाड़े का शुभारंभ 'जीवन मूल्य और आधुनिकता' विषय पर आयोजित संगोष्ठी से हुई जिसकी अध्यक्षता प्रो. कैसर शमीम ने की। उपाध्यक्ष मैत्रेयी पुष्पा की उपस्थिति में प्रो. जगदीश्वर चतुर्वेदी, प्रो. अनवर पाशा, डॉ. वैभव सिंह के वक्तव्यों ने चर्चा को विचारोत्तेजक बनाया।

14 सितंबर, 2017 को कॉपरनिकस मार्ग स्थित एल.टी. जी. सभागार में "हम हिन्दी क्यों पढ़ते हैं" विषय पर विशेष विमर्श का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम





का उद्घाटन श्री मनीष सिसोदिया, माननीय उपमुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार ने किया। प्रमुख वक्ता के रूप में हिंदी के वरिष्ठ आलोचक डॉ. मैनेजर पाण्डेय उपस्थिति अहम थी। इसमें शामिल हुए शिक्षकों को प्रमाण-पत्र एवं 500/- रुपये

आने-जाने का मार्ग-व्यय भी दिया गया। कार्यक्रम की समाप्ति पर अकादमी के सचिव डॉ.जीतराम भट्ट ने अतिथियों तथा समस्त श्रोताओं का धन्यवाद किया।

‘हिंदी भाषा का वैश्विक स्तर’ विषय पर संगोष्ठी 15 सितम्बर को आयोजित की गई। गाँव, शहर, प्रदेश, देश और विदेशों में हिंदी भाषा के प्रभाव पर विस्तार से चर्चा हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता सुधीश पचौरी ने की और डॉ. राजेन्द्र कुमार मिश्र, प्रो. दिनेशचंद्र चमोला आदि ने विषय पर विचार रखे।

16 सितम्बर को हिंदी और संस्कृत अकादमी के संयुक्त तत्वाधान में ‘अंतर-अकादमीय’ भाषण, गायन और स्वरचित



कविता प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। अकादमी के कर्मचारियों ने अपने भाषण, गायन और स्वरचित कविताओं को प्रस्तुत किया। उन्हें पुरस्कृत और सम्मानित किया गया।

18 सितम्बर किरोड़ीमल कॉलेज में राष्ट्रीय युवा कवि-सम्मेलन किया गया।

19 सितम्बर को भी कविता पर केंद्रित कार्यक्रम हुए। प्रथम सत्र के कवियों के रूप में डॉ. बी. कमला देवी, सुखविन्दर अमृत, मानसी केलकर, डॉ. उर्वी, पवन करण, डॉ.विश्व दीपक बमोला ‘दीपक’ ने काव्य पाठ किया। द्वितीय सत्र में रमेश, शशि भूषण, लतीश मोहन, मोहन हिमथानी, चन्द्रमणि ब्रह्मदत्त, शोभा सचान ने अपनी-अपनी कविताओं का पाठ किया।

20 सितम्बर को प्रथम सत्र में भाग लेने वाले कवियों में अनुभव तुलसी, प्रो० महताब हैदर नकवी, आदित्य भूषण





मिश्र, कल्पना झा, लीना मल्होत्रा ने अपनी-अपनी कविताओं का पाठ किया। द्वितीय सत्र में ज्योति पेरुमल, डॉ. बरजिन्दर चौहान, डॉ. भागीरथी नंद, अनिल सारस्वत एवं निशांत ने अपनी-अपनी कविताओं का पाठ किया। कार्यक्रम के चारों सत्रों का संचालन अकादमी के सचिव डॉ.जीतराम भट्ट द्वारा किया गया। आयोजन में हिन्दी के अतिरिक्त सभी भाषाओं के कवियों ने अपनी भाषा में कविताएं पढ़ीं, साथ ही उनका हिन्दी अनुवाद भी प्रस्तुत किया।

अकादमी द्वारा हिन्दी पखवाड़ा के अंतर्गत गांधी शांति प्रतिष्ठान सभागार में 21 सितम्बर को जनसामान्य के लिए चित्र आधारित कविता रचना प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। आम लोगों ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया और चित्र देखकर कविताएँ लिखीं।

‘हिन्दी भाषा के विकास में हिन्दी फिल्मों का योगदान’ विषय



पर 22 सितम्बर को संगोष्ठी आयोजित की गई। 23 सितम्बर को हिन्दी अकादमी द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका इन्द्रप्रस्थ भारती पर चर्चा हुई। विषय था ‘हिन्दी के प्रसार में इन्द्रप्रस्थ भारती का योगदान’। इसमें सुशील सिद्धार्थ, श्री विवेक मिश्र, डॉ. सुधा सिंह, नवीन कुमार आदि वक्ताओं ने अपने विचार रखे।

‘हिन्दी भाषा और रोजगार की स्थिति, समस्याएँ और समाधान’ पर आयोजित संगोष्ठी को विनोद अग्निहोत्री, पंकज पचौरी, नीलाभ श्रीवास्तव, और प्रो. अनिल राय ने संबोधित किया।

अकादमी की उपाध्यक्ष मैत्रेयी पुष्पा ने ‘हिन्दी पखवाड़े’ को दिल्ली के साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्य को समृद्ध करने की दिशा में महत्वपूर्ण आयोजन बताया। उन्होंने कहा कि हिन्दी अकादमी भविष्य में तमाम ऐसे आयोजन करेगी जिससे भाषा और साहित्य के प्रश्नों से आम जनो को जोड़ा जा सके। ■







दीपावली, गुरु पर्व और छठ पूजा के उपलक्ष्य में  
30 अक्टूबर को दिल्ली विधानसभा में मंगल मिलन समारोह की झलकियां







# 15 ਹਜ਼ਾਰ ਗੈਸਟ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਪੱਕਾ ਕਰਨ ਦਾ ਬਿਲ ਵਿਧਾਨਸਭਾ ਵਿਚ ਪਾਸ

**ਅਫਸਰਸ਼ਾਹੀ ਨਾਲ ਨਹੀਂ, ਲੋਕਸ਼ਾਹੀ ਨਾਲ ਚਲੇਗਾ ਦੇਸ਼ - ਕੇਜਰੀਵਾਲ**

**ਦਿੱ**

ਲੀ ਦੇ 15 ਹਜ਼ਾਰ ਗੈਸਟ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਇਕ ਵੱਡਾ ਤੋਹਫਾ ਦਿੰਦੇ ਹੋਏ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਪੱਕਾ ਕਰਨ ਦਾ ਬਿਲ ਵਿਧਾਨਸਭਾ ਵਿਚ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਜਿਸ ਨੂੰ ਅਵਾਜ਼ ਦੀ ਵੋਟ ਨਾਲ ਪਾਸ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ। 4 ਅਕਤੂਬਰ ਨੂੰ ਬੁਲਾਏ ਗਏ ਇਕ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਸੈਸ਼ਨ ਵਿਚ ਵਿਧਾਨਸਭਾ ਵਿਚ ਚਾਰ ਘੰਟੇ ਤਕ ਇਸ ਮਸਲੇ ਤੇ ਡੂੰਘੀ ਚਰਚਾ ਹੋਈ ਜਿਸ ਵਿਚ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਇਸ ਕਦਮ ਨੂੰ ਕ੍ਰਾਂਤੀਕਾਰੀ ਦਸਿਆ ਗਿਆ। ਇਸ ਬਿਲ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਉਠੇ ਸਾਰੇ ਇਤਰਾਜ਼ਾਂ ਨੂੰ ਦਰਕਿਨਾਰ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਦੇਸ਼ ਅਫਸਰਸ਼ਾਹੀ ਨਹੀਂ, ਲੋਕਸ਼ਾਹੀ ਨਾਲ ਚਲਦਾ ਹੈ। ਦਿੱਲੀ ਦੀ ਜਨਤਾ ਨੇ ਦਿੱਲੀ ਦੀਆਂ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ ਨੂੰ ਹਲ ਕਰਨ ਦੇ ਲਈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਚੁਣਿਆ ਹੈ। ਕਿਸੇ ਵੀ ਤਕਨੀਕੀ ਅਧਾਰਾਂ ਤੇ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਜਨਹਿਤ ਦੇ ਲਈ ਕਦਮ ਚੁਕਣ ਤੋਂ ਰੋਕਿਆ ਨਹੀਂ ਜਾ ਸਕਦਾ। ਗੈਸਟ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਪੱਕਾ ਕਰਨ ਦਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਪੂਰਾ ਅਧਿਕਾਰ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਜਿਵੇਂ ਕਸ਼ਮੀਰੀ ਮਾਈਗ੍ਰੇਂਟ ਕਰਮਚਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਪੱਕੇ ਕੀਤਾ ਗਿਆ, ਵੈਸੇ ਹੀ ਗੈਸਟ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਪੱਕਾ ਕੀਤਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਉਪ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਆ ਨੇ ਗੈਸਟ ਅਧਿਆਪਕ ਤੇ ਸਰਵ ਸਿਖਿਆ ਅਭਿਆਨ ਦੇ ਤਹਿਤ ਕੰਮ ਕਰਦੇ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਦੀਆਂ ਸੇਵਾਵਾਂ ਦਾ ਨਿਯਮ ਬਿਲ-2017 ਸਦਨ ਵਿਚ ਪੇਸ਼ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਦਿੱਲੀ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਵਸਥਾ ਨੂੰ ਬੇਹਤਰ ਬਣਾਉਣ ਵਿਚ ਗੈਸਟ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਦੀ ਭੂਮਿਕਾ ਨੂੰ ਸ਼ਲਾਘਾਯੋਗ ਦੱਸਿਆ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸਰਕਾਰ ਸ਼ੁਰੂ ਤੋਂ ਹੀ ਗੈਸਟ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਰੈਗੂਲਰ ਕਰਨ ਦੇ ਪੱਖ ਵਿਚ ਰਹੀ ਹੈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ

ਕਿਹਾ ਕਿ ਅਧਿਆਪਕ ਮੁਕਤ ਮਨ ਦੇ ਨਾਲ ਆਪਣੀ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰੀ ਨਿਭਾ ਸਕਣ, ਇਸ ਦੇ ਲਈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਨਿਸ਼ਚਿਤ ਮਾਹੌਲ ਦੇਣਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ। ਸਰਕਾਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਤਨਖਾਹ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਵਧਾ ਚੁਕੀ ਹੈ। ਲੇਕਿਨ ਜ਼ਰੂਰਤ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਪੱਕੇ ਕਰਨ ਦੀ ਹੈ।

ਸ੍ਰੀ ਸਿਸੋਦਿਆ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਕੈਬਿਨੇਟ ਤੋਂ ਪਾਸ ਇਹ ਪ੍ਰਸਤਾਵ ਜਦ ਵਿਧਾਨਸਭਾ ਤੋਂ ਪਾਸ ਹੋ ਕੇ ਕਾਨੂੰਨ ਦੀ ਸ਼ਕਲ ਲੈ ਲਵੇਗਾ ਤਾਂ 15 ਹਜ਼ਾਰ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਦੀ ਨੌਕਰੀ ਪੱਕੀ ਹੋ ਜਾਏਗੀ। ਯਾਨੀ 15 ਹਜ਼ਾਰ ਪਰਿਵਾਰਾਂ ਤੇ ਇਸ ਦੇ ਬੇਹਦ ਸੁਖਾਵਾਂ ਅਸਰ ਪਏਗਾ। ਹਰੇਕ ਸਾਲ ਸੈਸ਼ਨ ਸਮਾਪਤ ਹੋਣ ਤੇ ਭਵਿੱਖ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਅਸਥਾਈ ਅਧਿਆਪਕ ਚਿੰਤਾ ਵਿਚ ਪੈ ਜਾਂਦੇ ਸਨ। ਬਿਲ ਪਾਸ ਹੋਣ ਨਾਲ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਚਿੰਤਾ ਖਤਮ ਹੋ ਜਾਏਗੀ।

ਸ੍ਰੀ ਸਿਸੋਦਿਆ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਬਿੱਲ ਦੇ ਸਬੰਧ ਵਿਚ ਜਤਾਏ ਗਏ ਇਤਰਾਜ਼ਾਂ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਡੂੰਘੀ ਚਰਚਾ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਕੈਬਿਨੇਟ ਨੇ ਮੰਨਿਆ ਕਿ ਅਧਿਆਪਕ ਦੇ ਬਿਨਾ ਸਿੱਖਿਆ ਦੀ ਕਲਪਨਾ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ। ਇਹ ਮਸਲਾ ਸੇਵਾਵਾਂ ਨਾਲ ਨਹੀਂ ਜੁੜਿਆ ਹੈ। ਕੁਝ ਮਹੀਨੇ ਪਹਿਲਾਂ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ 150 ਕਸ਼ਮੀਰੀ ਮਾਈਗ੍ਰੇਂਟ ਨੂੰ ਪੱਕਾ ਕੀਤਾ ਸੀ। ਉਸੇ ਆਧਾਰ ਤੇ ਸਰਕਾਰ ਇਨ੍ਹਾਂ ਗੈਸਟ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਪੱਕੇ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ। ਵਿਧਾਨਸਭਾ ਨੇ ਇਸ ਬਿਲ ਨੂੰ ਅਵਾਜ਼ ਦੀ ਵੋਟ ਨਾਲ ਪਾਸ ਕਰ ਦਿਤਾ। ਰਾਜਪਾਲ ਦੀ ਮੰਜੂਰੀ ਮਿਲਣ ਦੇ ਬਾਅਦ ਇਹ ਕਾਨੂੰਨ ਦੀ ਸ਼ਕਲ ਲੈ ਲਵੇਗਾ। ਗੈਸਟ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੇ ਇਸ ਤੇ ਖੁਸ਼ੀ ਜਤਾਉਂਦੇ ਹੋਏ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਧਨਵਾਦ ਕੀਤਾ।





# ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਨੂੰ ਮਿਲੇ 5695 ਨਵੇਂ ਕਲਾਸਰੂਮ

**ਦਿੱ**ਲੀ ਦੀ ਸਿਖਿਆ-ਵਿਵਸਥਾ ਵਿਚ ਬਦਲਾਅ ਦੀਆਂ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ਾਂ ਨੇ ਇਕ ਵੱਡਾ ਪੜਾਅ ਹਾਸਲ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਅਧਿਆਪਕ-ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਅਨੁਪਾਤ ਸੁਧਾਰਨ ਦੇ ਲਿਹਾਜ਼ ਨਾਲ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਕਮਰਿਆਂ ਦੀ ਕਮੀ ਨੂੰ ਨਿਸ਼ਾਨਦੇਹ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਸੀ ਜਿਸ ਦੇ ਬਾਅਦ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਯੁੱਧ ਪੱਧਰ ਤੇ ਕਮਰੇ ਬਨਾਉਣ ਦਾ ਕੰਮ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰਵਾਇਆ ਸੀ। ਆਖਰਕਾਰ ਕਰੀਬ ਸੌ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ 5695 ਕਮਰੇ ਬਣ ਕੇ ਤਿਆਰ ਹੋਏ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਦੀਵਾਲੀ ਦੇ ਤੋਹਫੇ ਦੇ ਤੌਰ ਤੇ ਦਿੱਲੀ ਵਾਸੀਆਂ ਨੂੰ ਸਮਰਪਿਤ ਕੀਤਾ।

ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਇਸ ਨੂੰ ਸਾਨਦਾਰ ਉਪਲਬਧੀ ਦੱਸਿਆ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਟਵੀਟ ਕੀਤਾ ਕਿ ਰਾਜਧਾਨੀ ਵਿਚ ਸਿਖਿਆ

ਦੇ ਬੁਨਿਆਦੀ ਢਾਂਚੇ ਦਾ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਵਿਸਥਾਰ ਹੈ। ਉਹ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਐਸਾ ਸਮਾਂ ਆਏ ਜਦ ਚੋਣਾਂ ਜਾਤੀ ਅਤੇ ਧਰਮ ਦੇ ਬਜਾਏ ਸਿਖਿਆ ਅਤੇ ਸਿਹਤ ਦੇ ਏਜੰਡੇ ਤੇ ਲੜੀਆਂ ਜਾਣ।

ਦਿੱਲੀ ਦੀ ਸਿਖਿਆ ਵਿਵਸਥਾ ਦੀ ਕਮਾਨ ਸੰਭਾਲ ਰਹੇ ਉਪ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਆ ਨੇ ਮੰਡਾਵਲੀ ਸਥਿਤ ਸਰਵੋਦਯ ਕੰਨਿਆ ਸਕੂਲ ਵਿਚ ਆਯੋਜਿਤ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਵਿਚ ਨਵੇਂ ਬਣੇ ਕਮਰਿਆਂ ਦਾ ਉਦਘਾਟਨ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਮੌਕੇ ਸ੍ਰੀ ਸਿਸੋਦਿਆ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਹਰ ਬੱਚੇ ਦੇ ਲਈ ਚੰਗੀ ਸਿਖਿਆ ਅਤੇ ਬੇਹਤਰੀਨ ਸਿਖਿਆ ਸੁਵਿਧਾਵਾਂ ਦੇਣਾ ਸਾਡੀ ਸਰਕਾਰ ਦੀ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰੀ ਹੈ। ਸਾਡੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਹੈ ਕਿ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਪੜ੍ਹਨ





ਵਾਲਾ ਹਰ ਬੱਚਾ ਆਪਣੇ ਸਕੂਲ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਫ਼ਖਰ ਮਹਿਸੂਸ ਕਰ ਸਕੇ। ਸਾਡਾ ਮਕਸਦ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਹਰ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲ ਨੂੰ ਵਿਸ਼ਵ ਪੱਧਰੀ ਬਨਾਉਣਾ ਹੈ, ਜਿਸ ਵਿਚ ਪੜ੍ਹਾਈ ਦੀ ਗੁਣਵਤਾ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਉਥੇ ਮਿਲਣ ਵਾਲੀਆਂ ਸੁਵਿਧਾਵਾਂ ਕਿਸੇ ਮਹਿੰਗੇ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸਕੂਲ ਤੋਂ ਵੀ ਚੰਗੀਆਂ ਹੋਣ। ਸਾਡਾ ਮੰਨਣਾ ਹੈ ਕਿ ਸਿਖਿਅਤ ਰਾਸ਼ਟਰ ਨਾਲ ਹੀ ਸਮਰਥ ਰਾਸ਼ਟਰ ਬਣਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।

ਸ੍ਰੀ ਸਿਸੌਦਿਯਾ ਨੇ ਇਸ ਮੌਕੇ ਤੇ ਬੱਚਿਆਂ ਅਤੇ ਸਰਪ੍ਰਸਤਾਂ ਤੋਂ ਸਕੂਲੀ ਸਿਖਿਆ ਵਿਚ ਆ ਰਹੇ ਬਦਲਾਵਾਂ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਚਰਚਾ ਕੀਤੀ। ਉਨਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸਰਕਾਰ ਨੇ 8000 ਕਮਰੇ ਬਨਾਉਣ ਦਾ ਟੀਚਾ ਰਖਿਆ ਸੀ ਅਤੇ ਹੁਣ

ਤਕ 5695 ਬਣਾ ਲਏ ਗਏ ਹਨ। ਬਾਕੀ ਕਮਰੇ ਬਨਾਉਣ ਦਾ ਕੰਮ ਤੇਜ਼ੀ ਨਾਲ ਚਲ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਅਜੇ ਇਕ ਕਲਾਸ ਵਿਚ ਕਿਤੇ-ਕਿਤੇ 80-80 ਤਕ ਬੱਚੇ ਨਜ਼ਰ ਆਉਂਦੇ ਹਨ, ਜਿਸ ਨਾਲ ਪੜ੍ਹਾਈ ਤੇ ਉਲਟਾ ਅਸਰ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਕਮਰੇ ਵਿਚ ਵਧ ਤੋਂ ਵਧ 40 ਬੱਚੇ ਹੋਣ ਤਾਂ ਅਧਿਆਪਕ ਤੇ ਵਾਧੂ ਬੋਝ ਨਹੀਂ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਅਤੇ ਬੱਚੇ ਵੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਤੇ ਧਿਆਨ ਲਗਾ ਪਾਉਂਦੇ ਹਨ।

ਸਿਖਿਆ ਦੀ ਗੁਣਵਤਾ ਸੁਧਾਰਨ ਦੇ ਲਈ ਅਧਿਆਪਕ-ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਅਨੁਪਾਤ



# SKV BURARI





ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਹਰ ਬੱਚੇ ਦੇ ਲਈ

ਚੰਗੀ ਸਿਖਿਆ ਅਤੇ

ਬੇਹਤਰੀਨ ਸਿਖਿਆ ਸੁਵਿਧਾਵਾਂ ਦੇਣਾ ਸਾਡੀ ਸਰਕਾਰ ਦੀ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰੀ ਹੈ। ਸਾਡੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਹੈ ਕਿ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਪੜ੍ਹਨ ਵਾਲਾ ਹਰ ਬੱਚਾ ਆਪਣੇ ਸਕੂਲ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਫ਼ਖਰ ਮਹਿਸੂਸ ਕਰ ਸਕੇ। ਸਾਡਾ ਮਕਸਦ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਹਰ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲ ਨੂੰ ਵਿਸ਼ਵ ਪੱਧਰੀ ਬਨਾਉਣਾ ਹੈ, ਜਿਸ ਵਿਚ ਪੜ੍ਹਾਈ ਦੀ ਗੁਣਵਤਾ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਉਥੇ ਮਿਲਣ ਵਾਲੀਆਂ ਸੁਵਿਧਾਵਾਂ ਕਿਸੇ ਮਹਿੰਗੇ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸਕੂਲ ਤੋਂ ਵੀ ਚੰਗੀਆਂ ਹੋਣ। ਸਾਡਾ ਮੰਨਣਾ ਹੈ ਕਿ ਸਿਖਿਅਤ ਰਾਸ਼ਟਰ ਨਾਲ ਹੀ ਸਮਰਥ ਰਾਸ਼ਟਰ ਬਣਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।



ਦਾ ਦਰੁਸਤ ਰਹਿਣਾ ਬੇਹਦ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇਹ ਵੀ ਕਿਹਾ ਕਿ ਨਵੇਂ ਕਮਰਿਆਂ ਨੂੰ ਇਸ ਅੰਦਾਜ਼ ਵਿਚ ਬਣਾਇਆ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਰਚਨਾਤਮਕ ਹੋਣ ਦੇ ਲਈ ਪ੍ਰੇਰਿਤ ਕਰਨ। ਰੰਗ-ਰੋਗਨ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਰੋਸ਼ਨੀ ਦੇ ਇੰਤਜ਼ਾਮ ਦਾ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਧਿਆਨ ਰਖਿਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਸ੍ਰੀ ਸਿਸੋਦਿਆ ਨੇ ਇਸ ਮੌਕੇ ਤੇ ਕਮਰਿਆਂ ਦੇ ਨਿਰਮਾਣ ਵਿਚ ਅਹਿਮ ਭੂਮਿਕਾ ਨਿਭਾਉਣ ਵਾਲੇ ਅਫ਼ਸਰਾਂ, ਕਰਮਚਾਰੀਆਂ ਅਤੇ ਇੰਜੀਨੀਅਰਾਂ ਨੂੰ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਰੂਪ ਨਾਲ ਧੰਨਵਾਦ ਦਿਤਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਸਟੇਜ ਤੇ ਵੀ ਬੁਲਾਇਆ ਗਿਆ ਅਤੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੇ ਤਾੜੀਆਂ ਵਜਾ ਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਸਵਾਗਤ ਕੀਤਾ। ■





# ਦਵਾਈਆਂ ਦੀ ਮਾਤਰਾ ਜਾਨਣ ਲਈ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕੀਤਾ ਹਸਪਤਾਲਾਂ ਦਾ ਅਚਾਨਕ ਨਿਰੀਖਣ

**ਦਿੱਲੀ** ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਹਸਪਤਾਲਾਂ ਵਿਚ ਜਾਂਚ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਦਵਾਈ ਅਤੇ ਆਪਰੇਸ਼ਨ ਤਕ ਮੁਫ਼ਤ ਕੀਤਾ ਜਾ ਚੁਕਾ ਹੈ। ਸਰਕਾਰ ਦਾ ਮੰਨਣਾ ਹੈ ਕਿ ਮਰੀਜ਼ਾਂ ਦੀ ਸਿਹਤ ਦੀ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰੀ ਸਰਕਾਰ ਦੀ ਹੈ। ਨਿਜੀ ਹਸਪਤਾਲਾਂ ਦੇ ਬੋਲਬਾਲੇ ਦੇ ਤੌਰ ਵਿਚ ਇਸ ਨੂੰ ਇਕ ਮਹਤਵਪੂਰਨ ਕਦਮ ਮੰਨਿਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ।

ਲੇਕਿਨ ਸਰਕਾਰ ਦੀ ਇਸ ਅਹਿਮ ਯੋਜਨਾ ਦਾ ਅਸਰ ਜ਼ਮੀਨ ਤੇ ਕਿੰਨਾ ਹੈ, ਇਹ ਜਾਨਣ ਦੇ ਲਈ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਖੁਦ ਅਚਾਨਕ ਨਿਰੀਖਣ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਕ੍ਰਮ ਵਿਚ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ 3 ਅਕਤੂਬਰ ਨੂੰ ਲੋਕਨਾਇਕ ਜੈਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਨਰਾਇਣ ਅਤੇ ਗੋਵਿੰਦ ਵਲਭ ਪੰਤ ਹਸਪਤਾਲ ਦਾ ਨਿਰੀਖਣ ਕੀਤਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਿਹਤ ਮੰਤਰੀ ਸਤੋਂਦਰ ਜੈਨ ਅਤੇ ਵਿਭਾਗ ਦੇ ਸੀਨੀਅਰ ਅਧਿਕਾਰੀ ਵੀ ਮੌਜੂਦ ਸਨ।

ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਜ਼ਮੀਨੀ ਸਚਾਈ ਨੂੰ ਪਰਖਨਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਸਨ, ਇਸ ਲਈ ਸਿੱਧੇ ਦੋਵੇਂ ਹਸਪਤਾਲਾਂ ਵਿਚ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਵਾਈ ਦੇ ਲਈ ਲਾਈਨ ਵਿਚ ਖੜੇ ਮਰੀਜ਼ਾਂ ਨਾਲ ਗੱਲ ਕੀਤੀ। ਮਰੀਜ਼ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਵਾਲੇ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੂੰ ਇਸ ਪੋਜ਼ੀਸ਼ਨ ਵਿਚ ਦੇਖ ਕੇ ਹੈਰਾਨ ਰਹਿ ਗਏ। ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਸਿੱਧੇ ਪੁਛਿਆ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਦਵਾਈਆਂ ਦੇ ਕਾਊਂਟਰ ਤੋਂ ਉਹ ਸਾਰੀਆਂ ਦਵਾਈਆਂ ਮਿਲ ਰਹੀਆਂ ਹਨ ਕਿ

ਨਹੀਂ ਜੋ ਡਾਕਟਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਲਈ ਲਿਖਦੇ ਹਨ। ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੂੰ ਜੀ.ਬੀ. ਪੰਤ ਹਸਪਤਾਲ ਵਿਚੋਂ ਜਾਣਕਾਰੀ ਮਿਲੀ ਕਿ ਕੁਝ ਦਵਾਈਆਂ ਉਪਲਬਧ ਨਹੀਂ ਹਨ। ਇਸ ਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਖੁਦ ਉਪਲਬਧ ਦਵਾਈਆਂ ਦੇ ਰਿਕਾਰਡ ਦੀ ਜਾਂਚ ਕੀਤੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਕੁਝ ਦਵਾਈਆਂ ਦੀ ਕਮੀ ਅਤੇ ਸਟਾਕ ਨਾ ਹੋਣ ਦੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਹੋਈ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਉਚ ਅਧਿਕਾਰੀਆਂ ਤੋਂ ਜਵਾਬ ਤਲਬ ਕੀਤਾ ਅਤੇ ਕਮੀ ਨੂੰ ਜਲਦ ਤੋਂ ਜਲਦ ਪੂਰਾ ਕਰਨ ਦੇ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਦਿਤੇ। ਐਲਾਈਨਜ਼ੇਪੀ ਹਸਪਤਾਲ ਵਿਚ ਅਚਾਨਕ ਨਿਰੀਖਣ ਕਰਨ ਪਹੁੰਚੇ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਮਰੀਜ਼ਾਂ ਨੇ ਸੰਤੋਸ਼ ਜਤਾਇਆ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਦਸਿਆ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਹਰ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਦਵਾਈਆਂ ਜ਼ਰੂਰੀ ਮਾਤਰਾ ਵਿਚ ਮੁਹੱਈਆ ਹੋ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਦੋਵੇਂ ਹਸਪਤਾਲਾਂ ਦੇ ਮੈਡੀਕਲ ਸੁਪਰੰਟੈਂਡੈਂਟ/ਡਾਇਰੈਕਟਰਾਂ ਨੂੰ ਇਹ ਯਕੀਨੀ ਕਰਨ ਦਾ ਆਦੇਸ਼ ਦਿਤਾ ਕਿ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਸੰਭਵ ਹੋ ਸਕੇ, ਦਵਾਈ ਕਾਊਂਟਰਾਂ ਤੇ ਜ਼ਿਆਦਾ ਸਮੇਂ ਤਕ ਮਰੀਜ਼ਾਂ ਨੂੰ ਇੰਤਜ਼ਾਰ ਨਾ ਕਰਨਾ ਪਏ। ਦਵਾਈ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਦੇ ਸਮੇਂ ਨੂੰ ਘਟਾ ਕੇ ਘਟ ਤੋਂ ਘਟ ਕੀਤਾ ਜਾਏ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇਹ ਵੀ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਦਿਤਾ ਕਿ ਰਜਿਸਟਰੇਸ਼ਨ ਕਾਊਂਟਰਾਂ ਤੇ ਘਟ ਤੋਂ ਘਟ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਮਰੀਜ਼ਾਂ ਨੂੰ ਰਜਿਸਟਰਡ ਕੀਤਾ ਜਾਏ ਤਾਂ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਜਲਦ ਤੋਂ ਜਲਦ ਡਾਕਟਰੀ ਸੁਵਿਧਾਵਾਂ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋ ਸਕਣ।





# ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਹੋਏ ਬਦਲਾਅ ਨੇ ਬਦਲ ਦਿੱਤੀ ਭਾਰਤ ਦੀ ਬਿਜਨੇਸ ਰੈਂਕਿੰਗ

**ਭਾ**ਰਤ ਵਿਚ ਵਪਾਰ ਕਰਨਾ ਅਸਾਨ ਹੋਇਆ। ਵਿਸ਼ਵ ਬੈਂਕ ਦੀ ਤਾਜ਼ਾ ਬਿਜਨੇਸ ਰੀਪੋਰਟ ਵਿਚ ਭਾਰਤ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਵਿਚ ਕਾਫੀ ਸੁਧਾਰ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਵਿਸ਼ਵ ਬੈਂਕ ਪਿਛਲੇ ਕਈ ਸਾਲਾਂ ਤੋਂ ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ 190 ਦੇਸ਼ਾਂ ਦੀ ਇਸ ਮਿਲਮਿਲੇ ਵਿਚ ਰੈਂਕਿੰਗ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਪਿਛਲੇ ਸਾਲ ਭਾਰਤ ਦਾ ਸਥਾਨ 130 ਸੀ ਲੇਕਿਨ ਹੁਣ ਉਹ 100ਵੇਂ ਨੰਬਰ ਤੇ ਆ ਗਿਆ ਹੈ।

ਖਾਸ ਗਲ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਵਿਸ਼ਵ ਬੈਂਕ ਦੀ ਇਸ 'ਈਜ਼ ਆਫ ਡੂਇੰਗ ਬਿਜਨੇਸ ਲਿਸਟ' ਵਿਚ ਭਾਰਤ ਦੀ ਰੈਂਕਿੰਗ ਵਿਚ ਹੋਏ ਸੁਧਾਰ ਵਿਚ ਦਿੱਲੀ ਦਾ ਅਹਿਮ ਯੋਗਦਾਨ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਐਸੇ ਸਾਰੇ ਕਦਮ ਚੁਕੇ ਜਿਸ ਨੇ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਛਵੀ ਬਦਲੀ। ਉਪਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਤੇ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਵਿਤ ਮੰਤਰੀ ਦਾ ਓਹਦਾ ਸੰਭਾਲ ਰਹੇ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਆ ਨੇ ਇਸ ਨੂੰ ਵੱਡੀ ਉਪਲਬਧੀ ਦਸਿਆ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਹ ਵੱਡੇ ਫ਼ਖਰ ਦੀ ਗਲ ਹੈ ਕਿ ਵਿਸ਼ਵ ਬੈਂਕ ਦੀ ਰੈਂਕਿੰਗ ਵਿਚ ਭਾਰਤ ਟਾਪ 100 ਵਿਚ ਪਹੁੰਚ ਗਿਆ ਹੈ।

ਸ੍ਰੀ ਸਿਸੋਦਿਆ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਪਿਛਲੇ ਦੋ-ਤਿੰਨ ਸਾਲਾਂ ਵਿਚ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਜੋ ਵੱਡੇ ਫੈਸਲੇ ਲਏ ਹਨ, ਉਸ ਦੀ ਵਜ੍ਹਾ ਨਾਲ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਬਿਜਨੇਸ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰਨਾ ਬਹੁਤ ਅਸਾਨ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ। ਇੰਸਪੈਕਟਰ ਰਾਜ ਨੂੰ ਖਤਮ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਬਿਜਨੇਸ ਦੇ ਮਾਮਲੇ ਵਿਚ ਦੇਸ਼ ਦਾ ਨਾਮ ਰੋਸ਼ਨ ਹੋਇਆ ਹੈ, ਉਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੈਲਥ, ਐਂਜੂਕੇਸ਼ਨ ਵਿਚ ਵੀ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਆਏ ਬਦਲਾਅ ਨਾਲ ਵੀ ਦੇਸ਼ ਦਾ ਮਾਨ ਵਧੇਗਾ। ਸ੍ਰੀ ਸਿਸੋਦਿਆ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ

ਇੰਡਸਟਰੀ ਲਾਈਸੈਂਸ ਲੈਣ ਦੀ ਪ੍ਰਕ੍ਰਿਆ ਨੂੰ ਅਸਾਨ ਕਰ ਦਿਤਾ ਹੈ। ਹੁਣ ਇਕ ਦਿਨ ਵਿਚ ਆਨਲਾਈਨ ਲਾਈਸੈਂਸ ਮਿਲ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਜਦ ਕਿ ਪਹਿਲਾਂ ਲਾਈਸੈਂਸ ਦੇ ਲਈ ਮਹੀਨੇ ਲਗ ਜਾਂਦੇ ਸਨ। ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਵੈਟ ਵਿਭਾਗ ਵਿਚ ਇੰਸਪੈਕਟਰ ਰਾਜ ਨੂੰ ਖਤਮ ਕੀਤਾ ਅਤੇ ਹੁਣ ਆਨਲਾਈਨ ਅਪਲਾਈ ਕਰਨ ਦੇ ਤੁਰੰਤ ਟਿਨ ਨੰਬਰ ਮਿਲ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਪਹਿਲਾਂ ਇੰਸਪੈਕਟਰ ਜਾਂਦਾ ਸੀ ਅਤੇ ਰੀਪੋਰਟ ਦਿੰਦਾ ਸੀ। ਇਸ ਦੇ ਬਾਅਦ ਹੀ ਟਿਨ ਨੰਬਰ ਜਾਰੀ ਹੁੰਦਾ ਸੀ।

ਉਪਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਵਿਸ਼ਵ ਬੈਂਕ ਦੀ ਰੀਪੋਰਟ ਵਿਚ ਵੀ ਜ਼ਿਕਰ ਹੈ ਕਿ ਹੁਣ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਬਿਜਲੀ ਕਨੈਕਸ਼ਨ 138 ਦਿਨ ਦੇ ਬਜਾਏ ਵਧ ਤੋਂ ਵਧ 45 ਦਿਨ ਵਿਚ ਮਿਲ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਕਿਸੇ ਵੀ ਈਵੈਂਟ ਮੈਨੇਜਮੈਂਟ ਦੇ ਲਈ ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਕਿਸੇ ਵੀ ਹਿੱਸੇ ਤੋਂ ਆਨਲਾਈਨ ਅਪਲਾਈ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਆਨਲਾਈਨ ਸਿੰਗਲ ਵਿੰਡੋ ਸਿਸਟਮ ਲਾਗੂ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਜੀਐਸਟੀ ਵਿਚ ਵਪਾਰੀਆਂ ਦੀਆਂ ਦਿਕਤਾਂ ਨੂੰ ਦੂਰ ਕਰਨ ਦੇ ਲਈ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਹਰ ਸੰਭਵ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ। ਜ਼ਿਕਰ ਯੋਗ ਹੈ ਕਿ ਰੈਂਕਿੰਗ ਤਿਆਰ ਕਰਨ ਵਿਚ ਸਿਰਫ ਦਿੱਲੀ ਅਤੇ ਮੁੰਬਈ ਵਿਚ ਕਾਰੋਬਾਰੀਆਂ ਦੇ ਵਿਚ ਸਰਵੇ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਯਾਨੀ ਬਦਲਾਅ ਵਿਚ ਦਿੱਲੀ ਯੋਗਦਾਨ ਕਾਫੀ ਅਹਿਮ ਹੈ। ਮੁੰਬਈ ਨੂੰ ਤਾਂ ਪਹਿਲਾਂ ਤੋਂ ਹੀ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਵਾਣਿਜ਼ਕ ਰਾਜਧਾਨੀ ਦਾ ਦਰਜਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੈ। ਵਿਸ਼ਵ ਬੈਂਕ ਦਾ ਕਹਿਣਾ ਹੈ ਕਿ ਮੁੰਬਈ ਅਤੇ ਦਿੱਲੀ ਭਾਰਤ ਦੇ ਕਾਰੋਬਾਰੀ ਮਾਹੌਲ ਦੀ ਨੁਮਾਇੰਦਗੀ ਕਰਦੇ ਹਨ, ਲਿਹਾਜ਼ਾ ਉਥੋਂ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਨਾਲ ਪੂਰੇ ਦੇਸ਼ ਦਾ ਅੰਕਲਨ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।







# ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਕੂਲਾਂ ਦੀ ਹੋਵੇਗੀ ਰੈਂਕਿੰਗ

**ਦਿੱ**ਲੀ ਦੀ ਸਿਖਿਆ ਵਿਵਸਥਾ ਵਿਚ ਆਏ ਕ੍ਰਾਂਤੀਕਾਰੀ ਬਦਲਾਵਾਂ ਦੀ ਚਰਚਾ ਪੂਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਵਿਚ ਹੈ। ਐਸੇ ਵਕਤ ਵਿਚ ਜਦ ਨਿਜੀ ਸਕੂਲਾਂ ਨੂੰ ਹੀ ਚੰਗੀ ਸਿਖਿਆ ਦਾ ਮਾਨਕ ਮੰਨ ਲਿਆ ਗਿਆ ਸੀ, ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਨੇ ਨਵੀਂ ਚਮਕ ਪੈਦਾ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਇਸ ਦੇ ਲਈ ਸਕੂਲਾਂ ਦਾ ਰੰਗ-ਰੂਪ ਹੀ ਨਹੀਂ ਬਦਲਿਆ ਗਿਆ, ਸਿਖਿਆ ਅਤੇ ਪ੍ਰੀਖਿਆ ਦੇ ਪ੍ਰਤੀ ਨਵੀਂ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਵੀ ਪੈਦਾ ਕੀਤੀ ਗਈ। ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਦਾ ਮਕਸਦ ਹੈ ਕਿ ਨਿਜੀ ਅਤੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਸਵਾਸਥ ਪ੍ਰਤੀਯੋਗਿਤਾ ਹੋਵੇ, ਅਤੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਬੱਚਿਆਂ ਵਿਚ ਕਿਸੇ ਅਭਾਵ ਦੀ ਕੁੰਠਾ ਨਾ ਹੋਵੇ।

ਲੇਕਿਨ ਸਰਪ੍ਰਸਤਾਂ ਨੂੰ ਇਹ ਪਤਾ ਕਿਵੇਂ ਚਲੇ ਕਿ ਕਿਸ ਸਕੂਲ ਦੀ ਕੀ ਸਥਿਤੀ ਹੈ। ਇਸ ਨੂੰ ਧਿਆਨ ਵਿਚ ਰਖਦੇ ਹੋਏ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਐਸੀ ਯੋਜਨਾ ਤਿਆਰ ਕੀਤੀ ਹੈ ਜਿਸ ਨਾਲ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਰਪ੍ਰਸਤਾਂ ਨੂੰ ਹਰ ਸਰਕਾਰੀ ਅਤੇ ਨਿਜੀ ਸਕੂਲ ਦੇ ਵਿਦਿਅਕ ਪੱਧਰ ਅਤੇ ਬੁਨਿਆਦੀ ਸੁਵਿਧਾਵਾਂ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਅਸਾਨੀ ਨਾਲ ਜਾਣਕਾਰੀ ਮਿਲ ਸਕੇਗੀ। ਇਸ ਦੇ ਆਧਾਰ ਤੇ ਆਪਣੇ ਬੱਚੇ ਦੇ ਦਾਖਲੇ

ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਫੈਸਲਾ ਕਰ ਸਕਣਗੇ। ਸਰਕਾਰ ਅਗਲੇ ਸੈਸ਼ਨ ਤੋਂ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਹਰ ਨਿਜੀ ਅਤੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲ ਨੂੰ ਰੈਂਕਿੰਗ ਦੇਣ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ।

ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਦਿੱਲੀ ਕਮਿਸ਼ਨ ਫਾਰ ਪ੍ਰੋਟੈਕਸ਼ਨ ਆਫ ਚਾਈਲਡ ਰਾਈਟਸ ਐਕਟ' (ਡੀਸੀਪੀਸੀਆਰ) ਨੂੰ ਜ਼ਿੰਮੇਦਾਰੀ ਦਿਤੀ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਸੁਤੰਤਰ ਏਜੰਸੀਆਂ ਤੋਂ ਸਕੂਲਾਂ ਦੀ ਰੈਂਕਿੰਗ ਕਰਵਾਉਣ। ਦਿੱਲੀ ਸਟੇਟ ਐਜੂਕੇਸ਼ਨ ਅਡਵਾਇਜਰੀ ਕਾਊਂਸਿਲ ਦੇ ਇਸ ਫੈਸਲੇ ਦੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਦਿੰਦੇ ਹੋਏ ਉਪਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਆ ਨੇ ਦਸਿਆ ਕਿ ਅਜੇ ਸਕੂਲਾਂ ਦਾ ਕੋਈ 'ਪਰਫਾਰਮੈਂਸ ਆਡਿਟ' ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਅਤੇ ਐਸਾ ਕੋਈ ਅਧਿਕਾਰਿਕ ਦਸਤਾਵੇਜ਼ ਵੀ ਨਹੀਂ ਹੈ ਜਿਸ ਨਾਲ ਸਰਪ੍ਰਸਤਾਂ ਨੂੰ ਸਕੂਲ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਜ਼ਰੂਰੀ ਜਾਣਕਾਰੀਆਂ ਮਿਲ ਸਕਣ। ਕੇਵਲ ਬਿਲਡਿੰਗ ਦੇਖ ਕੇ ਸਕੂਲ ਦੀ ਸਿਖਿਆ ਦੀ ਗੁਣਵਤਾ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਲਗਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ। ਐਸੇ ਵਿਚ ਰੈਂਕਿੰਗ ਕਰਨਾ ਹੋਵੇਗਾ ਜਿਸ ਦੇ ਲਈ ਜ਼ਰੂਰੀ ਮਾਪਦੰਡ ਤੈਅ ਕੀਤੇ ਜਾਣਗੇ। ਪੜ੍ਹਾਈ ਦਾ ਪੱਧਰ ਕੀ ਹੈ, ਸਹੂਲਤਾਂ ਕਿਵੇਂ ਹਨ, ਰਖਰਖਾਅ ਕਿਵੇਂ ਹੈ, ਟੀਚਰਾਂ ਦਾ ਬੱਚਿਆਂ



ਦੇ ਨਾਲ ਰਵੱਈਆ ਕਿਹੋ ਜਿਹਾ ਹੈ, ਬੱਚਿਆਂ ਦੀ ਸੁਰੱਖਿਆ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਕੀ-ਕੀ ਇੰਤਜ਼ਾਮ ਕੀਤੇ ਗਏ ਹਨ-ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਸਾਰੇ ਮਾਪਦੰਡ ਦੇ ਆਧਾਰ ਤੇ ਸਕੂਲ ਦੀ ਰੈਂਕਿੰਗ ਤੈਅ ਹੋਵੇਗੀ ਅਤੇ ਆਫੀਸ਼ਲ ਡੇਟਾ ਤਿਆਰ ਹੋ ਸਕੇਗਾ।

ਉਪਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਦੇ ਮੁਤਾਬਕ ਸਰਕਾਰ ਐਸੇ ਬੱਚਿਆਂ ਦਾ ਸਕੂਲ ਵਿਚ ਦਾਖਲਾ ਕਰਵਾਏਗੀ ਜੋ ਸਕੂਲ ਨਹੀਂ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਪਹਿਚਾਨ ਦੇ ਲਈ ਮੁਹਿੰਮ ਚਲਾਈ ਜਾਏਗੀ। ਸਰਵੇ ਹੋਏ ਹਨ, ਲੇਕਿਨ ਸਕੂਲ ਨਾ ਜਾਣ ਵਾਲੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਵਿਸਤ੍ਰਿਤ ਡੇਟਾ ਨਹੀਂ ਮਿਲ ਪਾਇਆ ਹੈ। ਇਸ ਮੁਹਿੰਮ ਵਿਚ ਆਂਗਨਬਾੜੀ ਵਰਕਰਸ ਦੀ ਵੀ ਮਦਦ ਲਈ ਜਾਵੇਗੀ ਅਤੇ ਸਰਕਾਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਜ਼ਿਆਦਾ ਭੁਗਤਾਨ ਵੀ ਕਰੇਗੀ। ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਦੀ ਸਕੂਲ ਮੈਨੇਜਮੈਂਟ ਕਮੇਟੀ ਵਿਚ ਦੋ-ਦੋ ਸੈਸ਼ਲ ਵਰਕਰ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।

ਐਮਸੀਡੀ ਨੂੰ ਵੀ ਕਿਹਾ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਆਪਣੇ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਐਸਐਮਸੀ ਨੂੰ ਬੇ ਹਤਰ ਬਣਾਏ। ਇਕ ਅੰਦਾਜ਼ੇ ਦੇ ਮੁਤਾਬਕ, ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਅਤੇ ਐਮਸੀਡੀ ਦੇ ਸਕੂਲਾਂ ਦੀ ਐਸਐਮਸੀ ਵਿਚ ਵਿਚ ਕਰੀਬ

2600 ਸੈਸ਼ਲ ਵਰਕਰ ਹਨ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਐਜੂਕੇਸ਼ਨ ਬੀਟ ਅਫਸਰ ਦਾ ਦਰਜਾ ਦਿਤਾ ਜਾਵੇਗਾ। ਇਹ ਮੁਹੱਲੇ-ਮੁਹੱਲੇ ਜਾ ਕੇ ਪਤਾ ਕਰਨਗੇ ਕਿ ਕੌਣ ਬੱਚਾ ਸਕੂਲ ਨਹੀਂ ਜਾਂਦਾ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹਰ ਬੱਚੇ ਦੀ ਮੈਪਿੰਗ ਹੋਵੇਗੀ।

ਸ਼੍ਰੀ ਸਿਸੌਦਿਯਾ ਦੇ ਮੁਤਾਬਕ ਨਿਜੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਅਤੇ ਪ੍ਰਾਇਮਰੀ ਵਿੰਗ ਦੇ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਦੀ ਸਪੈਸ਼ਲ ਟ੍ਰੇਨਿੰਗ ਹੋਵੇਗੀ ਜਿਸ ਵਿਚ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਦਸਿਆ ਜਾਵੇਗਾ ਕਿ ਇਕਨੌਮਿਕਲੀ ਵੀਕਰ ਸੈਕਸ਼ਨ (ਈਡਬਲਯੂਐਸ) ਸ਼੍ਰੇਣੀ ਵਿਚ ਦਾਖਲਾ ਲੈਣ ਵਾਲੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨਾਲ ਕਿਵੇਂ ਪੇਸ਼ ਆਇਆ ਜਾਏ ਤਾਂ ਕਿ ਨਵੇਂ ਵਾਤਾਵਰਨ ਵਿਚ ਉਹ ਸਹਿਜ ਹੋ ਸਕਣ। ਸਿਸੌਦਿਯਾ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਪਿਛਲੇ ਦੋ ਸਾਲ ਵਿਚ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਈਡਬਲਯੂਐਸ ਕੈਟੇਗਰੀ

ਦੇ ਅਡਮਿਸ਼ਨ ਨੂੰ ਪਾਰਦਰਸ਼ੀ ਬਣਾਇਆ ਹੈ। ਇਸ ਦੇ ਤਹਿਤ 31 ਹਜ਼ਾਰ ਦਾਖਲੇ ਬਿਨਾ ਕਿਸੇ ਦਿਕਤ ਦੇ ਹੋਏ ਹਨ। ਦੇਖਣ ਵਿਚ ਆ ਰਿਹਾ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਕੈਟੇਗਰੀ ਵਿਚ ਦਾਖਲਾ ਪਾਉਣ ਵਾਲੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਦੂਜੇ ਬੱਚਿਆਂ ਦੇ ਨਾਲ ਤਾਲਮੇਲ ਬੈਠਾਉਣ ਵਿਚ ਮੁਸ਼ਕਲ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ।

ਇਸ ਜਮਾਤ ਵਿਚ ਅਡਮਿਸ਼ਨ ਲੈਣ ਵਾਲੇ ਬੱਚਿਆਂ ਦੇ ਸਰਪ੍ਰਸਤ ਵੀ ਜ਼ਿਆਦਾ ਪੜ੍ਹੇ-ਲਿਖੇ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੇ ਅਤੇ ਉਹ ਆਪਣੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਦੂਜਿਆਂ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਗਾਈਡ ਨਹੀਂ ਕਰ ਪਾਉਂਦੇ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸਥਿਤੀ

ਨੂੰ ਧਿਆਨ ਵਿਚ ਰਖਦੇ ਹੋਏ ਉਨ੍ਹਾਂ ਤੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਧਿਆਨ ਦਿਤੇ

ਜਾਣ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਹੈ ਤਾਂ ਕਿ ਸਭ ਦਾ ਗੁਣਵਤਾਪੂਰਨ ਸਿਖਿਆ ਦਾ ਸੁਫਨਾ ਪੂਰਾ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕੇ।





# ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਖੁਲ੍ਹੀਆਂ ਸੌ ਲਾਇਬ੍ਰੇਰੀਆਂ

**ਕਿ** ਕਿਤਾਬਾਂ ਨੂੰ ਦੋਸਤ ਮੰਨਣ ਵਾਲੇ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਲਾਇਬ੍ਰੇਰੀ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤੀ ਦਾ ਕਮਜ਼ੋਰ ਹੋਣਾ ਗੰਭੀਰ ਚਿੰਤਾ ਦੀ ਗਲ ਹੈ। ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਿਖਿਅਕ ਮਾਹੌਲ ਵਿਚ ਗੁਣਾਤਮਕ ਬਦਲਾਅ ਲਿਆਉਣ

ਵਿਚ ਜੁਟੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਇਸ ਪਾਸੇ ਗੰਭੀਰ ਪਹਿਲ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਇਕੱਠ ਸੌ ਲਾਇਬ੍ਰੇਰੀਆਂ ਖੋਲ੍ਹੀਆਂ ਹਨ।

ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਖੋਲ੍ਹੀਆਂ ਗਈਆਂ ਸੌ ਲਾਇਬ੍ਰੇਰੀਆਂ ਪ੍ਰਾਇਮਰੀ ਸੈਕਸ਼ਨ ਦੇ ਬੱਚਿਆਂ ਦੇ ਲਈ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤੀਆਂ ਗਈਆਂ ਹਨ। ਮੋਤੀ ਬਾਗ ਦੇ ਸਰਵੋਦਯ ਕੰਨਿਆ ਸਕੂਲ ਵਿਚ ਐਸੀ ਹੀ ਇਕ ਲਾਇਬ੍ਰੇਰੀ ਦਾ ਉਦਘਾਟਨ ਉਪਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਤੇ ਸਿੱਖਿਆ ਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਯਾ ਨੇ ਕੀਤਾ।

ਸ੍ਰੀ ਸਿਸੋਦਿਯਾ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਹ ਲਾਇਬ੍ਰੇਰੀ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਪੜ੍ਹਨ ਵਾਲੇ ਛੋਟੇ ਬੱਚਿਆਂ ਦੇ ਲਈ ਦੀਵਾਲੀ ਦਾ ਤੋਹਫਾ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਕ ਸਾਲ ਦੇ ਅੰਦਰ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਸਾਰੇ 450 ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਲਾਇਬ੍ਰੇਰੀਆਂ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਦਿਤੀਆਂ ਜਾਣਗੀਆਂ, ਜਿਥੇ ਪ੍ਰਾਇਮਰੀ ਸੈਕਸ਼ਨ ਹਨ। ਉਪਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਕੋਲ ਪੈਸੇ ਦੀ ਕਮੀ ਨਹੀਂ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਕੰਮ ਦੇ ਲਈ ਪੈਸੇ ਦੀ ਕਮੀ ਹੋਣ ਵੀ ਨਹੀਂ ਦਿਤੀ ਜਾਵੇਗੀ। ਇਸ ਕੰਮ



ਦੇ ਲਈ ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਮਹਾਰਤ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਹੋਵੇਗੀ ਉਸ ਨੂੰ ਲਿਆ ਜਾਵੇਗਾ। ਉਪਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਸੁਝਾਅ ਦਿਤਾ ਕਿ ਹਰ ਸਕੂਲ ਵਿਚ ਪੇਟਿੰਗ, ਡ੍ਰਾਇੰਗ ਤੇ ਸਟੋਰੀ ਰਾਈਟਿੰਗ ਜਿਹੇ ਮੁਕਾਬਲੇ ਕਰਾਏ ਜਾਣ ਅਤੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਮੁਕਾਬਲਿਆਂ ਵਿਚ ਬੇਹਤਰ ਪ੍ਰਦਰਸ਼ਨ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਬੱਚਿਆਂ ਦੀ ਪੇਟਿੰਗ, ਡ੍ਰਾਇੰਗ ਅਤੇ ਕਹਾਣੀਆਂ ਆਦਿ ਦਾ ਸੰਕਲਨ ਕਰਕੇ, ਕੁਝ ਕਾਪੀਆਂ ਸਕੂਲ ਦੀ ਲਾਇਬ੍ਰੇਰੀ ਵਿਚ ਰੱਖ ਦਿਤੀਆਂ ਜਾਣ, ਜਿਸ ਨਾਲ ਬਾਕੀ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਵੀ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਮਿਲੇ। ਇਸ ਦੇ ਇਲਾਵਾ ਇਨ੍ਹਾਂ ਮੁਕਾਬਲਿਆਂ ਦੇ ਆਧਾਰ ਤੇ ਪੂਰੀ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਬੇਹਤਰ ਪ੍ਰਦਰਸ਼ਨ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਬੱਚਿਆਂ ਦੀ ਪੇਟਿੰਗ, ਡ੍ਰਾਇੰਗ ਅਤੇ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦਾ ਸੰਕਲਨ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਹਰ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲ ਦੀ ਲਾਇਬ੍ਰੇਰੀ ਵਿਚ ਰੱਖੇ ਜਾਣ। ਇਸ ਨਾਲ ਪੂਰੀ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਬੱਚੇ ਪ੍ਰਤੀਭਾਵਾਂ ਨਾਲ ਰੂਬਰੂ ਹੋ ਸਕਣਗੇ।

ਅਤੇ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਲੈ ਸਕਣਗੇ ਅਤੇ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਲੈ ਕੇ ਖੁਦ ਵੀ ਇਸ ਦਿਸ਼ਾ ਵਿਚ ਅੱਗੇ ਵਧ ਸਕਣਗੇ।

ਸਕੂਲ ਵਿਚ ਖੁਲ੍ਹਣ ਵਾਲੀਆਂ ਲਾਇਬ੍ਰੇਰੀਆਂ ਵਿਚ ਕਿਤਾਬਾਂ ਦੀ ਚੋਣ ਤੇ ਖਾਸ ਧਿਆਨ ਦਿਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਜ਼ਿਆਦਾਤਰ ਕਿਤਾਬਾਂ ਐਸੀਆਂ ਹਨ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਤੋਂ ਬੱਚੇ ਫੋਟੋਆਂ, ਕਹਾਣੀਆਂ ਅਤੇ ਗੇਮਸ ਦੇ ਜਰੀਏ ਕਾਫੀ ਕੁਝ ਸਿਖ ਸਕਣਗੇ। ■





# ਮੇਰਾ ਸਾਥੀ, ਦੋਸਤ ਅਤੇ ਨੇਤਾ ਭਗਤ ਸਿੰਘ !



ਇਕ ਦਿਨ ਸਵੇਰੇ ਜਦ ਮੈਂ ਕਮਰੇ ਵਿਚ ਬੈਠਾ ਕਾਲਜ ਦਾ ਕੰਮ ਪੂਰਾ ਕਰ ਰਿਹਾ ਸੀ ਤਾਂ ਸੁਣਿਆ ਕਿ ਬਾਹਰ ਗੁਆਂਢੀ ਤੋਂ ਕੋਈ ਮੇਰਾ ਪਤਾ ਪੁੱਛ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਆਪਣਾ ਨਾਮ ਸੁਣ ਕੇ ਮੈਂ ਬਾਹਰ ਨਿਕਲ ਆਇਆ, ਦੇ ਖਿਆ ਮੈਲੀ ਸਲਵਾਰ-ਕਮੀਜ਼ ਪਾਏ ਕੰਬਲ ਲਪੇਟੇ ਇਕ ਸਿੱਖ ਨੌਜਵਾਨ ਸਾਹਮਣੇ ਖੜਾ ਹੈ-ਲੰਬਾ ਕਦ, ਖੂਬ ਗੋਰਾ ਰੰਗ, ਛੋਟੀਆਂ-ਛੋਟੀਆਂ ਅੱਖਾਂ, ਘੁੰਮਦੀ ਹੋਈ ਪੈਨੀ ਨਜ਼ਰ, ਸੁੰਦਰ ਚਿਹਰੇ ਤੇ ਹਲਕੀ-ਹਲਕੀ ਛੋਟੀ-ਜਿਹੀ, ਦਾੜੀ, ਕੇਸ ਅਤੇ ਪਗੜੀ। “ਇਹ ਰਹੇ ਸ਼ਿਵ ਵਰਮਾ” ਮੈਨੂੰ ਦੇਖ ਕੇ ਗੁਆਂਢੀ ਨੇ ਕਿਹਾ। ਆਉਣ ਵਾਲੇ ਦੋਵੇਂ ਹੱਥ ਫੈਲਾ ਕੇ ਐਸੇ ਚਿੰਬੜ ਗਿਆ ਮੰਨੋ ਕੋਈ ਬਹੁਤ ਪੁਰਾਣਾ ਮਿੱਤਰ ਹੋਵੇ। ਫਿਰ ਮੇਰਾ ਹੱਥ ਖਿਚਦੇ ਹੋਏ ਉਸ ਨੇ ਕਮਰੇ ਵਿਚ ਇੰਝ ਦਾਖਲ ਹੋਇਆ ਜਿਵੇਂ ਕਮਰਾ ਮੇਰੀ ਨਹੀਂ ਉਸੇ ਦਾ ਹੋਵੇ। ਛੋਟੇ ਕਮਰੇ ਵਿਚ ਜਗ੍ਹਾ ਦੀ ਤੰਗੀ ਦੇ ਕਾਰਨ ਮੈਂ ਮੰਝਾ ਕਢ ਕੇ ਜਮੀਨ ਤੇ ਹੀ ਬਿਸਤਰਾ ਲਗਾ ਰਖਿਆ ਸੀ। ਉਸ ਨੇ ਬਗੈਰ ਕਿਸੇ ਜਹਿਮਤ ਦੇ ਬਿਨਾਂ ਇਜਕੇ ਜਾ ਕੇ ਬਿਸਤਰੇ ਤੇ ਆਸਨ ਲਗਾ ਦਿਤਾ ਅਤੇ ਮੇਰੇ ਹੱਥ ਖਿਚਦੇ

ਹੋਏ ਕੋਲ ਬਿਠਾਉਂਦੇ ਹੋਏ ਬੋਲਿਆ, “ਮੇਰਾ ਨਾਮ ਰੰਜੀਤ ਹੈ। ਮੈਂ ਦੋ-ਚਾਰ ਦਿਨ ਇਥੇ ਹੀ ਰਹਾਂਗਾ। ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਤੁਹਾਡੇ ਦੋਸਤ ਤੋਂ ਮੈਂ ਤੁਹਾਡੇ ਅਤੇ ਜੈਦੇਵ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਸੁਣ ਚੁਕਾ ਹਾਂ। ਮੈਂ ਵੀ ਤੁਹਾਡੀ ਹੀ ਮੰਜ਼ਲ ਦਾ ਰਾਹਗੀਰ ਹਾਂ।” ਫਿਰ ਕੁਝ ਸੋਚਕਰ ਪੁਛਿਆ, “ਵਿਜੈ ਅਤੇ ਸੁਰੇਂਦਰ ਪਾਂਡੇ ਨੂੰ ਜਾਣਦੇ ਹੋ?”

ਰੰਜੀਤ ਨੇ ਸਹਿਜ ਸੁਭਾਅ, ਚੰਗੇ ਹਾਸੇ ਅਤੇ ਮੁਸਕਰਾਉਂਦੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਨੇ ਪਹਿਲੀ ਹੀ ਮੁਲਾਕਾਤ ਵਿਚ ਮੇਰੇ ਸਭ ਹਥਿਆਰ ਖੋਹ ਲਏ ਸਨ ਅਤੇ ਮੇਰੇ ਲਈ ਉਸ ਤੇ ਯਕੀਨ ਨਾ ਕਰਨਾ ਮੁਸ਼ਕਲ ਸੀ। ਰੋਕਥਾਮ ਦੇ ਮੇਰੇ ਸਾਰੇ ਬੰਨ ਟੁਟ ਗਏ ਅਤੇ ਮੈਂ ਮੈਂ ਵੀ ਉਸੇ ਸਹਿਜ ਭਾਵ ਨਾਲ ਕਹਿ ਦਿਤਾ - “ਹਾਂ ਜਾਣਦਾ ਹਾਂ”।

“ਤਾਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੋਵਾਂ ਨੂੰ ਸੱਦਾ ਦੇ ਦੋਵੇਂ ਕਿ ਅੱਜ ਰਾਤ ਇਥੇ ਆ ਕੇ ਮੈਨੂੰ ਮਿਲ ਲੈਣ,” ਉਸ ਨੇ ਕਿਹਾ। ਫਿਰ ਕੁਝ ਰੁਕ ਕੇ ਪੁਛਿਆ, “ਜੈ ਦੇਵ ਕਿਥੇ ਹੈ?”

ਇਸ ਵਾਰ ਮੈਂ ਝੂਠ ਬੋਲ ਗਿਆ। ਹਿੰਮਤ ਕਰਕੇ ਕੇ ਕਹਿ ਦਿਤਾ “ਕਿਤੇ ਬਾਹਰ ਗਿਆ ਹੈ, ਇਥੇ ਨਹੀਂ ਹੈ।”





ਮੈਂ ਗੱਲ ਟਾਲ ਗਿਆ ਹਾਂ, ਇਸ ਨੂੰ ਰੰਜੀਤ ਨੇ ਸਮਝ ਲਿਆ। ਇਸ ਵਿਚਾਰ ਨੇ ਕਿ ਮੈਂ ਅਜੇ ਤਕ ਉਸ ਤੇ ਯਕੀਨ ਨਹੀਂ ਕਰ ਪਾਇਆ ਹਾਂ, ਕੁਝ ਦੇਰ ਦੇ ਲਈ ਉਸ ਨੂੰ ਉਦਾਸ ਜਿਹਾ ਕਰ ਦਿਤਾ। ਉਹ ਆਪਣੇ ਨਾਲ ਵਿਕਟਰ ਹਯੂਗੋ ਦਾ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਨਾਵਲ 'ਲਾ ਮਿਜ਼ਰੇਬਲ' ਲਿਆਇਆ ਸੀ। ਉਸ ਨੇ ਚੁਪਚਾਪ ਉਸ ਪੜ੍ਹਨਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਦਿਤਾ— ਮੰਨੋ ਕਿਸੇ ਨੇ ਉਸ ਦਾ ਹਾਸਾ, ਉਸ ਦੀ ਗਲਬਾਤ, ਉਸ ਦੇ ਬਿਨਾ ਤਕੁਲਫਾਨਾ ਸੁਭਾਅ ਆਦਿ ਤੇ ਅਚਾਨਕ ਬ੍ਰੇਕ ਲਗਾ ਦਿਤੀ ਹੋਵੇ।

ਮੈਂ ਝੂਠ ਬੋਲ ਤਾਂ ਗਿਆ ਪਰ ਦਿਲ ਵਿਚ ਗਲ ਖੜਕਦੀ-ਜਿਹੀ ਰਹੀ। ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਦੀ ਉਦਾਸੀ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ ਮੇਰੇ ਲਈ ਕਮਰੇ ਵਿਚ ਰੁਕਣਾ ਮੁਸ਼ਕਲ ਜਿਹਾ ਹੋ ਗਿਆ ਅਤੇ ਵਿਜੈ ਨੂੰ ਖਬਰ ਭਿਜਵਾਉਣ ਦੇ ਬਹਾਨੇ ਮੈਂ ਕਾਲਜ ਚਲਾ ਗਿਆ। ਸੁਰੇਂਦਰ ਨੂੰ ਰੰਜੀਤ ਦਾ ਸੁਨੇ ਹਾ ਦਿਤਾ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਦਸਿਆ ਕਿ ਪਾਰਟੀ ਦਾ ਪੁਰਾਣਾ ਆਦਮੀ ਹੈ।

ਕਾਲਜ ਤੋਂ ਵਾਪਸ ਆਉਂਦੇ-ਆਉਂਦੇ ਦੁਪਹਿਰ ਦੇ ਖਾਣੇ ਦਾ ਸਮਾਂ ਹੋ ਗਿਆ ਸੀ। ਜੈਦੇਵ ਅਤੇ ਮੈਂ ਕੈਟੀਨ ਵਿਚ ਖਾਣਾ ਖਾਣ ਇਕੱਠੇ ਹੀ ਜਾਂਦੇ ਸੀ। ਰੰਜੀਤ ਦੇ ਲਈ ਕਮਰੇ ਵਿਚ ਖਾਣਾ

ਮੰਗਵਾਉਣ ਦੀ ਬਜਾਏ ਮੈਂ ਉਸ ਨੂੰ ਵੀ ਨਾਲ ਹੀ ਲੈਂਦਾ ਗਿਆ। ਕੈਟੀਨ ਵਿਚ ਉਸ ਸਮੇਂ ਅਸੀਂ ਤਿੰਨ ਹੀ ਖਾਣ ਵਾਲੇ ਸੀ। ਰੰਜੀਤ ਵਿਚਕਾਰ ਜੈਦੇਵ ਦੇ ਕੋਲ ਹੀ ਬੈਠਾ ਸੀ ਲੇਕਿਨ ਕੈਟੀਨ ਦਾ ਕੋਈ ਹੋਰ ਮੈਂਬਰ ਸਮਝ ਕੇ ਉਸ ਨੇ ਉਧਰ ਧਿਆਨ ਨਹੀਂ ਦਿਤਾ।

ਫਿਰ ਜਦ ਜੈਦੇਵ ਨੇ ਚੁਪਚਾਪ ਉਸ ਦੀ ਦਾਲ ਵਿਚ ਕਸ ਕੇ ਗਰਮ ਘਿਉ ਛੱਡ ਦਿਤਾ ਤਾਂ ਉਸ ਨੇ ਪਹਿਲਾਂ ਜੈਦੇਵ ਦੇ ਵਲ ਦੇਖਿਆ ਅਤੇ ਫਿਰ ਪ੍ਰਸ਼ਨ ਭਰੀਆਂ ਨਜ਼ਰਾਂ ਨਾਲ ਮੇਰੀ ਵਲ ਦੇਖਣ ਲਗਾ। ਉਸ ਦੀ ਉਲਝਣ ਤੇ ਸਾਨੂੰ ਦੋਵਾਂ ਨੂੰ ਹਾਸਾ ਆ ਗਿਆ। ਉਸ ਦੇ ਮੂੰਹ ਚੋਂ ਨਿਕਲ ਗਿਆ “ਜੈਦੇਵ? “ਅਸੀਂ ਲੋਕ ਹੋਰ ਜੋਰ ਨਾਲ ਹੱਸ ਪਏ। ਰੰਜੀਤ ਨੇ ਮੇਰੀ ਪਿਠ ਤੇ ਜੋਰ ਨਾਲ ਮੁੱਕਾ ਮਾਰਦੇ ਹੋਏ ਕਿਹਾ “ਚੋਰ ਕਿਤੋਂ ਦੇ।” ਫਿਰ ਵਿਅੰਗ ਕਸਦੇ ਹੋਏ ਕਿਹਾ ਲਗਦਾ ਹੈ

ਆਪਣਿਆਂ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਸਹੇਜ ਕੇ ਰਖਣ ਦੀ ਆਦਤ ਹੈ”।

“ਫਿਲਹਾਲ ਤਾਂ ਤੁਹਾਡੇ ਮੁੱਕੇ ਦੀ ਸੱਟ ਨੇ ਆਪਣਾ-ਪਰਾਇਆ ਸਭ ਬਰਾਬਰ ਕਰ ਦਿਤਾ ਹੈ,” ਮੈਂ ਕਿਹਾ।

ਉਸ ਨੇ ਖੱਬਾ ਹੱਥ ਮੇਰੀ ਪਿਠ ਤੇ ਫੇਰਦੇ ਹੋਏ ਕਿਹਾ, “ਲਿਆਂ ਪਿਠ ਸਹਲਾ ਦਿੰਦਾ ਹਾਂ, ਹੁਣ ਚੁਪ-ਚਾਪ ਖਾ ਲਵੋ।” ਰੰਜੀਤ ਮੇਰੇ ਕਮਰੇ ਵਿਚ ਜਿੰਨੇ ਦਿਨ ਰਿਹਾ ਰੋਜ਼ ਹੀ ਵਿਜੈ ਅਤੇ ਸੁਰੇਂਦਰ ਪਾਂਡੇ ਆਉਂਦੇ ਰਹੇ। ਉਹ ਕਾਕੋਰੀ ਦੇ ਦੋਸ਼ੀ ਪੰਡਿਤ ਰਾਮਪ੍ਰਸਾਦ ਬਿਸਮਿਲ ਨੂੰ ਜੇਲ੍ਹ ਤੋਂ ਛੁਡਾਉਣ ਦੀ ਯੋਜਨਾ ਤੇ ਵਿਚਾਰ ਵਟਾਂਦਰਾ ਕਰਨ ਆਇਆ ਸੀ। ਤਿੰਨ-ਚਾਰ ਦਿਨ ਰਹਿਣ ਦੇ ਬਾਅਦ ਬਿਸਮਿਲ ਨਾਲ ਸੰਪਰਕ ਸਥਾਪਿਤ ਕਰਕੇ ਯੋਜਨਾ ਪੱਕੀ ਕਰਕੇ ਰਖਣ ਦਾ ਭਾਰ ਵਿਜੈ ਤੇ ਛੱਡ ਉਹ ਪੰਜਾਬ ਵਾਪਸ ਚਲਾ ਗਿਆ।

**ਰੰਜੀਤ ਮੇਰੇ ਕਮਰੇ ਵਿਚ ਜਿੰਨੇ ਦਿਨ ਰਿਹਾ ਰੋਜ਼ ਹੀ ਵਿਜੈ ਅਤੇ ਸੁਰੇਂਦਰ ਪਾਂਡੇ ਆਉਂਦੇ ਰਹੇ। ਉਹ ਕਾਕੋਰੀ ਦੇ ਦੋਸ਼ੀ ਪੰਡਿਤ ਰਾਮਪ੍ਰਸਾਦ ਬਿਸਮਿਲ ਨੂੰ ਜੇਲ੍ਹ ਤੋਂ ਛੁਡਾਉਣ ਦੀ ਯੋਜਨਾ ਤੇ ਵਿਚਾਰ ਵਟਾਂਦਰਾ ਕਰਨ ਆਇਆ ਸੀ। ਤਿੰਨ-ਚਾਰ ਦਿਨ ਰਹਿਣ ਦੇ ਬਾਅਦ ਬਿਸਮਿਲ ਨਾਲ ਸੰਪਰਕ ਸਥਾਪਿਤ ਕਰਕੇ ਯੋਜਨਾ ਪੱਕੀ ਕਰਕੇ ਰਖਣ ਦਾ ਭਾਰ ਵਿਜੈ ਤੇ ਛੱਡ ਉਹ ਪੰਜਾਬ ਵਾਪਸ ਚਲਾ ਗਿਆ।**

ਰੰਜੀਤ ਦੇ ਵਾਪਸ ਚਲੇ ਜਾਣ ਦੇ ਬਾਅਦ ਮੈਨੂੰ ਪਤਾ ਚਲਿਆ ਪਤਾ ਚਲਿਆ ਕਿ ਉਸ ਦਾ ਨਾਮ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਹੈ ਅਤੇ ਉਹ ਪਹਿਲਾਂ ਵੀ ਕਾਨਪੁਰ ਵਿਚ ਸ੍ਰੀ ਗਨੇਸ਼ ਸ਼ੰਕਰ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਦੇ ਕੋਲ “ਪ੍ਰਤਾਪ” ਵਿਚ ਕੰਮ ਕਰ ਚੁਕਾ ਹੈ। ਕਾਨਪੁਰ ਵਿਚ “ਪ੍ਰਤਾਪ

ਵਿਚ ਕੰਮ ਕਰਨ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਕੁਝ ਦਿਨ ਉਸ ਨੇ ਅਖਬਾਰ ਵੇਚ ਕੇ ਵੀ ਗੁਜ਼ਾਰਾ ਕੀਤਾ ਸੀ। ਇਹ ਵੀ ਪਤਾ ਚਲਿਆ ਕਿ ਬਿਸਮਿਲ ਨੂੰ ਜੇਲ੍ਹ ਤੋਂ ਛੁਡਾਉਣ ਦਾ ਇਕ ਯਤਨ ਪਹਿਲਾਂ ਵੀ ਹੋ ਚੁਕਾ ਸੀ ਜਿਸ ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਕਾਰਨਾਂ ਦੀ ਵਜ੍ਹਾ ਨਾਲ ਵਿਚ ਹੀ ਛੱਡ ਦੇਣਾ ਪਿਆ ਸੀ। ਉਸ ਵਿਚ ਭਾਗ ਲੈਣ ਦੇ ਲਈ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਅਤੇ ਸੁਖਦੇਵ ਦੇ ਨਾਲ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਕਈ ਹੋਰ ਸਾਥੀ ਵੀ ਆਏ ਸਨ। ਉਸ ਦਿਸ਼ਾ ਵਿਚ ਇਹ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਦੂਜਾ ਯਤਨ ਸੀ।

ਲਗਭਗ ਦੋ ਮਹੀਨੇ ਦੇ ਬਾਅਦ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਫਿਰ ਵਾਪਸ ਆਇਆ। ਇਸ ਵਾਰ ਉਹ ਕਾਫੀ ਦਿਨ ਰੁਕਿਆ। ਰਾਮਪ੍ਰਸਾਦ ਬਿਸਮਿਲ ਦੇ ਨਾਲ ਵਿਜੈ ਦਾ ਸੰਪਰਕ ਪਹਿਲਾਂ ਤੋਂ ਖੂਬ ਚੰਗਾ ਰਿਹਾ। ਬਿਸਮਿਲ ਨੇ ਯੋਜਨਾ ਦੀ ਸਵੀਕ੍ਰਿਤੀ ਵੀ ਦੇ ਦਿਤੀ





ਸੀ, ਲੇਕਿਨ ਦਿਨ ਅਤੇ ਸਮਾਂ ਅਜੇ ਤੈਅ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਿਆ ਸੀ ਉਧਰ ਕੇਸ ਦੇ ਫੈਸਲੇ ਦਾ ਦਿਨ ਨਜ਼ਦੀਕ ਆਉਂਦਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਇਸ ਦੌਰਾਨ ਕੁਝ ਐਸਾ ਹੋਇਆ ਕਿ ਬਿਸਮਿਲ ਨਾਲ ਚਿੱਠੀ ਪੱਤਰ ਅਤੇ ਮੁਲਾਕਾਤਾਂ ਬਿਲਕੁਲ ਬੰਦ ਹੋ ਗਈਆਂ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਤੇ ਸਖਤ ਪਹਿਰਾ ਲਗਾ ਦਿਤਾ ਗਿਆ। ਇਹ ਸਭ ਕਿਉਂ ਅਤੇ ਕਿਵੇਂ ਹੋਇਆ ਇਹ ਤਾਂ ਨਹੀਂ ਜਾਣਦਾ ਲੇਕਿਨ ਇਸ ਨਾਲ ਯੋਜਨਾ ਨੂੰ ਡੂੰਘਾ ਧੱਕਾ ਲਗਾ। ਫਿਰ ਵੀ ਵਿਜੇ ਨੇ ਆਪਣਾ ਯਤਨ ਜਾਰੀ ਰੱਖਿਆ।

ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਮੇਰੇ ਕਮਰੇ ਵਿਚ ਜ਼ਿਆਦਾਤਰ ਆਪਣਾ ਸਮਾਂ ਪੜ੍ਹਨ ਵਿਚ ਬਤੀਤ ਕਰਦਾ ਸੀ। ਵਿਕਟਰ ਹਯੂਗੋ ਹਾਲਕੇਨ, ਟਾਲਸਟਾਏ, ਦਾਸਤੋਵਸਕੀ, ਗੋਕੀ, ਬਰਨਾਡ ਸ਼ਾ, ਡਿਕੇਂਸ ਆਦਿ ਉਸ ਦੇ ਪ੍ਰਿਯ ਲੇਖਕ ਸਨ। ਪੜ੍ਹਨ ਤੋਂ ਉਸ ਦੀ ਤਬੀਅਤ ਉਬ ਜਾਂਦੀ ਤਾਂ ਉਹ ਹੋਸਟਲ ਦੇ ਪਿਛੇ ਗੰਗਾ ਦੇ ਕਿਨਾਰੇ ਜਾ ਕੇ ਬੈਠ ਜਾਂਦਾ, ਜਾਂ ਜਦ ਮੈਨੂੰ ਜੈਦੇਵ ਨੂੰ ਕਾਲਜ ਤੋਂ ਫਰਸਤ ਹੁੰਦੀ ਤਾਂ ਸਾਡੇ ਨਾਲ ਗੱਲਾਂ ਕਰਦਾ। ਉਸ ਦੀ ਗਲਬਾਤ ਦਾ ਵਿਸ਼ਾ ਉਸ ਦੀਆਂ ਪੜ੍ਹੀਆਂ ਹੋਈਆਂ ਕਿਤਾਬਾਂ ਹੁੰਦੀਆਂ। ਉਹ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਦਸਦਾ ਅਤੇ

ਫਿਰ ਜ਼ੋਰ ਦਿੰਦਾ ਕਿ ਅਸੀਂ ਵੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹੀਏ। ਕਦੇ-ਕਦੇ ਪੁਰਾਣੇ ਕ੍ਰਾਂਤੀਕਾਰੀਆਂ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਵੀ ਸੁਣਾਉਂਦਾ- ਕੂਕਾ ਵਿਦ੍ਰੋਹ, ਗਦਰ ਪਾਰਟੀ ਦਾ ਇਤਿਹਾਸ, ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ, ਸੂਫੀ ਅੰਬਾਪ੍ਰਸਾਦ ਆਦਿ ਦੀਆਂ ਜੀਵਨੀਆਂ ਅਤੇ ਬੱਬਰ-ਅਕਾਲੀਆਂ ਦੀ ਬਹਾਦੁਰੀ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦਸਦੇ-ਦਸਦੇ ਉਹ ਖੁਦ ਹੀ ਭਾਵੁਕ ਹੋ ਉਠਦਾ। ਉਸ ਦੀ ਵਰਨਣ ਸ਼ੈਲੀ ਵਿਚ ਇਕ ਅਜੀਬ ਖਿਚ ਸੀ ਜਿਸ ਨਾਲ ਖਿਚ ਦੇ ਮਾਰੇ ਅਸੀਂ ਦੋਵੇਂ ਰੋਜ਼ ਹੀ ਕਈ ਘੰਟੇ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਕਾਲਜ ਤੋਂ ਭੱਜ ਆਉਂਦੇ ਸੀ।

ਜੈਦੇਵ ਸ਼ੁਰੂ ਤੋਂ ਹੀ ਮੇਰੇ ਤੋਂ ਤਕੜਾ ਸੀ ਜੋਖਮ ਨਾਲ ਲੜਨ ਦੀ ਉਸ ਦੀ ਆਦਤ ਸੀ ਮਾਰਕੁਟ ਵਿਚ ਉਸ ਦਾ ਹੱਥ ਹਮੇਸ਼ਾਂ ਖੁਲਾ ਸੀ ਉਸ ਦੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਸਭ ਗੁਣਾਂ ਤੋਂ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਹੋ ਕੇ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਨੇ ਬਿਸਮਿਲ ਵਾਲੇ ਐਕਸ਼ਨ ਵਿਚ ਲੈ ਜਾਣ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਕਰ ਲਿਆ। ਇਕ ਦਿਨ ਜਦ ਦੁਪਹਿਰ ਦੇ ਸਮੇਂ ਜਦ ਉਸ ਨੇ ਆਪਣਾ ਵਕਤ ਫੈਸਲਾ ਮੈਨੂੰ ਦੱਸਿਆ ਤਾਂ ਮੈਨੂੰ ਆਪਣੇ ਦੁਬਲੇ-ਪਤਲੇ ਸਰੀਰ ਤੇ ਬੜੀ ਝੁੰਝਲਾਹਟ ਮਹਿਸੂਸ ਹੋਈ। ਮੈਂ ਪਾਰਟੀ ਦੇ ਕੰਮ ਦੇ ਯੋਗ ਨਹੀਂ ਸਮਝਿਆ ਗਿਆ ਇਸ ਵਿਚਾਰ ਨਾਲ ਮੈਨੂੰ ਡੂੰਘਾ ਧੱਕਾ ਲਗਾ ਅਤੇ ਕੁਝ ਦੇਰ



ਬੈਠੇ ਰਹਿਣ ਦੇ ਬਾਅਦ ਨੀਂਦ ਦਾ ਬਹਾਨਾ ਬਣਾ ਕੇ ਮੈਂ ਇਕ ਪਾਸੇ ਲੇਟ ਗਿਆ। ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਜਾਣਦਾ ਸੀ ਕਿ ਮੈਂ ਸੌ ਨਹੀਂ ਰਿਹਾ ਹਾਂ। ਉਹ ਕੁਝ ਦੇਰ ਤਕ ਕੋਲ ਪਈ ਇਕ ਕਿਤਾਬ ਦੇ ਸਫ਼ੇ ਪਲਟਦਾ ਰਿਹਾ, ਫਿਰ ਮੇਰਾ ਮੋਢਾ ਹਿਲਾਉਂਦੇ ਹੋਏ ਉਸ ਨੇ ਹੌਲੀ ਜਿਹਾ ਕਿਹਾ “ਸ਼ਿਵ”।

“ਕੀ ਹੈ?” ਉਸ ਦੇ ਵਲ ਪਾਸਾ ਵਟਦੇ ਹੋਏ ਮੈਂ ਕਿਹਾ।

“ਇਕ ਗਲ ਪੁਛਾਂ?”

“ਕਹੋ।”

“ਵਿਅਕਤੀ ਦਾ ਨਾਮ ਵੱਡਾ ਹੈ ਜਾਂ ਪਾਰਟੀ ਦਾ ਕੰਮ?”

“ਪਾਰਟੀ ਦਾ ਕੰਮ,” ਮੈਂ ਉਤਰ ਦਿਤਾ।

“ਹੋਰ ਪਾਰਟੀ ਦਾ ਕੰਮ ਬਿਨਾ ਰੁਕੇ ਤੇਜ਼ੀ ਨਾਲ ਚਲਦਾ ਰਹੇ, ਸਾਡੇ, ‘ਐਕਸ਼ਨ’ ਸਫਲ ਹੁੰਦੇ ਰਹਿਣ, ਸਾਡੀ ਗਲ ਦੇ ਸਵਾਸੀਆਂ ਤਕ ਨਿਯਮਿਤ ਰੂਪ ਨਾਲ ਪਹੁੰਚਦੀ ਰਹੇ, ਅਜ਼ਾਦੀ ਦੀ ਆਪਣੀ ਇਸ ਲੜਾਈ ਵਿਚ ਹਰ ਮੰਜ਼ਲ ਤੇ ਅਸੀਂ ਕਾਮਯਾਬ ਹੁੰਦੇ ਰਹੀਏ, ਇਸ ਦੇ ਲਈ ਪਹਿਲੀ ਸ਼ਰਤ ਕੀ ਹੈ?”

“ਇਕ ਮਜ਼ਬੂਤ ਅਤੇ ਵਿਆਪਕ ਸੰਗਠਨ,” ਮੈਂ ਉਤਰ ਦਿਤਾ। “ਸੰਗਠਨ ਅਤੇ ਪ੍ਰਚਾਰ” ਉਸ ਨੇ ਕਿਹਾ। ਦੇਸ਼ ਦੀ ਜਨਤਾ ਸਾਡੀ ਹਿੰਮਤ ਅਤੇ ਸਾਡੇ ਕੰਮਾਂ ਦੀ ਸ਼ਲਾਘਾ ਕਰਦੀ ਹੈ ਲੇ ਕਿਨ ਸਾਡੇ ਨਾਲ ਉਹ ਆਪਣਾ ਸਿੱਧਾ ਸੰਪਰਕ ਜੋੜ ਸਕਣ ਵਿਚ ਅਸਮਰਥ ਹੈ। ਅਜੇ ਤਕ ਅਸੀਂ ਖੁਲ੍ਹੇ ਸਥਾਨਾਂ ਵਿਚ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਇਹ ਨਹੀਂ ਦਸਿਆ ਹੈ ਕਿ ਜਿਸ ਅਜ਼ਾਦੀ ਦੀ ਅਸੀਂ ਗਲ ਕਰਦੇ ਹਾਂ ਉਸ ਦੀ ਰੂਪ ਰੇਖਾ ਕੀ ਹੋਵੇਗੀ, ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ਾਂ ਦੇ ਚਲੇ ਜਾਣ ਦੇ ਬਾਅਦ ਜੋ ਸਰਕਾਰ ਬਣੇਗੀ ਉਹ ਕਿਹੋ ਜਿਹੀ ਹੋਵੇਗੀ ਅਤੇ ਕਿਸ ਦੀ ਹੋਵੇਗੀ। ਆਪਣੇ ਅੰਦੋਲਨ ਨੂੰ ਜਨਾਧਾਰ ਦੇਣ ਦੇ ਲਈ ਸਾਨੂੰ ਆਪਣੇ ਲਕਸ਼ ਨੂੰ ਜਨਤਾ ਦੇ ਵਿਚ ਲੈ ਜਾਣਾ ਹੋਵੇਗਾ, ਕਿਉਂਕਿ ਜਨਤਾ ਦਾ ਸਮਰਥਨ

ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤੇ ਬਗੈਰ ਅਸੀਂ ਹੁਣ ਪੁਰਾਣੇ ਢੰਗ ਨਾਲ ਇਕੋ-ਦੁਕੇ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ ਅਧਿਕਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਜਾਂ ਸਰਕਾਰੀ ਮੁਖਬਰਾਂ ਨੂੰ ਮਾਰ ਕੇ ਨਹੀਂ ਚਲ ਸਕਦੇ। ਅਸੀਂ ਅਜੇ ਤਕ ਸੰਗਠਨ ਅਤੇ ਪ੍ਰਚਾਰ ਦੇ ਵਲੋਂ ਉਦਾਸੀਨ ਰਹਿ ਕੇ ਸਿਰਫ ਐਕਸ਼ਨ ਤੇ ਹੀ ਜ਼ੋਰ ਦਿੰਦੇ ਆਏ ਹਾਂ। ਕੰਮ ਦਾ ਇਹ ਤਰੀਕਾ ਸਾਨੂੰ ਛੱਡਣਾ ਪਏ ਗਾ। ਮੈਂ ਤੈਨੂੰ ਅਤੇ ਵਿਜੈ ਨੂੰ ਸੰਗਠਨ ਅਤੇ ਪ੍ਰਚਾਰ ਦੇ ਕੰਮਾਂ ਦੇ ਲਈ ਪਿਛੇ ਛੱਡਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ।”

ਕੁਝ ਦੇਰ ਚੁਪ ਰਹਿਣ ਦੇ ਬਾਅਦ ਉਸ ਨੇ ਕਿਹਾ “ਅਸੀਂ ਸਾਰੇ ਸਿਪਾਹੀ ਹਾਂ। ਅਤੇ ਸਿਪਾਹੀ ਦਾ ਸਭ ਤੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਪਿਆਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਯੁਧ ਖੇਤਰ ਨਾਲ। ਇਸ ਲਈ ਐਕਸ਼ਨ

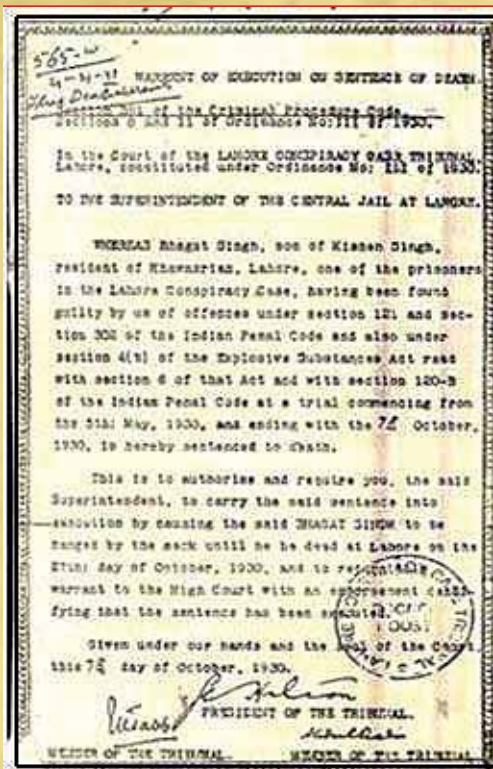
ਤੇ ਚਲਣ ਦੀ ਗਲ ਉਠਦੇ ਹੀ ਸਭ ਲੋਕ ਉਛਲ ਪੈਂਦੇ ਹਨ। ਫਿਰ ਵੀ ਅੰਦੋਲਨ ਦਾ ਧਿਆਨ ਰਖ ਕੇ ਕਿਸੇ ਨਾ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਤਾਂ ਇਹ ਐਕਸ਼ਨ ਦਾ ਮੋਹ ਛੱਡਣਾ ਹੀ ਪਏਗਾ। ਇਹ ਸਹੀ ਹੈ ਕਿ ਆਮਤੌਰ ਤੇ ਸ਼ਹਾਦਤ ਦਾ ਸਿਹਰਾ ‘ਐਕਸ਼ਨਸ’ ਵਿਚ ਜੂਝਣ ਵਾਲਿਆਂ ਜਾਂ ਫਾਂਸੀ ਤੇ ਝੂਲ ਜਾਣ ਵਾਲਿਆਂ ਦੇ ਸਿਰ ਤੇ ਹੀ ਬਝਦਾ ਹੈ, ਲੇਕਿਨ ਇਸ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਇਮਾਰਤ ਦੇ ਮੁੱਖ ਗੇਟ ਤੇ

**ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਮੇਰੇ ਕਮਰੇ ਵਿਚ ਜ਼ਿਆਦਾਤਰ ਆਪਣਾ ਸਮਾਂ ਪੜ੍ਹਨ ਵਿਚ ਬਤੀਤ ਕਰਦਾ ਸੀ। ਵਿਕਟਰ ਹਯੂਗੋ, ਹਾਲਕੇਨ, ਟਾਲਸਟਾਏ, ਦਾਸਤੋਵਸਕੀ, ਗੋਕੀ, ਬਰਨਾਡ ਸ਼ਾ, ਡਿਕੇਂਸ ਆਦਿ ਉਸ ਦੇ ਪ੍ਰਿਯ ਲੇਖਕ ਸਨ। ਪੜ੍ਹਨ ਤੋਂ ਉਸ ਦੀ ਤਬੀਅਤ ਉਬ ਜਾਂਦੀ ਤਾਂ ਉਹ ਹੋਸਟਲ ਦੇ ਪਿਛੇ ਗੰਗਾ ਦੇ ਕਿਨਾਰੇ ਜਾ ਕੇ ਬੈਠ ਜਾਂਦਾ, ਜਾਂ ਜਦ ਮੈਨੂੰ ਜੈਦੇਵ ਨੂੰ ਕਾਲਜ ਤੋਂ ਫਰਸਤ ਹੁੰਦੀ ਤਾਂ ਸਾਡੇ ਲੋਕਾਂ ਨਾਲ ਗੱਲਾਂ ਕਰਦਾ। ਉਸ ਦੀ ਗਲਬਾਤ ਦਾ ਵਿਸ਼ਾ ਉਸ ਦੀਆਂ ਪੜ੍ਹੀਆਂ ਹੋਈਆਂ ਕਿਤਾਬਾਂ ਹੁੰਦੀਆਂ।**

ਜੜੇ ਉਸ ਹੀਰੋ ਦੇ ਸਮਾਨ ਹੀ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ ਜਿਸ ਦਾ ਮੁੱਲ ਜਿਥੋਂ ਤਕ ਇਮਾਰਤ ਦਾ ਸਵਾਲ ਹੈ, ਨੀਂਹ ਦੇ ਹੇਠਾਂ ਦੱਬੇ ਇਕ ਸਾਧਾਰਨ ਪੱਥਰ ਦੇ ਮੁਕਾਬਲੇ ਕੁਝ ਵੀ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ।”

ਮੈਂ ਲੇਟੇ-ਲੇਟੇ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਦੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਸੁਣਦਾ ਰਿਹਾ। ਉਹ ਮੇਰੇ ਸਿਰ ਦੇ ਕੋਲ ਕੰਧ ਦਾ ਸਹਾਰੇ ਲਈ ਬੈਠਾ ਸੀ ਅਤੇ ਇਵੇਂ ਗਲ ਕਰ ਰਿਹਾ ਸੀ ਮੰਨੋ ਜੌਰ-ਜੌਰ ਨਾਲ ਸੋਚਣ ਦਾ ਯਤਨ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੋਵੇ। ਵਿਚੋਂ-ਵਿਚ ਉਸ ਦੇ ਸੱਜੇ ਹੱਥ ਦੀਆਂ ਉਂਗਲੀਆਂ ਮੇਰੇ ਸਿਰ ਦੇ ਵਾਲਾਂ ਵਿਚ ਘੁੰਮ ਜਾਂਦੀਆਂ ਅਤੇ ਉਹ ਹੌਲੀ-ਹੌਲੀ ਰੁਕ-ਰੁਕ ਕੇ ਉਸੇ ਲਹਿਜੇ ਵਿਚ ਬੋਲਣਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਦਿੰਦਾ।

“ਹੀਰੋ ਇਮਾਰਤ ਦੀ ਸੁੰਦਰਤਾ ਵਧਾ ਸਕਦੇ ਹਨ, ਦੇਖਣ



ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਚਕਾਚੌਧ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਨ, ਲੇਕਿਨ ਇਮਾਰਤ ਦੀ ਨੀਂਹ ਨਹੀਂ ਬਣ ਸਕਦੇ, ਉਸ ਨੂੰ ਲੰਬੀ ਉਮਰ ਨਹੀਂ ਦੇ ਸਕਦੇ, ਸਦੀਆਂ ਤਕ ਆਪਣੇ ਮਜ਼ਬੂਤ ਮੋਢਿਆਂ ਤੇ ਉਸ ਦੇ ਬੋਝ ਨੂੰ ਚੁਕ ਕੇ ਉਸ ਨੂੰ ਸਿੱਧਾ ਖੜਾ ਨਹੀਂ ਰਖ ਸਕਦੇ। ਅਜੇ ਤਕ ਸਾਡੇ ਅੰਦੋਲਨ ਨੇ ਹੀਰੋ ਕਮਾਏ ਹਨ, ਬੁਨਿਆਦ ਦੇ ਪੱਥਰ ਨਹੀਂ ਇਕੱਠੇ ਕੀਤੇ। ਇਸ ਲਈ ਇੰਨੀਆਂ ਕੁਰਬਾਨੀਆਂ ਦੇਣ ਦੇ ਬਾਅਦ ਵੀ ਅਸੀਂ ਅਜੇ ਤਕ ਇਮਾਰਤ ਕੀ

ਉਸ ਦਾ ਢਾਂਚਾ ਵੀ ਖੜਾ ਨਹੀਂ ਕਰ ਪਾਏ ਹਾਂ। ਅੱਜ ਸਾਨੂੰ ਬੁਨਿਆਦ ਦੇ ਪੱਥਰਾਂ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਹੈ।” ਫਿਰ ਕੁਝ ਰੁਕ ਕੇ ਬੋਲਿਆ, “ਅਤੇ ਤਿਆਗ ਅਤੇ ਕੁਰਬਾਨੀ ਦੇ ਵੀ ਦੋ ਰੂਪ ਹਨ। ਇਕ ਹੈ ਗੋਲੀ ਖਾ ਕੇ ਜਾਂ ਫਾਂਸੀ ਤੇ ਲਟਕ ਕੇ ਮਰਨਾ। ਉਸ ਵਿਚ ਚਮਕ ਜ਼ਿਆਦਾ ਹੈ। ਲੇਕਿਨ ਤਕਲੀਫ ਘੱਟ। ਦੂਜਾ ਹੈ ਪਿਛੇ ਰਹਿ ਕੇ ਸਾਰੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਇਮਾਰਤ ਦਾ ਬੋਝ ਢੋਹਦੇ ਫਿਰਨਾ।

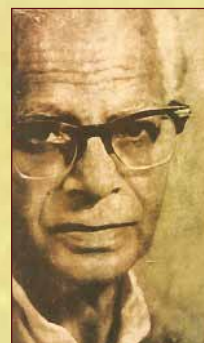
ਅੰਦੋਲਨ ਦੇ ਉਤਾਰ ਚੜ੍ਹਾਅ ਦੇ ਵਿਚ ਪ੍ਰਤੀਕੂਲ ਵਾਤਾਵਰਨ ਵਿਚ ਕਦੇ ਐਸੇ ਵੀ ਪਲ ਆਉਂਦੇ ਹਨ ਜਦ ਇਕ ਇਕ

ਕਰਕੇ ਸਾਰੇ ਹਮਰਾਹੀ ਛੁੱਟ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਉਸ ਸਮੇਂ ਮਨੁੱਖ ਹੱਸਲੇ ਦੇ ਦੋ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਤਰਸ ਉਠਦਾ ਹੈ। ਐਸੇ ਪਲਾਂ

**ਦੇਸ਼ ਦੀ ਜਨਤਾ ਸਾਡੀ ਹਿੰਮਤ ਅਤੇ ਸਾਡੇ ਕੰਮਾਂ ਦੀ ਸ਼ਲਾਘਾ ਕਰਦੀ ਹੈ ਲੇਕਿਨ ਸਾਡੇ ਨਾਲ ਉਹ ਆਪਣਾ ਸਿੱਧਾ ਸੰਪਰਕ ਜੋੜ ਸਕਣ ਵਿਚ ਅਸਮਰਥ ਹੈ। ਅਜੇ ਤਕ ਅਸੀਂ ਖੁਲ੍ਹੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਵਿਚ ਉਨਾਂ ਨੂੰ ਇਹ ਨਹੀਂ ਦਸਿਆ ਹੈ ਕਿ ਜਿਸ ਅਜ਼ਾਦੀ ਦੀ ਅਸੀਂ ਗਲ ਕਰਦੇ ਹਾਂ ਉਸ ਦੀ ਰੂਪ ਰੇਖਾ ਕੀ ਹੋਵੇਗੀ, ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ਾਂ ਦੇ ਚਲੇ ਜਾਣ ਦੇ ਬਾਅਦ ਜੋ ਸਰਕਾਰ ਬਣੇਗੀ ਉਹ ਕਿਹੋ ਜਿਹੀ ਹੋਵੇਗੀ ਅਤੇ ਕਿਸ ਦੀ ਹੋਵੇਗੀ।**

ਵਿਚ ਵੀ ਪ੍ਰੇਸ਼ਾਨ ਨਾ ਹੋ ਕੇ ਜੋ ਲੋਕ ਆਪਣੀ ਰਾਹ ਨਹੀਂ ਛੱਡਦੇ, ਇਮਾਰਤ ਦੇ ਬੋਝ ਨਾਲ ਜਿੰਨਾਂ ਦੇ ਪੈਰਾ ਨਹੀਂ ਲੜਖੜਾਉਂਦੇ, ਮੋਢੇ ਨਹੀਂ ਝੁਕਦੇ, ਜੋ ਤਿਲ-ਤਿਲ ਕਰਕੇ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਇਸ ਲਈ ਗਲਾਉਂਦੇ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ, ਇਸ ਲਈ ਜਲਾਉਂਦੇ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਦੀਵੇ ਦੀ ਜੋਤ ਮਧਿਅਮ

ਨਾ ਪੈ ਜਾਏ, ਸੁੰਨਸਾਨ ਡਗਰ ਤੇ ਹਨੇਰਾ ਨਾ ਛਾ ਜਾਏ, ਐਸੇ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਕੁਰਬਾਨੀ ਅਤੇ ਤਿਆਗ ਪਹਿਲਾਂ ਵਾਲਿਆਂ ਦੇ ਮੁਕਾਬਲੇ ਕੀ ਜ਼ਿਆਦਾ ਨਹੀਂ ਹੈ?”



(ਲੇਖਕ ਸ਼ਿਵ ਵਰਮਾ, ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਦੇ ਸਾਥੀ ਸਨ। ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਅੰਕ ਅਲੀਗੜ੍ਹ ਤੋਂ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਗੋਦਾਰਨ ਪਤ੍ਰਿਕਾ ਦੇ ਕ੍ਰਾਂਤੀਕਾਰੀ ਮਹਾਂਨਾਇਕ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਅੰਕ ਤੋਂ ਧਨਵਾਦ ਸਹਿਤ)



چکا چونکہ کر سکتے ہیں، لیکن عمارت کی بنیاد نہیں بن سکتے، اُسے لمبی عمر نہیں دے سکتے، صدیوں تک اپنے مضبوط کندھوں پر اس کے بوجھ کو اٹھا کر سیدھا کھڑا نہیں رکھ سکتے۔ ابھی تک ہماری تحریک نے ہیرے کمائے ہیں، بنیاد کے پتھر نہیں بٹورے۔ اس لئے اتنی قربانی دینے کے بعد بھی ہم ابھی تک عمارت کی اس کا ڈھانچہ بھی کھڑا نہیں کر پائے۔ آج ہمیں بنیاد کے پتھروں کی ضرورت ہے۔" پھر کچھ رُک کر بولا،

"اور قربانی کے بھی دو روپ ہیں ایک ہے گولی کھا کر یا پھانسی پر لٹک کر مرنا۔ اس میں چمک زیادہ ہے لیکن تکلیف کم۔ دوسرا ہے پیچھے رہ کر ساری زندگی عمارت کا بوجھ ڈھوتے پھرنا۔

آندولن کے چڑھاؤ اتار کے بیچ خراب ماحول میں کبھی ایسے بھی پل آتے ہیں جب ایک ایک کر سبھی ہمراہی چھوٹ جاتے ہیں اُس وقت انسان رضامندی کے دو لفظوں کیلئے بھی ترس اُٹھتا

ہے ایسے پلوں میں بھی پریشان نہ ہو کر جو لوگ اپنی راہ نہیں چھوڑتے، عمارت کے بوجھ سے جن کے پیر نہیں لڑ کھڑاتے، کندھے نہیں جھکتے، جو تل تل کر اپنے آپ کو اس لئے گلاتے رہتے ہیں، اسلئے جلاتے رہتے ہیں کہ دیئے کی لودھی نہ پڑ جائے، سنسان ڈگر پر اندھیرا نہ چھا جائے، ایسے لوگوں کی قربانیاں پہلے والوں کے مقابلے کیلئے زیادہ نہیں ہیں؟"

(رائٹر شیوورا، بھگت سنگھ کے ساتھ تھے۔ یہ یادگار علی گڑھ سے شائع گودارن اخبار کے انقلابی مہانا ایک بھگت سنگھ خصوصی طور سے بشکریہ) ■

عوام کا سپورٹ حاصل کئے بغیر ہم اب پرانے ڈھنگ سے آگے۔ ڈنگے انگریز حکاموں کو یا سرکاری مخبروں کو مار کر نہیں چل سکتے۔ ہم ابھی تک سنگٹھن اور تشہیر کی جانب سے غیر جانبدارانہ رہ کر پرانے ایکشن پر ہی زور دیتے آئے ہیں۔ کام کا یہ طریقہ ہمیں چھوڑنا پڑے گا۔ میں تمہیں اور وجے کو تنظیم اور تشہیر کے کاموں کیلئے پیچھے چھوڑنا چاہتا ہوں۔"

کچھ دیر چپ رہ کر

اس نے کہا، "ہم سب لوگ سپاہی ہیں۔ اور سپاہی کا سب سے زیادہ موہ ہوتا ہے رن چھیت سے۔ اس لئے 'ایکشن' کا یہ موہ چھوڑنا ہی پڑے گا۔ یہ صحیح ہے کہ عام طور پر شہادت کا سہرا 'ایکشن' میں جو جھنے والوں یا پھانسی پر جھول جانے والوں کے سر پر ہی بندھتا ہے، لیکن اس کے باوجود ان کی حالت

عمارت کے مرکزی دروازے پر جڑے اس ہیرے کے مانند ہی رہتی ہے جس کی قیمت جہاں تک عمارت کا سوال ہے، بنیاد کے نیچے دبے ایک عام پتھر کے مقابلے کچھ بھی نہیں ہوتی۔" میں لیٹے لیٹے بھگت سنگھ کی باتیں سنتا رہا۔ وہ میرے سر کے پاس دیوار کا سہارا لئے بیٹھا تھا اور ایسے بات کر رہا تھا مانو زور زور سے سوچنے کی کوشش کر رہا ہو۔ بیچ-بیچ میں اسکے داہنے ہاتھ کی انگلیاں میرے سر کے بالوں میں گھوم جاتیں اور وہ پھر دھیرے دھیرے رُک کر اسی لہجے میں بولنا شروع کر دیتا۔

"ہیرے عمارت کی خوبصورتی بڑھا سکتے ہیں، دیکھنے والوں کو

پیچھے لنگا کے کنارے جا کر بیٹھ جاتا یا جب مجھے اور جے دیو کو کالج سے فرصت ہوتی تو ہم لوگوں سے باتیں کرتے۔ اس کی بات چیت کا موضوع زیادہ تر اس کی پڑھی ہوئی کتابیں ہوتیں۔ وہ ان کے بارے میں بتلاتا اور پھر زور دیتا کہ ہم بھی انہیں پڑھیں کبھی کبھی پرانے انقلابوں کی کہانیاں بھی سناتا۔ کوکا بغاوت غدر پارٹی کا اتہاس، کرتار سنگھ، صوفی امبا پرساد وغیرہ کی جیونیاں اور "انسان کا نام بڑا ہے یا پارٹی کا کام؟"

"پارٹی کا کام،" میں نے جواب دیا۔

"اور پارٹی کا کام اوی رام تیزی سے چلتا رہے، ہمارے دلش اور 'ایکشن' سفلی ہوتے رہیں، ہماری بات مقامیوں تک باقاعدگی سے پہنچتی رہیں، آزادی کی اپنی اس لڑائی میں ہر منزل پر ہم کامیاب ہوتے رہیں، اس کے لئے پہلی شرط کیا ہے؟" ایک مضبوط اور براڈ تنظیم "میں نے

جواب دیا۔

"تنظیم اور فروغ" اس نے کہا۔ "ملک کی عوام ہماری ہمت اور ہمارے کاموں کی سراہنا کرتی ہے لیکن ہم سے اپنا سیدھا تعلق جوڑ پانے میں وہ قابل نہیں ہیں۔ ابھی تک ہم نے کھلے لفظوں میں اسے یہ بھی نہیں بتلایا کہ جس آزادی کی ہم بات کرتے ہیں اس کی آؤٹ لائن کیا ہوگی، انگریزوں کے چلے جانے کے بعد جو سرکار بنے گی وہ کیسی ہوگی اور کس کی ہوگی۔ اپنے آندولن کو بنیاد بنا کر ہمیں اپنا مقصد عوام کے بیچ لے جانا ہوگا، کیونکہ

**ملک کی عوام ہماری ہمت اور ہمارے کاموں کی سراہنا کرتی ہے لیکن ہم سے اپنا سیدھا تعلق جوڑ پانے میں وہ قابل نہیں ہیں۔ ابھی تک ہم نے کھلے لفظوں میں اسے یہ بھی نہیں بتلایا کہ جس آزادی کی ہم بات کرتے ہیں اس کی آؤٹ لائن کیا ہوگی، انگریزوں کے چلے جانے کے بعد جو سرکار بنے گی وہ کیسی ہوگی اور کس کی ہوگی۔**

بر۔ اکیلوں کی بہادری کی کہانیاں بتلاتے بتلاتے وہ عام طور ہی پُر جوش ہوا اٹھتا اس کی تفصیل کے انداز میں ایک عجیب کشش تھی جس سے کھینچ کر عام طور پر روز ہی ہم دونوں گھنٹوں پہلے کالج سے بھاگ آتے تھے۔

جے دیو شروع سے ہی مجھ سے ٹکڑا تھا۔ جو حکم سے بھڑنے کی اس کی عادت تھی اور مار پیٹ میں اس کا ہاتھ ہمیشہ سے کھلا تھا۔ اس کی انہی سب قابلیتوں سے

متاثر ہو کر بھگت سنگھ نے اسے سبیل والے ایکشن میں لے جانے کا فیصلہ کر لیا۔ ایک دن دوپہر کے وقت جب اس نے اپنا حقائق فیصلہ مجھ سے بتلایا تو مجھے اپنے کمزور پتلے جسم پر جھنجھلاہٹ محسوس ہوئی۔ میں پارٹی کے لائق نہیں سمجھا گیا۔ اس خیال سے مجھے گہرا صدمہ لگا اور کچھ دیر بیٹھے رہنے کے بعد نیند کا بہانا لیکر میں ایک طرف لیٹ گیا۔ بھگت سنگھ جانتا تھا کہ میں سو نہیں رہا ہوں۔ وہ کچھ دیر تک پاس پڑی ایک کتاب کے صفحے الٹا رہا، پھر میرا



نام بھگت سنگھ ہے اور وہ پہلے بھی کانپور میں جناب کنیش شنکر دیا رتھی کے پاس 'پرتاپ' میں کام کر چکا ہے کانپور میں 'پرتاپ' میں کام شروع کرنے سے پہلے کچھ دن اس نے اخبار بیچ کر بھی گزارا کیا تھا۔ یہ بھی پتہ چلا کہ بسمل کو جیل سے چھڑانے کی ایک کوشش پہلے بھی ہو چکی تھی جسے کچھ وجہ سے بیچ میں ہی چھوڑ دینا پڑا تھا اس میں حصہ لینے کے لئے بھگت سنگھ اور سکھد یو کے ساتھ پنجاب میں کئی اور ساتھی بھی آئے تھے اسی جانب میں اب یہ اس کی دوسری کوشش تھی۔

لگ بھگ دو مہینے بعد بھگت سنگھ پھر واپس آیا اس بار وہ کافی دن ٹھہرا، رام پرساد بسمل کے ساتھ وے کا تعلق پہلے تو خوب اچھا رہا۔ بسمل نے منصوبے کی منظوری بھی دے دی تھی لیکن دن اور وقت ابھی طے نہیں ہو پایا تھا۔ اُدھر کیس کے فیصلے کا دن نزدیک آتا جا رہا تھا اسی بیچ کچھ ایسا ہوا کہ بسمل سے خط مطابقت اور ملاقاتیں وغیرہ ایک دم بند ہو گئی۔ اور ان پر سخت پہرہ لگا

دیا گیا یہ سب کیوں اور کیسے ہوا یہ تو نہیں جانتا لیکن اس سے یوجنا کو گہرا ادھکا لگا پھر بھی وے نے اپنی کوشش جاری رکھی۔ بھگت سنگھ میرے کمرے میں زیادہ تر اپنا وقت پڑھنے میں گزارا کرتا تھا۔ وکٹر ہیوگو، ہالکین، ٹول اسٹائے، دوستو یو و سکی، گورکی، بنوڈ شو، ڈیکینس وغیرہ اس کے عزیز مصنف تھے۔ پڑھنے سے جب اس کی طبیعت اوبھتی تو وہ ہوسٹل کے

ساتھ جاتے تھے۔ رنجیت کے لئے کمرے میں کھانا منگوانے کے بجائے میں اسے بھی ساتھ لیتا گیا میس میں اس وقت ہم تین ہی کھانے والے تھے رنجیت بیچ میں وے دیو کے پاس ہی بیٹھا تھا لیکن میس کا کوئی دوسرا ممبر ان سمجھ کر اس نے ادھر دھیان نہیں دیا پھر جب وے دیو نے چپ چاپ اس کی دال میں کس کر گرم گھی چھوڑ دیا تو اس نے پہلے وے دیو کی جانب دیکھا پھر سوال بھری نگاہ سے میری جانب دیکھنے لگا، اس کی الجھن پر ہم دونوں کو ہنسی آگئی۔ اس کے منہ سے نکل گیا "وے دیو؟" ہم لوگ اور زور سے ہنس پڑے۔ رنجیت نے میری پیٹھ پر زور کا گھونسا جماتے ہوئے کہا "چور کہیں کے" پھر تانے کستے ہوئے بولا "لگتا ہے اپنوں کو بہت محفوظ کر کے رکھنے کی عادت ہے۔"

"فی الحال تو میری گھونے کی چوٹ نے اپنا۔ پرایا سب برابر کر دیا ہے" میں نے کہا۔

اس نے باباں ہاتھ میری پیٹھ پر پھیرتے ہوئے کہا، "لو پیٹھ سہلائے دیتا ہوں" اب چپ چاپ کھا لو۔

رنجیت میرے کمرے میں جتنے دن رہا عام طور پر روز ہی وے اور سریندر پانڈے آتے رہے وہ کاکوری کے ملزم پنڈت رام پر ساد بسمل کو جیل سے چھڑانے کی یوجنا پر صلاح مشورہ کرنے آیا تھا تین چار دن رہنے کے بعد بسمل سے رابطہ قائم کر یوجنا پکی رکھنے کی ذمہ داری وے پر چھوڑ وہ پنجاب واپس چلا گیا۔ رنجیت کے چلے جانے کے بعد مجھے پتہ چلا کہ اس کا اصلی

**بھگت سنگھ میرے کمرے میں زیادہ تر اپنا وقت پڑھنے میں گزارا کرتا تھا۔ وکٹر ہیوگو، ہالکین، ٹول اسٹائے، دوستو یو و سکی، گورکی، بنوڈ شو، ڈیکینس وغیرہ اس کے عزیز مصنف تھے۔ پڑھنے سے جب اس کی طبیعت اوبھتی تو وہ ہوسٹل کے پیچھے گنگا کے کنارے جا کر بیٹھ جاتا، یا جب مجھے اور وے دیو کو کالج سے فرصت ہوتی تو ہم لوگوں سے باتیں کرتے۔ اس کی بات چیت کا موضوع زیادہ تر اس کی پڑھی ہوئی کتابیں ہوتیں۔**



"تو ان دونوں کو کہلا دو کہ آج رات یہیں آ کر مجھ سے مل لیں" اس کی بات چیت، اس کے بے تکلفانہ سلوک وغیرہ پر اچانک اس نے کہا۔ پھر کچھ رُک کر پوچھا، "جے دیو کہاں ہے؟" بریک لگا دیا ہو۔

اس بار میں جھوٹ بول گیا۔ ہمت بڑ کر کہ دیا، "میں جھوٹ بول تو گیا پر دل میں بات کھٹکتی سی رہی۔ بھگت کہیں باہر گیا ہے، یہاں نہیں ہے۔"

میں بات ٹال گیا ہوں اسے رنجیت نے بھانپ لیا۔ اس خیال نے کہ میں ابھی تک اس پر یقین نہیں کر پایا ہوں، کچھ دیر کیلئے اسے اُداس سا کر دیا وہ اپنے ساتھ وکٹر ہیوگو کا معروف نوبل 'لا میجر بیل' لایا تھا۔ اس نے چُپ چاپ اسے پڑھنا شروع کر دیا۔ مانو کسی نے اس کی ہنسی، ہو گیا تھا، جے دیو اور میں عام طور پر میس میں کھانا کھانے ایک ہی

رنجیت میرے کمرے میں جتنے دن رہا عام طور پر روز ہی وجے اور سریندر پانڈے آتے رہے۔ وہ کاکوری کے ملزم پنڈت رام پر ساد بسمل کو جیل سے چھڑانے کی یوجنا پر صلاح مشورہ کرنے آیا تھا تین چار دن رہنے کے بعد بسمل سے رابطہ قائم کر یوجنا پکی رکھنے کی ذمہ داری وجے پر چھوڑ وہ پنجاب واپس چلا گیا۔

کالج سے واپس آتے آتے دوپہر کے کھانے کا وقت





# میرا ساتھی، دوست اور نیتا بھگت سنگھ!

نکال کر زمین پر ہی بستر لگا رکھا تھا۔ اس نے بغیر کسی تکلف کے بغیر کوئی شک، جا کر بستر پر آسن لگا دیا اور میرا ہاتھ کھینچ کر پاس پٹھلاتے ہوئے بولا، "میرا نام رنجیت ہے میں دو چار دن یہیں رہوں گا دہلی کے تمہارے دوست سے میں تمہارے اور بے دیو کے بارے میں سن چکا ہوں میں بھی تمہاری ہی ڈگر کا راہ گیر ہوں" پھر کچھ سوچ کر

پوچھا، "وہ بے اور سریندر پاٹل کو جانتے ہو؟"

رنجیت کے نرم رویے، معصوم ہنسی، اور مسکراتی ہوئی آنکھوں نے پہلی ہی ملاقات میں میرے سب ہتھیار چھین لئے تھے اور اب میرے لئے اس پر یقین نہ کرنا ناممکن تھا، روک تھام کا میرا سارا صبر ٹوٹ گیا اور میں نے بھی اسی نرمی سے کہہ دیا۔ "ہاں، جانتا ہوں"



ایک دن صبح جب میں کمرے میں بیٹھا کالج کا کام پورا کر رہا تھا تو سنا باہر پڑوسی سے کوئی میرا پتہ پوچھ رہا ہے اپنا نام سن کر میں باہر نکل آیا، دیکھا میلی شلوار، قمیض پہنے، کمبل اوڑھے ایک سکھ نو جوان سامنے کھڑا ہے۔ لمبا قد، خوب گورا رنگ، چھوٹی چھوٹی آنکھیں، چوبھتی ہوئی پنی نگاہ، خوبصورت چہرے پر ہلکی،

ہلکی چھوٹی سی داڑھی، کیش اور پکڑی۔ "یہ رہے شیو وراما" مجھے دیکھ کر پڑوسی نے کہا۔

وزیٹر دونوں ہاتھ پھیلا کر ایسے لپٹ گیا مانو کوئی بہت پرانا دوست ہو پھر میرا ہاتھ کھینچتے ہوئے وہ کمرے میں ایسے داخل ہوا جیسے کمرہ میرا نہیں اسی کا تھا۔ چھوٹے کمرے میں جگہ کی تنگی کی وجہ سے میں نے چارپائی



# دہلی کے اسکولوں میں کھلے

## سولائبریری

کی کمی نہیں ہے اور اس کام کیلئے پیسے کی کمی ہونے بھی نہیں دی جائے گی۔ اس کام کے لئے جس طرح کی خاصیت کی ضرورت ہوگی اسے لا ما جائے گا نائب وزیر اعلیٰ نے سمجھاؤ دیا کہ ہر اسکول میں پینٹنگ، ڈرائنگ و اسٹوری لائٹنگ جیسے مقابلے کرائے جائیں اور ان مقابلوں میں



بہترین کارکردگی کرنے والے بچوں کی پینٹنگ، ڈرائنگ اور کہانیوں وغیرہ کا تالیف کر کے، کچھ کتابیں اسکول کے لائبریری میں رکھ دی جائیں۔ جس سے باقی بچوں میں بھی تحریک ملے۔ اس کے علاوہ انہیں مقابلوں کی بنیاد پر پوری دہلی میں بہترین کارکردگی کرنے والے بچوں کی پینٹنگ، ڈرائنگ اور کہانیوں کا تالیف دہلی کے ہر سرکاری اسکول کے لائبریری میں رکھے جائیں۔ اس سے پوری دہلی کے بچے رہنماؤں سے روبرو ہو سکیں گے اور تحریک لے کر خود بھی اس سمت میں آگے بڑھ سکیں گے۔ اسکول میں کھلنے والے لائبریریوں میں کتابوں کے چناؤ پر خاص دھیان دیا گیا ہے۔ زیادہ تر کتابیں ایسی ہیں جن سے بچے تصویروں، کہانیوں اور گیمس کے ذریعے کافی کچھ سیکھ سکیں گے۔

**کتابوں** کو دوست ماننے والے سماج میں ثقافتی لائبریری کا کمزور ہونا سنگین فکر کی بات ہے۔ دہلی کے تعلیمی ماحول میں معیاری تبدیلی لانے میں جیٹو سرکار نے اس جانب گہر پہل کرتے ہوئے ایک ساتھ سولائبریری کھولے ہیں۔

دہلی سرکار کے اسکولوں میں کھولے گئے یہ سولائبریری پرائمری سیکشن کے بچوں کیلئے شروع کئے گئے ہیں موتی باغ کے سروو دیکنیا و دیالپہ میں ایسے ہی ایک لائبریری کا افتتاح نائب وزیر اعلیٰ اور وزیر تعلیم منیش سوسو دیانے کیا۔ جناب سوسو دیانے کہا

کہ یہ لائبریری سرکاری اسکولوں میں پڑھنے والے چھوٹے بچوں کیلئے دیوالی کا تحفہ ہے۔ انہوں نے کہا کہ ایک سال کے اندر دہلی کے ان سبھی ساڑھے چار سو سرکاری اسکولوں میں لائبریری شروع کر دیئے جائیں گے، جہاں پر پرائمری سیکشن ہیں۔ نائب وزیر اعلیٰ نے کہا کہ سرکار کے پاس پیسے





رہتا ہے، بچوں کی حفاظت کو لیکر کیا کیا انتظام کئے گئے ہیں، اس طرح کے تمام معیار کی بنیاد پر اسکول کی رٹنگ طے ہوگی اور اوفیشیل ڈیٹا تیار ہو سکے گا۔

ایکونومیکل ویکر سیکشن (ای ڈبلو یو ایس) زمرہ میں ایڈمیشن پانے والے بچوں سے کیسے پیش آیا جائے تاکہ نیا ماحول میں وہ آسان ہو سکے۔ سودیا جی نے کہا کہ پچھلے دو سال میں دہلی سرکار نے ای ڈبلو یو ایس کیلگری کے ایڈمیشن کو شفاف بنایا ہے اس کے تحت 31000 ایڈمیشن بنا کسی پریشانی کے ہوئے ہیں۔ دیکھنے میں آ رہا ہے کہ اس کیلگری میں ایڈمیشن پانے والے بچوں کو دوسرے بچوں کے ساتھ تال میل بٹھانے میں مشکل ہو رہی ہے اس زمرے میں ایڈمیشن پانے والے بچوں کے والدین بھی

زیادہ پڑھے لکھے نہیں ہوتے اور وہ اپنے

بچوں کو دوسروں کی طرح گاند نہیں کر پاتے ان کی حالت کو بھی دھیان میں رکھتے

ہوئے ان پر خاص دھیان دیئے جانے کی ضرورت ہے تاکہ سب کو معیاری تعلیم کا سپنا پورا کیا جاسکے۔

**نائب وزیر اعلیٰ کے مطابق سرکار ایسے بچوں کا اسکول میں داخلہ کروائے گی جو اسکول نہیں جاتے ہیں ان کی پہچان کیلئے مہم چلائی جائے گی۔ سرورے ہوئے ہیں، لیکن اسکول نہ جانے والے بچوں کو لیکر وسیع ڈیٹا نہیں مل پایا ہے اس مہم میں آنگن باڑی ورکرس کی بھی مدد لی جائے گی۔ اور سرکار انہیں اضافی ادائیگی بھی کرے گی۔ دہلی سرکار کی اسکول منیجمنٹ کمیٹی میں دو-دو سوشل ورکرس ہوتے ہیں۔ ایم سی ڈی کو بھی کہا گیا ہے کہ وہ اپنے اسکولوں میں ایس ایم سی کو بھی بہتر بنائیں ایک تخمینہ کے مطابق دہلی سرکار اور ایم سی ڈی کے اسکولوں کی ایس ایم سی میں قریب 2600 سوشل ورکرس ہیں۔ جنہیں ایجوکیشن بیٹ آفیسر س کا درجہ دیا جائیگا۔**

اور ایم سی ڈی کے اسکولوں کی ایس ایم سی میں قریب 2600 سوشل ورکرس ہیں۔

جنہیں ایجوکیشن بیٹ آفیسر کا درجہ دیا جائیگا یہ محلہ، محلہ جاکر پتہ کریں گے کہ کون بچا اسکول نہیں جاتا اس طرح ہر ایک

نائب وزیر اعلیٰ کے مطابق سرکار ایسے بچوں کا اسکول میں داخلہ کروائے گی جو اسکول نہیں جاتے ہیں ان کی پہچان کیلئے مہم چلائی جائے گی۔ سرورے ہوئے ہیں، لیکن اسکول نہ جانے والے بچوں کو لیکر وسیع ڈیٹا نہیں مل پایا ہے اس مہم میں آنگن باڑی ورکرس کی بھی مدد لی جائے گی۔ اور سرکار انہیں اضافی ادائیگی بھی کرے گی۔ دہلی سرکار کی اسکول منیجمنٹ کمیٹی میں دو-دو سوشل ورکرس ہوتے ہیں۔ ایم سی ڈی کو بھی کہا گیا ہے کہ وہ اپنے اسکولوں میں ایس ایم سی کو بھی بہتر بنائیں ایک تخمینہ کے مطابق دہلی سرکار





# دہلی کے اسکولوں کی ہوگی رنگنگ

ہرنجی اور سرکاری اسکولوں کو رنگنگ دینے جارہی ہے۔ دہلی سرکار نے دہلی مشن فار پرنٹیشن آف چائلڈ رائٹس ایکٹ (ڈی سی پی سی آر) کو ذمہ داری دی ہے کہ وہ آزادابجائیسوں سے اسکولوں کی رنگنگ کروائیں۔ دہلی اسٹیٹ ایجوکیشن ایڈوائزری کونسل کے اس فیصلے کی جانکاری دیتے ہوئے نائب وزیر اعلیٰ منیش سسودی نے بتایا کہ ابھی اسکولوں کا کوئی پرفارمنس آڈٹ نہیں ہو تا ایسا کوئی سرکاری دستاویز بھی نہیں ہے جس سے سرپرستوں کو اسکول کے بارے میں ضروری جانکاریاں مل سکے۔ صرف بلڈنگ دیکھ کر اسکول کی تعلیمی معیار کے بارے میں پتہ نہیں لگایا جاسکتا۔ ایسے میں رنگنگ کرنا ہوگا جس کے لئے ضروری معیار طے کئے جائیں گے۔ پڑھائی کا وجود کیا ہے، سہولتیں کیسی ہیں، رکھ رکھاؤ کیسا ہے، ٹیچروں کا بچوں کے ساتھ برتاؤ کیسا

دہلی کی تعلیمی نظام میں انقلابی بدلاؤ کی چرچا پوری دنیا میں ہے۔ ایسے وقت میں جب نجی اسکولوں کو ہی بہتر تعلیم کا اسٹینڈرڈ مان لیا گیا تھا، دہلی کے سرکاری اسکولوں نے نئی چمک پیدا کی۔ اس کیلئے اسکولوں کا رنگ روپ ہی نہیں بدلا گیا، تعلیم اور امتحان کیلئے نئے نظریہ بھی پیدا کی گئی۔ دہلی سرکار کا مقصد ہے کی نجی اور سرکاری اسکولوں میں صحت مند مقابلہ ہو، اور سرکاری اسکولوں کے بچوں میں کسی غیر موجودگی کی مایوسی نہ ہو۔ لیکن سرپرستوں کو یہ پتہ کیسے چلے کہ کس اسکول کی کیا حالت ہے۔ اسے دھیان میں رکھتے ہوئے سرکار نے ایسی یوجناتیاری ہے جس سے دہلی کے سرپرستوں کو ہر سرکاری اور نجی اسکولوں کے تعلیمی سطح اور بنیادی سہولتوں کے بارے میں آسانی سے جانکاری مل سکے گی۔ اس کے آدھار سے وہ اپنے بچے کے ایڈمشن کو لیکر فیصلہ کر سکیں گے۔ سرکار اگلے سیشن سے دہلی کے



# دہلی میں ہوئے بدلاؤ نے بدل دی بھارت کی بزنس رٹنگ

انڈسٹری لائسنس لینے کی طریقہ کار کو آسان کر دیا ہے۔ اب ایک دن میں آن لائن لائسنس مل جاتا ہے۔ جبکہ پہلے لائسنس کیلئے مہینوں لگ جاتے تھے۔ دہلی سرکار کے ویٹ ڈیپارٹمنٹ نے انسپکٹر راج کو ختم کیا اور اب آن لائن درخواست کرنے پر فوراً ٹین نمبر مل جاتا ہے۔ پہلے انسپکٹر جاتا تھا اور رپورٹ دیتا تھا۔ اس کے بعد ہی ٹین نمبر جاری ہوتا تھا۔

نائب وزیر اعلیٰ نے کہا کہ ورلڈ بینک کی رپورٹ میں بھی ذکر ہے کہ اب دہلی میں بجلی کنکشن 138 دن کے بجائے زیادہ سے زیادہ 45 دن میں مل جاتا ہے۔ دہلی میں کسی بھی تقریب کے انتظامات کیلئے دنیا کے کسی بھی حصے سے آن لائن درخواست کیا جاسکتا ہے۔ آن لائن سٹنگل ونڈوسسٹم لاگو کیا گیا ہے۔ جی ایس ٹی میں تاجروں کے مسائل کو دور کرنے کیلئے دہلی سرکار ہر ممکن کوشش کر رہی ہے۔ غور طلب ہے کہ رٹنگ تیار کرنے میں صرف دہلی اور ممبئی میں کاروباریوں کے بیچ سروے کیا جاتا ہے۔ یعنی بدلاؤ میں دہلی کی شراکت کافی اہم ہے۔ ممبئی کو پہلے سے ہی ملک کی تجارتی راجدھانی کا درجہ حاصل ہے۔ عالمی بینک کا کہنا ہے کہ ممبئی اور دہلی ہندوستان کے کاروباری ماحول کی نمائندگی کرتے ہیں، لہذا وہاں کی حالات سے پورے ملک کا تخمینہ کیا جاسکتا ہے۔

بھارت میں بزنس کرنا آسان ہوا۔ ورلڈ بینک کی تازہ بزنس رپورٹ میں ہندوستان کے حالات میں کافی سدھار ہوا ہے ورلڈ بینک پچھلے کئی سالوں سے دنیا کے 190 ملکوں کی اس سلسلے میں رٹنگ کرتا ہے۔ پچھلے سال ہندوستان کا مقام 130 تھا لیکن اب وہ 100 ویں نمبر پر آ گیا ہے۔ خاص بات یہ ہے کہ ورلڈ بینک کی اس 'ایز آف ڈونگ بزنس لسٹ' میں



## Outlook

THE WEBSITE

MAGAZINES MONEY TRAVELLER BUSINESS ARCHIVES

02 NOVEMBER 2017 Last Updated at 4:00 PM | NATIONAL

### If India's Ease Of Doing Business Ranking Has Improved, Delhi Government Deserves A Pat On The Back From Centre

A look at the ten criteria on which the ranking has been done reveals that without the state many of the yardsticks would not have been improved upon.

LOLA NAYAR



ہندوستان کی رٹنگ میں ہوئے سدھار میں دہلی کا اہم شراکت رہی ہے۔ دہلی سرکار نے ایسے تمام قدم اٹھائے جس نے ملک کی تصویر بدلی۔ نائب وزیر اعلیٰ اور دہلی کے وزیر خزانہ کا عہدہ سنبھال رہے منیش سو دیا نے اسے بڑی کامیابی بتایا ہے۔ انہوں نے کہا کہ یہ بڑی فخر کی بات ہے کہ ورلڈ بینک کی رٹنگ میں بھارت ٹاپ 100 میں پہنچ گیا ہے۔

جناب سو دیا نے کہا کہ پچھلے دو تین سال میں دہلی سرکار نے جو بڑے فیصلے لئے ہیں اس کی وجہ سے دہلی میں بزنس شروع کرنا بہت آسان ہو گیا ہے۔ انسپکٹر راج کو ختم کیا گیا ہے۔ انہوں نے کہا کہ جس طرح بزنس کے معاملے میں ملک کا نام روشن ہوا ہے، اسی طرح سے صحت، ایجوکیشن میں بھی دہلی میں آیا بدلاؤ سے بھی ملک کا نام بڑھے گا جناب سو دیا نے کہا کہ دہلی سرکار نے

# دوا کی دستیابی جاننے وزیر اعلیٰ نے کیا اسپتالوں کا معائنہ

لکھتے ہیں۔ وزیر اعلیٰ کی جی بی پنت اسپتال میں جانکاری ملی کہ کچھ دوائیں دستیاب نہیں ہیں۔ اس پر انہوں نے خود دستیاب دواؤں کے ریکارڈ کی جانچ کی۔ انہوں نے کچھ دواؤں کی کمی اور غیر دستیابی کی جانکاری ہوئی تو انہوں نے اعلیٰ حکام سے جواب طلب کیا اور ہر کمی کو جلد سے جلد پورا کرنے کی ہدایت دی۔

ایل این جے پی اسپتال میں اچانک معائنہ کرنے پہنچے وزیر اعلیٰ کچھ یوال سے مریضوں نے اطمینان ظاہر کی۔ انہوں نے بتایا کہ انہیں ہر طرح کی دوائیں ضروری مقدار میں دستیاب ہو رہی ہے۔ وزیر اعلیٰ نے دونوں اسپتالوں کے سپرنٹنڈنٹس / ڈائریکٹروں کو یہ یقینی بنانے کی ہدایت دی جتنا ممکن ہو سکے دوا کاؤنٹر پر زیادہ وقت تک مریضوں کو انتظار نہ کرنا پڑے۔ دوا ملنے کے وقت کو گھنٹا کر کم سے کم کیا جائے۔ انہوں نے یہ بھی ہدایت دی کہ رجسٹریشن کاؤنٹروں پر کم سے کم وقت میں مریضوں کو رجسٹر کیا جائے تاکہ انہیں جلد سے جلد علاج کی سہولتیں مہیا ہو سکیں۔ ■

دہلی کے سرکاری اسپتالوں میں جانچ سے لیکر دوا اور آپریشن تک مفت کیا جا چکا ہے۔ سرکار کا ماننا ہے کہ مریضوں کے صحت کی ذمہ داری سرکار کی ہے۔ نجی اسپتالوں کے بول بالے کے دور میں اسے ایک اہم قدم مانا جا رہا ہے۔

لیکن سرکار کی اس اہم یوجنا کا اثر زمین پر کتنا ہے یہ جاننے کیلئے وزیر اعلیٰ اروند کچر یوال خود اچانک معائنہ کرتے ہیں۔ اس آرڈر میں انہوں نے 3 اکتوبر کو لوک نایک جے پرکاش نارائن اور گووند بلیمہ پنت اسپتال کا معائنہ کیا۔ ان کے ساتھ دہلی کے وزیر صحت ستندر جین اور محکمہ کے سینئر افسران بھی موجود تھے۔

وزیر اعلیٰ زمینی حقیقت کو پرکھنا چاہتے تھے، اس لئے سیدھے دونوں اسپتالوں میں انہوں نے دوا کیلئے قطار میں کھڑے مریضوں سے بات کی۔ مریض اور ان کے رشتہ دار وزیر اعلیٰ کو اس حالت میں دیکھ کر حیران رہ گئے۔ وزیر اعلیٰ نے سیدھے پوچھا کہ انہیں دوا کاؤنٹر سے وہ ساری دوائیں مل رہی ہیں کہ نہیں جو ڈاکٹر ان کیلئے





دہلی کے ہر بچے کیلئے اچھی تعلیم اور  
 بہترین تعلیمی سہولیتیں دینا ہماری سرکار  
 کی ذمہ داری ہے۔ ہماری کوشش ہے کہ  
 سرکاری اسکولوں میں پڑھنے والا ہر بچہ  
 اپنے اسکول کو لیکر فخر محسوس  
 کر سکے۔ ہمارا مقصد دہلی کے ہر سرکاری  
 اسکول کو عالمی سطح کا بنانا ہے جس میں  
 پڑھائی کی معیار سے لیکر وہاں ملنے والی  
 سہولتیں کسی مہنگے پرائیویٹ اسکول سے  
 بھی بہتر ہوں۔ ہمارا ماننا ہے کہ تعلیمی  
 ملک سے ہی قابل ملک بنایا جاسکتا ہے



پڑھا پڑھیاں لگاتے ہیں۔ کی معیار سدھارنے استاذ طالب  
 علم میں تناسب کا درست رہنا بے حد ضروری ہے۔ انہوں نے یہ بھی کہا کہ  
 نئے کمروں کو اس انداز میں بنایا گیا ہے کہ وہ بچوں کو شاندار ہونے کیلئے  
 حوصلہ افزائی کریں۔ رنگ روغن سے لیکر لائٹنگ نظام تک پر خاص دھیان دیا  
 گیا ہے۔ جناب سودیا نے اس موقع پر کمروں کے تعمیر میں اہم رول نبھانے  
 والے ملازمینوں، افسروں اور انجینئروں کو خاص طور سے شکریہ ادا کیا۔ انہیں  
 اسٹیج پر بلایا گیا اور بچوں نے تالیاں بجا کر ان کا خیر مقدم کیا۔ ■







پڑھنے والا ہر بچہ اپنے اسکول کو لیکر فخر محسوس کر سکے، ہمارا مقصد دہلی کے ہر سرکاری اسکول کو عالمی سطح کے قابل بنانا ہے۔ جس میں پڑھائی کی معیار سے لیکر وہاں ملنے والی سہولتیں کسی مہنگے پرائیویٹ اسکول سے بھی بہتر ہوں۔ ہمارا ماننا ہے کہ پڑھا لکھا ملک سے ہی قابل ملک بنایا جاسکتا ہے۔ جناب سسودیاجی نے اس موقع پر بچوں اور والدین سے اسکولی تعلیم میں آرہے بدلاؤں کو لیکر بات چیت کی۔

انہوں نے کہا کہ سرکار نے 8000 کمرے بنانے کا ہدف رکھا تھا اور اب تک 5695 بنائے گئے ہیں، باقی کمرے بنانے کا کام بھی تیزی سے چل رہا ہے ابھی ایک کلاس میں کہیں کہیں 80 - 90 تک بچے نظر آتے ہیں جس سے پڑھائی پر برعکس اثر پڑتا ہے، پڑھائی میں زیادہ سے زیادہ 40 بچے ہوں تو استاذ پر اضافی بوجھ نہیں ہوتا اور بچے بھی







# دہلی کے سرکاری اسکولوں کو ملے 5695 نئے کلاس روم

کہ یہ راجدھانی میں تعلیم کے بنیادی ڈھانچے کا سب سے بڑا توسیع ہے۔ وہ چاہتے ہیں کہ ایسا وقت آئے جب چناؤ ذاتی اور دھرم کے بجائے تعلیم اور صحت کے ایجنڈوں پر لڑی جائے۔

دہلی کے تعلیمی انتظام کی کمان سنبھال رہے نائب وزیر اعلیٰ منیش سسودیا نے منڈاؤلی کے سرود یہ کنیا ودیا لیہ میں منعقدہ پروگرام میں نئے بنائے گئے کمرؤں کا افتتاح کیا۔ اس موقع پر جناب سسودیا نے کہا کہ دہلی کے ہر بچے کیلئے اچھی تعلیم اور بہترین تعلیمی سہولیات دینا ہماری سرکاری ذمہ داری ہے۔ ہماری کوشش ہے کہ سرکاری اسکولوں میں

**دہلی** کی تعلیمی نظام میں بدلاؤ کی کوششوں نے ایک بڑا پڑاؤ حاصل کیا ہے۔ اساتذہ، طلباء، تناسب سدھارنے کے لحاظ سے اسکولوں میں کمرؤں کی کمی کو نشاندہ کیا گیا تھا۔ جس کے بعد سرکار نے جنگی سطح پر کمرے بنوانے کا کام شروع کیا تھا آخر کار قریب سو اسکولوں میں 5695 کمرے بن کر تیار ہوئے جنہیں دیوالی کے تحفے بطور سرکار نے دہلی کے لوگوں کے حوالے کیا۔

وزیر اعلیٰ اروند کچر پووال نے اسے شاندار کامیابی بتایا، انہوں نے ٹویٹ کیا



# 15 ہزار عارضی ٹیچروں کو مستقل کرنے کا بل ودھان سبھا سے پاس

بیوروکریسی سے نہیں، ڈیموکریسی سے چلے گا ملک: کچر یوال

دہلی کے 15 ہزار عارضی ٹیچروں کو ایک بڑا تحفہ دیتے ہوئے سرکار نے انہیں مستقل کرنے کا بل اسمبلی میں پیش کیا جسے اکثریت سے پاس کر دیا گیا۔ 4 اکتوبر کو بلائے گئے ایک خصوصی اجلاس میں اسمبلی میں چار گھنٹے تک اس مسئلے پر انتہائی بحث ہوئی۔ جس میں سرکار کے اس قدم کو انقلابی بتایا گیا۔

اس بل کو لیکر اٹھی تمام اعتراضوں کو درکنار کرتے ہوئے وزیر اعلیٰ اروند کچر یوال نے کہا کہ ملک افسر شاہی سے نہیں لوک شاہی سے چلتا ہے۔ دہلی کی عوام نے دہلی کی مسائل کو حل کرنے کیلئے انہیں وزیر اعلیٰ چنا ہے کہ نہیں تکنیکی طور پر سرکار کا عوامی دلچسپی کیلئے قدم اٹھانے سے روکا نہیں جاسکتا۔ گیس ٹیچر کو مستقل کرنے کا ان کی سرکار کو پورا حق ہے۔ انہوں نے کہا کہ جیسا کشمیر مانیگرمینٹ ملازمین کو مستقل کیا گیا، ویسے ہی گیس ٹیچر کو مستقل کیا جا رہا ہے۔ اس سے پہلے نائب وزیر اعلیٰ منیش سودیا نے گیس ٹیچر اور 'سرو و شکشا ابھیان' کے تحت کام کرنے والے ٹیچروں کی خدمات کا بل-2017 ایوان میں پیش کرتے ہوئے دہلی کی تعلیمی انتظام کو بہتر بنانے میں گیس ٹیچر کی کردار کو قابل قدر بتایا۔ انہوں نے کہا کہ سرکار شروع سے گیس ٹیچر کو مستقل کرنے

کے طرفدار رہی ہے انہوں نے کہا کہ استاذ بے فکر ہو کر اپنی ذمہ داری نبھا سکیں۔ اس کے لئے انہیں ریلیف ماحول دینا ضروری ہے سرکار ان کے اعزاز پہلے ہی بڑھا چکی ہے لیکن ضرورت انہیں مستقل کرنا ہے۔ جناب سودیا جی نے کہا ہے کہ دہلی کا بینہ سے منظور یہ بل جب اسمبلی سے پاس ہو کر قانون کی شکل اختیار کر لیگا تو 15 ہزار ٹیچروں کی نوکری مستقل ہو جائے گی یعنی 15 ہزار پریواریوں پر اس کا بے حد مثبت اثر پڑے گا۔ ہر سال سیشن ختم ہونے پر مستقبل کو لیکر عارضی استاذ فکر مند ہو جاتے تھے۔ بل پاس ہونے سے انکی یہ فکر ختم ہو جائے گی۔

جناب سودیا جی نے کہا کہ بل کے تعلقات میں جتائے گئے اعتراضوں پر سرکار نے انتہائی بحث کی ہے، کا بینہ نے مانا ہے کہ استاذ کے بنا تعلیم کی تخیل نہیں کی جاسکتی، یہ مسئلہ خدمات سے نہیں جڑا ہے کچھ مہینے پہلے دہلی سرکار نے 150 کشمیری مانیگرمینٹ کو مستقل کیا تھا اسی تحت سرکار ان عارضی ٹیچروں کی تقرری کر رہی ہے۔ اسمبلی نے اس بل کو اکثریت سے پاس کر دیا ہے۔ ایل جی کی منظوری ملنے کے بعد قانون کی شکل اختیار کر لے گا۔ گیس ٹیچروں نے اس پر خوشی ظاہر کرتے ہوئے سرکار کا شکریہ ادا کیا۔ ■





# शहीद भगत सिंह के जन्मदिवस के अवसर पर शहीद उत्सव

(देशभक्ति सांस्कृतिक कार्यक्रम)  
बुधवार, 27 सितंबर 2017, शाम 4 बजे  
मावलकर हॉल, कॉन्स्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया, रफ़ी मार्ग, नई दिल्ली

मुख्य अतिथि

**गोपाल राय**

माननीय मंत्री, साधन प्रशासन विभाग  
राज्य सरकार

आप सभी सादर आमंत्रित हैं

## शहीद उत्सव

(देशभक्ति सांस्कृतिक कार्यक्रम)  
बुधवार, 27 सितंबर 2017, शाम 4 बजे  
मावलकर हॉल, कॉन्स्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया, रफ़ी मार्ग, नई दिल्ली

मुख्य अतिथि

**गोपाल राय**

माननीय मंत्री, साधन प्रशासन विभाग  
राज्य सरकार

आप सभी सादर आमंत्रित हैं

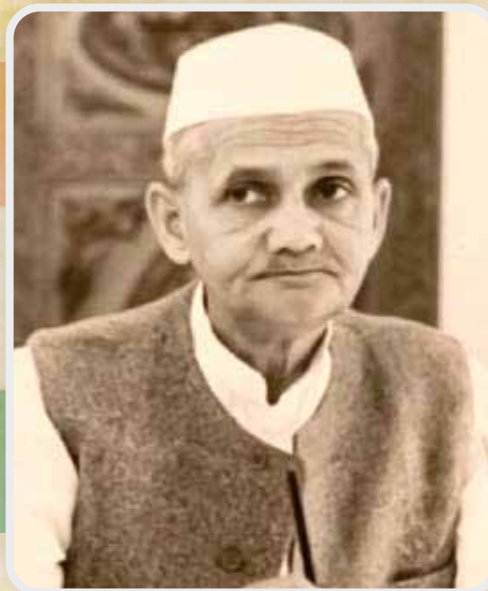
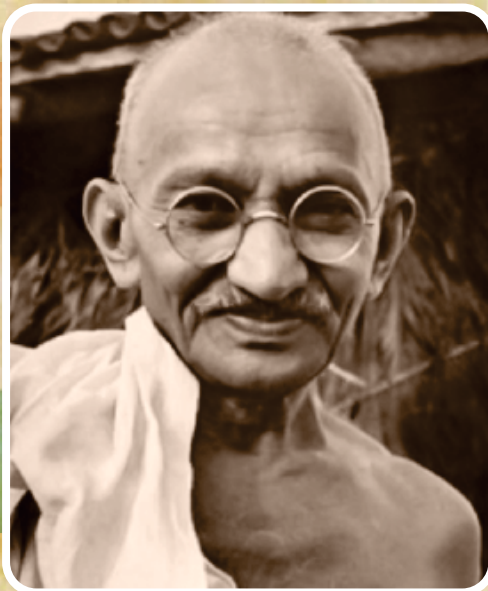
साधन प्रशासन विभाग

27 सितंबर को शहीद भगत सिंह के जन्मदिवस पर कन्स्टीट्यूशन क्लब में आयोजित हुआ शहीद उत्सव।  
कैबिनेट मंत्री गोपाल राय ने स्वतंत्रता सेनानियों तथा उनके परिजनों को सम्मानित किया।



**दिल्ली सरकार**

**आप की सरकार**



# राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी और लाल बहादुर शास्त्री जी के जन्म दिवस पर शत शत नमन

**-अरविंद केजरीवाल**  
मुख्यमंत्री, दिल्ली

**सूचना एवं प्रचार निदेशालय**  
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार